विषय अनुक्रमणिका

सन्तान के साथ माता पिताका कर्त्तव्य

अवश्य बांचिये।

सन्तान के साथ माता पिता का कर्त्तव्य क्या है! जिसको प्रायः सबही लोग जानते हैं इसालिये ज्यादा न कहे थोड़ासा कहना उचित समझ कहते हैं।

माता पिता सन्तानको पैदा करकेही छुटकारा नहीं पाजाते है वो उनका पालन पोषण करते हैं उनका मल मूत्र धोना; उनके स्वास्थ्य पर ध्यान रखना; उसकी तोतली बोली पै प्रसन्न होना; लाड प्यार करना; उठना बैठना चलना फिरना बोलना सिखाना गिरनेपर उठाकर पुचकारना; पढ़ाना लिखाना; नीतिकी बातें बताना, अनुचित कार्य करने पर मुलायमियत से समझाना अथवा धमकाना, हर तरहसे खुशरखना इत्यादि कर्त्तव्य अपना समझकर माता पिता सन्तानके साथ करते हैं, उसे प्राणसे भी अधिक प्रिय समझते हैं उ-

सके लिये स्वयं कष्ट उठाकर उसको कष्ट नहीं देना चाहते हैं, सन्तान माता पिता से इस प्रकारका व्यवहार पाके संसारिक कार्य्य में तत्पर होजाते हैं, सन्तान बड़े होनेपर माता पिता के इस उपकारको माने, चाहे न माने, माता पिता उनसे लाभ उठावें, चाहे न उठावें, लेकिन योग्य माता पिता उपरोक्त संसारिक शिक्षा देनेसे विमुख नहीं होते तथा सुसन्तान भी सुशिक्षा पानेसे माता पिताके उपकारको नहीं भूलता है, वह सुपुत्र होकर माता पिताकी आज्ञाका सर्वथा पालन करता हुआ कुल दीपक कहाता है; लेकिन संसारीक, शिक्षा देना हीं केवल माता पिता का कर्तव्य नहीं है, संसारिक शिक्षित होनेसे ही सन्तानको धन और सुख प्राप्त नहीं होसक्ता. उनका सुख दुःखका कारण तो पूर्व कृत पुन्य पाप है माता पिता चाहै करोड़ों रुपयोंकी सम्पत्ती छोड़जाय, परन्तु सन्तानके भाग्यमें भोगनेका योग्य न हो तो थोड़े अरसेमें ही सम्पत्तिका विनाश होजाताहै, फिर परभव से आके कोई भी सन्तानके सुख दुःखकी बात नहीं पूछताहै पूछ भी कैसे सक्ते है, न जाने कोनसी गतिमें कोनसा

शरीरधारन करते है, स्वकृत पुन्यपापका फल भोगना पड़ता है, लेकिन बहुतसे माता पिता तो स्नेह वश होके सन्तान के लिये अनेक कुकर्मादिक भी करके धन उपार्जन करने को तत्पर रहतेहैं ममेवश माया जालमें पडके स्वयं धर्मादि सुकार्य न कर अपने सन्तानो को भी धर्म शिक्षा नहीं सिखाते हैं।

इसलिये कहना है ज्यो माता पिता धर्म में दृढ हैं जिनोंको शुद्ध देव गुरू धर्म प्रियहैं, जिनकी हाड और हाडकी मींजी वीतरागप्रकृपित धर्मसे रँगीहुई है, ज्यो द्वादसांग रूप जिनवाणी गुरुके मुखसेसुन आस्थाप्रतीत रखके, तप जप शील संतोषादिसुकार्य करने में हमेसः तत्पर है, स्थूलथकी हिन्सा झूटचोरी मैथुन परिग्रहसे यथा शक्ति निवृत्तिहो ब्रतमें धर्म अब्रत सेनै सेवानेमें अधर्म समझकर शुद्ध आचार्य उपाध्याय साधू साध्वियों की सेवा भक्तिमें लह लीनहै, जीव अजीवादि नव तत्वोंको यथार्थरीतसे जान के अणुब्रतीहो, पंचम गुणस्थान पर श्रावक कहेजातेहैं, संसारिक वाणिज्य व्यवहारादिकर, अपनी जीविका और कुटुम्ब निमित्त धन उपार्जन करने में धर्म न समझ्के लौकिक रीती करते करातेहैं

पापके कामोमें पाप और धर्मके कामोंमें धर्म समझ-
ना ही शुद्ध जाणपना है

जिन्होंके घटमें समकितमयी ज्योतिका प्रकाश है,
जिन् श्रावक श्राविकाको अपनी सन्तानको धर्मका
सहाय देके सदा सुखीकरनाहै, तो उचितहै अपने
सन्तानोको धर्म शिक्षा भी हमेशादेतेरहैं किस रीतसे
साधू साध्वियोंको वंदना नमस्कार करना, किस
रिती से निर्दोष आहार पानी बहिराना, आसातनाटा-
लके विनयसहित सेवा भक्ति करना,इत्यादि शिक्षा
बचपनसेही सिखलाना चाहिये, जीव अजीव पुन्य
पाप संवर निर्जरा बंध मोक्ष इननवपदार्थोंकायथार्थ
जाणपना, और देव गुरु धर्मकी परीक्षा पढानाही
माता पिताका परम कर्त्तव्यहै, सिद्धान्त सुनस्वयं
धर्ममें दृढहो अपने सन्तानोको धर्ममें दृढ करनाही
उचित कार्यहै, ज्यो सन्तान बचपनसे धर्म शिक्षा
पावेंगे वो पाप कार्यमें पाप समझेंगे,धर्मकार्यमे धर्म
समझेंगे, उनका दिल एकाइक अनर्थ करनेमेंनहीं
चलेगा कुविशन सेतेहुये होंगे,ज्योसुसंगपाग्रुनश्रा
ही रहेंगे,इनको अपजस अकीर्तिका बडाखोफरहैगा,
कूटकपट प्रपंचदगादि कुकर्म करनेसे बचरहैंगे, वो

धार्मिक सन्तान स्वयं यह भव पर भव में सुखी हो, अपने माता पिता आदि परिवारको धर्म की सहायता दे, सुखी करेंगे, संसार समुद्र में डूबतेहुये को तारना ही वीतरागदेवका धर्म है, धर्ममें दृढ करना ही परमोपकारी और उऋण होना है ।

मेरे प्यारे भाईयो इस दुखम् नामां पंचम् काल में भव्य जीवों को श्रीजिनभाषित शुद्ध सीधी राह बताने के लिये मानो श्रीमद्भिक्षु ऋषिराज, जिन राजवत् होगये हैं; जैसा रागद्वेष रहित वीतराग देव का निर्मल मार्ग हैं, जिन केवल ज्ञानी महाराज का व्याख्यान पक्षपात रहित लोकालोक स्वभाव सहित, आगम अधिकारहै वैसाही प्ररूपणा स्वामी भीखनजी काहै; ज्यो सत्य और न्यायवादी हैं उन को स्वामीका भाषण अमृतसे अधिक मिष्ठ और प्रिय हैं,जिन वीतरागदेवके मार्गमें रागद्वेष दोनों कर्मोंका बीज कहाहै. जिस श्रमण माहणका उपदेश आदेश मत हर्यो २ है, वोही आदेश और उपदेश स्वामी का है; जो अहिंसा परमो धर्मः और उत्कृष्ट मङ्गल मान रहे हैं, जिन को भगवत के वचनों की आस्था प्रतीत हैं, जिनकी हाड और हाडकी मींगी धर्म रंग

से रंगी हुई है वो क्या कभी धर्मार्थ हिन्सा का पाप न होना समझ सकते हैं, जिसके घट में करुणामयी बिन्दु का प्रसार है, उन दयावानों की वाणी में शुधा सिन्धु दया का प्रचार है; वो क्या कभी एकेन्द्री जीवों का विनास कर, पंचेन्द्री जीवों को साता उपजाने में धर्म कह सक्ते हैं; "नहीं नहीं कदापि नहीं" मूर्ख और गुणी दोही पुरुष अपना कर्तव्य करने में हमेशा तत्पर रहा करते हैं, मूर्ख और निन्दकों का कर्तव्य क्या है, वो सुज्ञजन प्रायः सबही जानते हैं, "पर निन्दा करना उनका परम कर्तव्य है," निन्दक लोक निन्दा करने में बड प्रवीण हैं, प्रवीण हैं प्रवीनता का कारण क्या स्वयं शुद्ध चारित्र न पालन करना, बगैर दूसरा होसक्ता है।

ज्योंहो निन्दक अनेक निन्दा करो अनेकानेक पुस्तकें रचो झूंठ मूंठ मन माने सो छपवा छपवा कर भोले भाले लोगों को बहकावो लेकिन निष्पक्षपाती और न्यायाश्रयी पुरुष बगैर समझे बूझे सत्यासत्य का निर्णय किये बिना हरगिज असत्य को सत्य नहीं मान सक्ते हैं, जिन अध्यात्मियों को पुद्गल सुख छिप तुल्य हैं जिन सम्यक् दृष्टियों को

पाप कार्य में पाप, धर्म कार्य में धर्म करणा योगशुक्त श्रद्धना परम प्रिय है, बस उनहीं को स्वामीके बचनोंकी छाया आश्या है; ज्यो द्वादशांगादि सूत्र शुद्ध सुगुरु मुखसे सुने हैं, वो कदापि स्वामी की प्ररूपना को अशुद्ध नहीं कहसक्ते हैं, स्वामी कृत ग्रंथ ढाल स्तवन चरचा बोल थोकडादि, भव्यजीवोंको भव-सागर से तारनें को "जहाज समान है,,

इसहीलिये कहना है मियवरो! तुम्हें ज्यो अपने प्यारे सन्तानों को जन्म जरामरणादि दुखों से छुड़ा कर परम सुखी करना है, तो बचपन में शुरूसेंहीं धर्म शिक्षा से सिक्षित कर धार्मिक सन्तान का "सुख लूटो,, जिससे यह लोक परलोकमें परम सुखी हो;

मैंने ज्यो यह पुस्तक स्वामी श्री भीखनजी कृत चरचाके बोलों के थोकडा संग्रहकर, मेरी बुद्धि अनुमान यथार्थ रीतिशुद्धधारटावरों कोसहजमें सुगमतासे सीखनेके लिये, "शिशु हित शिक्षा,, प्रथम भाग, छपवाके प्रगट करी है, सो ज्यो कोई भूलचूक रही हो उसे गुणीजन शुद्ध कर पढ़ें पढावेंगे।

आपका हितेच्छू—

श्रावक जौहरी गुलाबचन्द लूणीयां सवाई जयपुर.

देशी ख्याल की चाल ।

चौपड की बाजी खेलो नि राज कुमार ।

गावें गुरु गुन हम ताल स्वरें सुख काज ॥ गाव
इक तालो द्वितालो तितालो । चिहुतालो वृक्ष
ताज ॥ सारिगम पधानि सप्त सुरोंथी ॥ निज गुन
रहे बिराज ॥ गावे ॥१॥ इक ताले इक आतम मेरी
ज्ञान दर्शन दोयताज देश व्रत ग्रही तृतिय प्रगट थई
वीर्य्य सक्ति चिहुं मांझ गावे ॥ २ ॥ आतम युति
पंचम् यह जानो सुर त्रिहूं ग्राम आवाज देव गुरु
धर्म्म शुद्ध धार लिये मिलन भवोंदधिपाज ॥ गावे ।३
छहुं कायों की हिन्सा न करणी यह खट राग समाज
करण जोग छहुं में हैं सांषा छत्तिस रागणी
यांज ॥ गावें ॥४॥ धूक २ धप मापि धों धों धिधों
धों रहे म्रदंग सुवाज जिन आणां विन धर्म्म बतावें
धूक धूक तेह कुकाज ॥ गावे ॥ ५ ॥ सप्त भंगी
सारंगी बोलै सात नये आगाज स्याद्वाद सज
विषवाद तज अनुभव रीति रिवाज ॥ गावें ॥६॥
पंचमहाव्रत तीन गुप्ति फुन पंच सुमित गुन
जहाज कहे गुलाब यह तेरा पंथसे पावे शिव
पुरराज गावे प्रभुगुन हम ताल स्वरें सुखकाज ॥७॥

* श्रीः *

श्री जिनायनमः

* मंगला चरणम्

॥ दोहा ॥

ॐ नमो अरिहन्त सिद्ध, आचार्य उपाध्याय ।
साधु सकलके चरणकूँ वन्दू शीश नमाय ॥१॥
महा मंत्र ए शुभ जपूं, प्रातः समय सुख कार ।
विघन मिटै संकट कटै, वर्तै जय जय कार ॥ २ ॥
सुमरूं श्री भिक्षू गुरू, प्रबल बुद्धि भण्डार ।
तासु प्रशादे पामिए, समकित-रतन उदार ॥ ३ ॥
श्रीजिन आज्ञा मांहिली, करणी निर्वध जान ।
सावद्य आज्ञा बारली, एहिज धर्म पिछान ॥ ४ ॥
ज्ञानानन्त् आगम विषै, पिणसद्गुरू सुपसाय ॥
गुलाब कहै पढीए सदा, निजबुद्धि अनुयाय ॥५॥

॥ णमोकार ॥

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरी याणं, णमो उवज्झायाणं, णमोलोए सव्व साहूणं ॥ १ ॥

॥ पाठ दूसरा ॥

॥ सामायक लेणे की पाटी ॥

करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव नियमं (महूरत एक) पज्जुवासामि, दुविहेणं, तिविहेणं, न करेमि, नकारवेमि, मणसा वायसा कायसा, तस्स भंते पडिक्कमामि, निन्दामि गरहामि, अप्पाणं वोसरामि ।

॥ पाठ तीसरा ॥

॥ सामायक पारणे की पाटी ॥

नवमां सामायक विरमण व्रत के विषै जो कोई अतिचार दोष लागो हुवै ते आलोवूं, मन वचन काया नां पाडवा ध्यान मवर्त्तांया होय, अण पूगी पारी होय, पारतां विसारी होय, सामायक में समता न करी होय, ममता करी होय, राजकथा देशकथा स्त्री कथा भत्त कथा करी कराई होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ पाठ चौथ ॥

॥ अथ तिक्खुत्ता की पाटी ॥

तिक्खुत्तो आयाहीणं पयाहीणं वंदामि नमं सामि सक्कारेमि सम्मारोमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थेण वंदामि ॥ इति ॥

॥ पाठ पांचमां ॥

॥ अथ चौवीसत्था की पाटीयां ॥

इच्छामि पडिक्कमिउं इरिया वहियाए विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बियक्कमणे हरियक्कमणे ओसाउत्तिङ्ग पणगदग मट्टी मकडा संताणा संकमणे जे मे जीवा विराहिया एगेन्दिया बेइंदिया तेइंदिया चउइंदिया पंचेन्दिया अभिहया वत्तिया लेसिया सङ्घाइया सङ्घट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया ठाणाउट्ठाणा सङ्कामिया जे मे जीवियाउ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ अथः तस्सुत्तरी ॥

तस्सोत्तरी करणेणं पायच्छित्त करणेणं विसोही करणेणं विसल्ली करणेणं पावाणं कम्माणं निग्घाय

णठाए ठामेमि काउसग्गं अणथ उससिएणं नीस-सिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वाय निसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अङ्गसंचालेहिं सुमेहिं खेल संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठीसंचालेहिं एव माइएहिं आगारेहिं अभग्गो आविराहिउ हुज्जमे काउस्सग्गो जाव अरिहन्ताणं भगवंताणं नमोक्कारेणं नपारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

ध्यान मे ॥ इच्छामि पडिक्कमिउ की पाटी मन में गुणकर एक नमोकारगुण के पारलेणो ॥

॥ अथः लोगसकी पाटी ॥

लोगस्स उज्जोअगरे धम्मतित्थयरे जिणे अरिहन्ते कित्तइस्सं चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजीयं च वंदे संभव मभिनंदणं च सुमइं च पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं सीयल सिज्जंस वासुपुज्जं च विमलमणंतच जिणं धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथु अरं च मल्लिं वंदे मुणि सुव्वयं नमि जिणं च वंदामि रिट्ठनेमिं पासं तह वद्ध माणं च ॥ ४ ॥ एव मए अभिथुवा विहुरयमला

पहीणजरमरणा चउवीसंपि जिणवरा तित्थयरामे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया जेए लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरुग्ग बोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चन्देसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा सागरवर गम्भीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसन्तु ॥ ७ ॥

॥ अथः नमोत्थुणं ॥

णमोत्थुणं अरिहंताणं भगवन्ताणं आइगराणं तित्थगराणं सयं संबुद्धाणं पुरिसोत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवर पुण्डरीयाणं पुरिसवर गंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहीआणं लोगपईवाणं लोगपज्जो अगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं शरणदयाणं जीवदयाणं बोहीदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं दीवोताणं सरणगई पईट्ठा अप्पडिहय वरनाणदंसण धराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहियाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसिणं शिवमयलमरुअ मणंत मक्खय

मव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं ॥

॥ पाठ पांचवा ॥

॥ अथ पञ्च पद वंदना ॥

पहलै पद श्री सीमंदरस्वामी आदि देईनें जघन्य २० तीर्थंकर देवाधि देवजी, उत्कृष्टा १६० तीर्थंकर देवाधि देवाजी, पंच महा विदेह खेत्रां के विषे बिचरै छै तेह अरिहन्तजी केवा छै अनन्त ज्ञानका धणी, अनन्त दर्शनका धणी, अनन्त चारित्रका धणी, अनन्त बलका धणी, एकहजार आठ शुभ लक्षणका धारणहार चौसट इंद्रांका पूजनीक, चौतीस अतिशय, पैंतीसबाणी द्वादशगुण सहित विराजमान छै इसा तीर्थंकरांजीने मांहरी वंदना तिक्खुताके पाठसे मालुम होज्यो॥१

दूजै पद अनन्ता सिद्ध पनरह भेदें अनन्ती चौवीसी आठकर्म खपायनें सिद्धजी मोक्ष पहुंता तिहां जन्म नहीं, जरा नहीं, मरण नहीं संजोग नहीं, वियोग नहीं, दुःख नहीं, दारिद्र नहीं, भय नहीं भव नहीं फिरपाछा गर्भावास मैं आवै नहीं

सदा काल सास्वता सुखामैं विराजमान छै, इसा उत्तम सिद्ध भगवान सैं मांहरी वंदना तिरुक्खुत्तारा पाठ सुं मालुम होज्यो ॥ २ ॥

तीजै पद जघन्य दोय कोड केवली, उत्कृष्टा नव कोड केवली पंच महा विदेह क्षेत्रां के विषै विचरै छै, केवल ज्ञान केवल दर्शण का धारणहार छै सर्व द्रव्य क्षेत्र काल भाव जाणैं देखै छै ज्यां केवल ज्ञानियां सैं मांहरी वंदना तिरुक्खुत्ता का पाठ सुं मालुम होज्यो ॥ ३ ॥

चौथे पद गणधरजी आचार्य्यजी उपाध्यायजी स्थिवरजी, गणधरजी महाराज केवाछै? अनेक गुणा करी विराजमान छै आचार्य्यजी महाराज केवाछै, छत्तीस गुणां करी बिराजमान छै. उपाध्यायजी महाराज केवाछै पच्चीशगुणां करी विराजमान छै स्थिवरजी महाराज केवाछै धर्म सैं डिगता हुया प्राणीनैं थिर करी राखै शुद्ध आचार पालै परूपै ज्यां मोटा पुरुषां जी सैं महारी वंदना तिरुक्खुत्ताका पाठ सैं मालुम होज्यो ॥ ४ ॥

पंचम् पद पोतारा (म्हांरा गुरू धर्म्माचार्य्य श्री श्री श्री १००८ श्री श्री कालूरामजी स्वामी

(वर्त्तमान आचार्य नूं नाम) महाराज आदि देई जघन्य दोय हजार क्रोड साधू साध्वी जाफेरा, उत्कृष्टा नव हजार क्रोड साधू साध्वी अढाई द्वीप पंदरा खेत्रांके विषे विचरै छै ते महापुरुष केवाक छै ? पंच महाव्रत का पालन हार, छवः कायानां पीयर, पांचे सुमते सुमता, तीन गुप्ते गुप्ता, नववाड सहित ब्रह्मचर्य का पालन हार, बारा भेदें तपस्या का करणहार, सतरह भेद संयम का पालन हार, बावीस परिसहका जीतणहार- सत्तावीस गुणांकरी विराजमान छै बयालीस दोषटाल कर आहार पाणी का लेणहार, बावन अणाचारका टालणहार, निरलोभी निरलालची, संसार का त्यागी, मोक्ष का अभिलाषी, संसार से अपूठा, मोक्ष सें सांमां, सचित का त्यागी, अचित्त का भोगी नस्वादी त्यागी बैरागी आंणी नें दीनी हुई वस्तुलेवै नहीं, मोलकी वस्तु लवै नहीं, तेडिया आवे नहीं, नूंतिया जीमैं नहीं, कनक कामनी सें न्यारा, वायरा नींपरे अप्रतिबन्ध विहारी' एहवा मोटा पुरषां जीसूं माहरी वन्दना तिख्कुत्तारा पाठ सुं मालुम होज्यो ॥ ५ ॥

॥ पाठ छट्ठा ॥

चौरासी लक्ष जीवा योनि ॥

७ लाख पृथिवी काय, ७ लाख अप्पकाय, ७ लाख तेऊकाय, ७ लाख वाऊकाय, १० लाख प्रतेक बनसपती, १४ लाख साधारण बनसपतीकाय, २ लाख बेन्द्री, २ लाख तेन्द्री, २ लाख चौरिन्द्री, ४ लाख नारकी, ४ लाख देवता, ४ लाख तिर्यंच पञ्चेन्द्री, १४ लाख मनुष्य की जाति, च्यार गति चोरासी लाख जीवा जोनि सूं बारंवार खमतखामना ।

॥ पाठ सातवाँ ॥

पहला श्रीऋषभनाथस्वामीजी १ दुजा श्री अजितनाथ स्वामीजी २, तीजा श्रीसंभवनाथजी३, चौथा श्रीअभिनन्दननाथस्वामीजी ४, पांचवां श्रीसुमतिनाथस्वामीजी ५, छठा श्रीपद्मप्रभः नाथस्वामीजी ६, सातवां श्रीसुपार्श्वनाथस्वामीजी ७, आठवां श्रीचंद्राप्रभःनाथस्वामीजी ८, नवमां श्री सुविधनाथस्वामीजी ९, दशमां श्री शीतलनाथ स्वामीजी १०, इग्यारवां श्रेयांसनाथस्वामीजी ११,

बारमां श्री वासुपूज्यनाथ स्वामीजी १२, तेरमां श्रीविमलनाथ स्वामीजी १३, चौदमां श्रीअनन्तनाथ स्वामीजी १४, पंदरमां श्री धर्मनाथ स्वामीजी १५, सोलमां श्रीशान्तिनाथस्वामीजी १६, सत्तरमा श्री कुन्थुनाथ स्वामीजी १७ अठारमां श्री अरिनाथ स्वामीजी १८, उगणीसमां श्री मल्लीनाथ स्वामीजी १९, बीसमां श्री मुनिसुव्रत नाथ स्वामीजी २०, इकवीसमां श्री नमिनाथस्वामीजी २१ बावीसमां श्री अरिट्ठ नेमिनाथ स्वामीजी २२ तेवीसमां श्री पार्श्वनाथ स्वामीजी २३, चौवीसमां श्री वर्द्धमान नाथ स्वामीजी २४

॥ पाठ आठवां ॥

॥ अथ पच्चीस बोलको थोकडो ॥

१ पहले बोले गति ४

नरकगति १, तिर्यञ्चगति २, मनुषगति ३, देवगति ४,

२ दूजे बोले जाति ५,

एकेन्द्री १, बेन्द्री २, तेन्द्री ३, चौरिन्द्री ४, पञ्चेन्द्री ५

३ तीजे बोले काया ६—
पृथिवीकाय १, अप्पकाय २, तेऊकाय ३, वाऊकाय ४, वनस्पतीकाय ५, त्रसकाय ६

४ चौथे बोले इन्द्रियां ५—
श्रोत्र इन्द्री १, चक्षु इन्द्री २, घ्राण इन्द्री ३, रस इन्द्री ४, स्पर्श इन्द्री ५,

५ पांचवें बोले पर्याय ६—
आहार पर्याय १, शरीर पर्याय २, इन्द्रीय पर्याय ३, स्वासोस्वास पर्याय ४, भाषा पर्याय ५, मन पर्याय ६,

६ छठे बोले प्राण १०—
श्रोत इन्द्री बल प्राण १, चक्षु इन्द्री बल प्राण २ घ्राण इन्द्री बल प्राण ३, रश इन्द्री बल प्राण ४, स्पर्श इन्द्री बल प्राण ५, मन बल प्राण ६, वचन बल प्राण ७, काया बल प्राण ८, सासो, स्वास बल प्राण ९, आउषो बल प्राण १०,

७ सातमें बोले शरीर ५
औदारीक शरीर १, वैक्रिय शरीर २, आहारिक शरीर ३ तैजश शरीर ४, कार्मण शरीर ५

८ आठमें बोले जोग १५—

४ मनका—सत्य मन जोग १, असत्य मन जोग २, मिश्र मन जोग ३, व्यवहार मन जोग ४

४ वचनका—सत्य भाषा १, असत्य भाषा २, मिश्र भाषा ३, व्यवहार भाषा ४,

७ सात कायाका—औदारीक १, औदारिक मिश्र २, वैक्रिय ३, वैक्रिय मिश्र ४, आहारिक ५, आहारिक मिश्र ६, कार्मण जोग ७,

९ नवमें बोले उपयोग १२—

५ ज्ञान—मति ज्ञान १, श्रुत ज्ञान २, अवधि ज्ञान ३, मनः पर्यव ज्ञान ४, केवल ज्ञान ५,

३ अज्ञान—मति अज्ञान १, श्रुत अज्ञान २, विभङ्ग अज्ञान ३

४ दर्शन—चक्षु दर्शन १, अचक्षु दर्शन २, अवधि दर्शन ३, केवल दर्शन ४

१० दशमें बोलै कर्म ८—

ज्ञानावरनीय कर्म १, दर्शनावरनीय कर्म २, वेदनीय कर्म ३, मोहनीय कर्म ४, आयुष्य कर्म ५, नाम कर्म ६, गोत्र कर्म ७, अन्तराय कर्म ८

११ इग्यारमें बोलै गुणस्थान १४—

१ पहलो मिथ्यात्वी गुणस्थान
२ दूजो सहस्वादान समदृष्टी गुणस्थान
३ तीजो मिश्र गुणस्थान
४ चौथो अविरती समदृष्टी गुणस्थान
५ पांचमों देश विरती श्रावक गुणस्थान
६ छट्ठो प्रमादी साधु गुणस्थान
७ सातमों अप्रमादी साधु गुणस्थान
८ आठमों नियट बादर गुणस्थान
९ नवमों अनियट बादर गुणस्थान
१० दशमों सूक्षम संपराय गुणस्थान
११ इग्यारमों उपशान्ति मोह गुणस्थान
१२ बारमों क्षीण मोहनीय गुणस्थान
१३ तेरमों संजोगी केवली गुणस्थान
१४ चौदमों अजोगी केवली गुणस्थान

१२ बारमैं बोलै पांच इन्द्रियां की २३ विषय–

३ श्रोत इन्द्रियकी तीन विषय–जीव शब्द १ अजीव शब्द २, मिश्र शब्द ३.

५ चत्तु इन्द्रियकी पांच विषय–कालो १ पीलो २, नीलो ३, रातो ४, धोलो५,

२ घ्राण इन्द्रियकी दोय विषय–सुर्भि गंध १ दुः र्भिगन्ध २.

५ रश इन्द्रियकी पांच विषय–खट्टो १मींठो २ कडुवो ३. कषायलो ४.तीखो ५.

८ स्पर्श इन्द्रियकी आठ विषय–हलको १ भारी २,ठंडो ३, ऊन्हो ४, लूखो ५, चोपड्यो ६, खरदरो ७, सुहालो ८,

१३ तेरमैं बोलै दश प्रकार का मिथ्यात्व–

१ जीवनैं अजीव श्रद्धै तो मिथ्यात्व

२ अजीवनैं जीव श्रद्धै तो मिथ्यात्व,

३ धर्मनैं अधर्म श्रद्धै तो मिथ्यात्व,

४ अधर्मनैं धर्म श्रद्धै तो मिथ्यात्व,

५ साधुनैं असाधु श्रद्धै तो मिथ्यात्व,

६ असाधुनैं साधु श्रद्धै तो मिथ्यात्व,

७ मार्ग नै कुमार्ग श्रद्धै तो मिथ्यात्व.

८ कुमार्ग नैं मार्ग श्रद्धै तो मिथ्यात्व

९ मोक्ष गया नैं अमोक्ष गयो श्रद्धै तो मिथ्यात्व,

१० अमोक्ष गया नैं मोक्ष गयो श्रद्धै तो मिथ्यात्व.

१४ चौदमें बोले नवतत्वको जाणपणो तिंका ११५ बोल-

१४ जीवका चौदा-सूक्ष्म एकेन्द्री का दोय भेद-पहलो अपर्याप्तो, दूजो पर्याप्तो, बादर एकेन्द्री का दोय भेद-तीजो अपर्याप्तो चौथो पर्याप्तो, बेन्द्री का दोय भेद-पांचमुं अपर्याप्तो, छट्ठो पर्याप्तो, तेन्द्री का दोय भेद-सातमो अपर्याप्तो, आठमो पर्याप्तो चौरिन्द्री का दोय भेद-नवमूं अपर्याप्तो दशमु पर्याप्तो, असन्नी पंचेन्द्री का दोय भेद-इग्यारमुं अपर्याप्तो, बारमु पर्याप्तो सन्नी पंचेन्द्री का दोय भेद-तेरमु अपर्याप्तो, चौदमु पर्याप्तो

१४ अजीव का चौदा—

३ धर्मास्ति कायका—स्कंध, देश, प्रदेश,
३ अधर्मास्ति कायका—स्कंध, देश प्रदेश,
३ आकाशास्ति कायका—स्कंध, देश, प्रदेश,
१ दशमूं काल यह दश भेद अरूपी छे,
४ पुदगल का च्यार भेद—स्कंध, देश, प्रदेश, परमाणुं पुद्गल, यह रूपी छे,

६ पुण्य नव प्रकारे—

अन्न पुण्ये १, पांण पुण्ये २, लैण पुण्ये ३, सैण पुण्ये ४, वस्त्र पुण्ये ५, मन पुण्ये ६, वचन पुण्ये ७, काया पुण्ये ८, नमस्कार पुण्ये ९,

१८ पाप अठारे प्रकारे—

प्राणातिपात १, मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह ५, क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ९, राग १०, द्वेष ११, कलह १२, अभ्याख्यान १३, पिशुन १४, पर परिवाद १५, रति अर-

ति १६, माया मृषा १७, मिथ्या दर्शन शल्य १८,

२० आश्रवका—मिथ्यात्व आश्रव १, अविरत आश्रव २, प्रमाद आश्रव ३, कषाय आश्रव ४, जोग आश्रव ५, प्राणातिपात जीव की हिन्सा करै ते आश्रव ६ मृषावाद कूंट बोलै ते आश्रव ७, अदत्तादान चोरी करै ते आश्रव ८, मैथुन शेवै ते आश्रव ९, परिग्रह राखै ते आश्रव १०, श्रोत इन्द्रीय मोकली मेलै ते आश्रव ११, चक्षु इन्द्रीय मोकली मेलै ते आश्रव १२, घ्राण इन्द्रीय मोकली मेलै ते आश्रव १३, रश इन्द्रीय मोकली मेलै ते आश्रव १४, स्पर्श इन्द्रीय मोकली मेलै ते आश्रव १५, मन मोकलो मेलै ते आश्रव १६, वचन मोकलो मेलै ते आश्रव १७, काया मोकली मेलै ते आश्रव १८, भंड उपग्रण सें अजयणा करै ते आश्रव १९, शूई कुशग सेवै ते आश्रव २०,

२० संवर का—सम्यक्त्व संवर १, विरत संवर २, अकषाय संवर ३, अप्रमाद संवर ४, अजोग संवर ५, (अप्राणातिपात) जीवकी हिंसा न करै ते संवर ६, (अमृषावाद) झूंठ न बोले ते संवर ७, (अअदत्तादान) चोरी न करै संवर ८, मैथुन न शेवै ते संवर ९, परिग्रह न राखै ते संवर १०, श्रोत इन्द्रीय वश करै ते संवर ११, चक्षु इन्द्रीय वश करै ते संवर १२, घ्राण इन्द्रीय वश करै ते संवर १३, रश इन्द्रीय वश करै ते संवर १४, स्पर्श इन्द्रीय वश करै ते संवर १५, मन वश करै ते संवर १६, वचन वश करै ते संवर १७, काया वश करै ते संवर १८, भंडोपगर्ण से अजयणा न करै ते संवर १९, सुचि कुशग न शेवै ते संवर २० ।

१२ निर्जरा बारै प्रकार—अणशण १, उणोदरी २, भिक्षाचरी ३, रश परित्याग ४, काया क्लेश ५, प्रति संलेषणा ६, प्रायश्चित्त ७, विनय ८, वैयावच ९, सज्झाय १०, ध्यान ११, विउस्सग्ग १२ ।

४ बंधका—प्रकृति बंध १, स्थित बंध २, अनु भाग बंध ३, प्रदेश बंध ४।

४ मोक्षका—ज्ञान १, दर्शन २, चारित्र ३, तप ४,

१५ पंद्रह मैं बोलै आत्मा ८—

द्रव्य आत्मा १, कषाय आत्मा २, योग आत्मा ३, उपयोग आत्मा ४, ज्ञान आत्मा ५, दर्शन आत्मा ६, चारित्र आत्मा ७ वीर्य आत्मा ८।

१६ सोल मैं बोलै दंडक २४—

१ सात नारकी को एक दंडक

१० भवन पतीका दश दंडक—असुर कुमार १, नाग कुमार २, सुवर्न कुमार ३, विद्युत कुमार ४, अग्नि कुमार ५, दीप कुमार ६, उदधि कुमार ७, दिशा कुमार ८, वायु कुमार ९, स्तनति कुमार १०।

५—पांच स्थावरां का दंडक पांच—नारनुं पृथ्वीकायको १, तेरनुं अप्पकायको २,

चौदमुं तेऊकायको ३, पंदरमुं वायुकाय को ४, सोलमुं वनस्पतिकायको ५ ।

१ सतरमों बेन्द्रीको ।

१ अट्ठारमों तेन्द्रीको ।

१ उन्नीसमों चौरिन्द्रीको ।

१ बीसमों तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रीको ।

१ इक्कीसमों मनुष्यको ।

१ बाईसमों वाणव्यन्तरां देवतां को ।

१ तेवीसमों जोतषि देवतां को ।

१ चोवीसमों वैमानीक देवतां को ।

१७ सतरमें बोलै लेश्या ६—

कृष्ण लेश्या १, नील लेश्या २, कापोत लेश्या ३, तेजु लेश्या ४, पद्म लेश्या ५, शुक्ल लेश्या ६ ।

१८ अट्ठारमें बोलै दृष्टी ३—

सम्यक् दृष्टी १, मिथ्यात्व दृष्टी २, सम-मिथ्या दृष्टी ३ ।

१९ उगणीस मैं बोलै ध्यान ४—

आर्तध्यान १, रौद्रध्यान २, धर्मध्यान ३, शुक्लध्यान ४ ।

१० बीसमैं बोलै षट् द्रव्य को जांणपणो तींका ३० बोल—

धर्मास्तिकाय नैं पांचा बोलां ओलखीजे:—द्रव्य थकी एक द्रव्य, खेत्रथी लोक प्रमाण, काल थकी आदि अंत रहित, भावथी अरूपी गुण थकी जीव पुद्गल नैं हालवा चालवा को साम्झ, अधर्मास्तिकायनैं पांचां बोलां ओलखीजे:—द्रव्यथी एक द्रव्य खेत्रथी लोक-प्रमाण, काल थकी आदि अंतरहित, भावथी अरूपी, गुणथी थिर रहवानों साम्झ, आका-शास्तिकाय नैं पांच बोलकरी ओलखीजे:—द्रव्य थकी एक द्रव्य, खेत्रथी लोक अलोक प्रमाणे, कालथी आदि अंत रहित भावथी अरूपी, गुणथी भाजन गुण, कालनैं पांचां बोलां ओलखीजे:—द्रव्यथी अनन्ता द्रव्य, खेत्रथी अढाई द्वीप प्रमाणे, कालथी आदि अंत रहित, भावथी अरूपी गुणथी वर्त्तमान गुण, पुद्गलास्तिकायनैं पांच बोलथी ओल-खीजे:—द्रव्यथी अनन्ता द्रव्य, खेत्रथी लोक प्रमाण, कालथी आदि अंत रहित, भावथी

रूपी, गुणथी गलै मलै, जीवास्तिकायनैं पांच बोलकरी ओलखीजे:—द्रव्यथी अनन्ता द्रव्य खेत्रथी लोक प्रमाणे, कालथी आदि अंत रहित, भावथी अरूपी, गुणथी चैतन्य गुण।

२१ इकीसमैं बोलै राशि २ दोय:—

जीवराशि १, अजीवराशि २।

२२ बाईसमैं बोलै श्रावक का १२ बारे व्रत:—

१ पहला व्रतमैं श्रावक स्थावर जीव हणवा को प्रमाणकरै और, त्रश जीव हालवा चालता हणवाका स उपयोग त्याग करै।

२ दूजा व्रतमैं मोटकी झूंट बोलवाका स उपयोग त्याग करै।

३ तीजा व्रतमैं श्रावक राज दंडे लोक भंडे इसी मोटकी चोरी करवाका त्याग करै।

४ चौथा व्रत मैं श्रावक मर्याद उपरान्ति मैथुन सेवाका त्याग करै।

५ पांचमां व्रतमैं श्रावक मर्याद उपरान्ति परिग्रह राखवाका त्याग करै।

६ छट्ठा व्रत के विषै श्रावक दशों दिशा मैं मर्याद उपरान्ति जावाका त्याग करै।

७ सातवांव्रत के विषे श्रावक उपभोग परिभो- गका बोल २६ छै जिणारी मर्यादा उप रान्ति त्याग करै, तथा पंदरह कर्म्मा दानका मर्यादा उपरान्ति त्याग करै ।

८ आठमां व्रतके विषै श्रावक मर्यादा उप- रान्ति अनर्थ दंडका त्याग करै ।

९ नवमां व्रतके विषै श्रावक सामायिककी मर्यादा करै ।

१० दशमां व्रतके विषै श्रावक देशावगासी संवरकी मर्यादा करै ।

११ इग्यारमूं व्रत श्रावक पोषह करै ।

१२ बारमूं व्रत श्रावक शुद्ध साधू निर्ग्रं थनें निर्दोष आहार पाणी आदि चउदै प्रकारनों दान देवै।

२३ तेवीसमें बोलै साधूजी का पंच महाव्रत :—

१ पहला महाव्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे जीव हिन्सा करै नहीं, करावै नहीं करतानैं भलो जाणै नहीं मनसें वचनसें काया से ।

२ दूसरा महा व्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे झूठ बोले नहीं, बोलावे नहीं, बोलता प्रते भलोजाणै नहीं, मन सें बचन सें काया सें ।
३ तीजा महा व्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे चोरी करै नहीं, करावे नहीं, करतां प्रते भलो जाणै नहीं, मन सें बचन सें काया सें ।
४ चौथा महाव्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे मैथुन सेवे नहीं, सेवावे नहीं, सेवतां प्रते भलो जाणै नहीं, मन सें बचन सें काया सें ।
५ पांचमां महा व्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे परिग्रह राखे नहीं रखावे नहीं, रखता प्रते भलो जाणै नहीं, मन सें बचन सें काया सें ।

२४ चौवीस में बोलै भांगा ४९ गुणचास:—
३ करण ३ जोग से हुवे
करण तीनका नाम—करूं नहीं, कराऊं नहीं अनुमोदुं नहीं, जोग तीनका नाम—मनसा, वायसा, कायसा ।
आंक एक ११ को भांगा ९:—
एक करण एक जोग सें कहणा। करूं नहीं मनसा। करूं नहीं वायसा करूं नहीं कायसा।

कराऊँ नहीं मनसा, कराऊँ नहीं वायसा, कराऊँ नहीं कायसा, अनुमोदूँ नहीं मनसा, अनुमोदूँ नहीं वायसा, अनुमोदूँ नहीं कायसा

आंक एक १२ को भांग ९:—

एक करण दोय जोग से, करूं नहीं मनसा वायसा, करूं नहीं मनसा, कायसा, करूं नहीं वायसा कायसा कराऊँ नहीं मनसा वायसा कराऊँ नहीं मनसा कायसा, कराऊँ नहीं वायसा कायसा, अनुमोदूँ नहीं मनसा वायसा अनुमोदूँ नहीं मनसा कायसा, अनुमोदूँ नहीं वायसा कायसा।

आंक एक १३ को भांगा ३:—

एक करण तीन जोग से करूँ नहीं मनसा वायसा कायसा, कराऊँ नहीं मनसा वायसा, कायसा, अनुमोदूँ नहीं मनसा वायसा कायसा।

आंक एक २१ को भांगा ९:—

दोय करण एक जोग से, करूँ नहीं कराऊँ नहीं मनसा, करूँ नहीं कराऊँ नहीं वायसा

करूँ नहीं कराऊँ नहीं कायसा, करूँ नहीं अनुमोदूँ नहीं मनसा, करूँ नहीं अनुमोदूँ नहीं वायसा, करूँ नहीं अनुमोदूँ नहीं कायसा कराऊँ नहीं अनुमोदूँ नहीं मनसा, कराऊँ नहीं अनुमोदूँ नहीं वायसा, कराऊँ नहीं अनुमोदूँ नहीं कायसा ।

आंक २२ को भांगा ९ नवः—

दोय करण दोय जोग सें, करूँ नहीं कराऊँ नहीं मनसा वायसा, करूँ नहीं कराऊँ नहीं मनसा कायसा, करूँ नहीं कराऊँ नहीं वायसा कायसा, करूँ नहीं अनुमोदूँ नहीं मनसा वायसा, करूँ नहीं अनुमोदूँ नहीं मनसा कायसा करूँ नहीं अनुमोदूँ नहीं वायसा, कायसा, कराऊँ नहीं अनुमोदूँ नहीं मनसा वायसा, कराऊँ नहीं अनुमोदूँ नहीं नहीं मनसा कायसा कराऊँ नहीं अनुमोदूँ नहीं वायसा कायसा ।

आंक २३ को भांगा ३ तीनः—

दोय करण तीन जोग सें, करूँ नहीं कराऊँ नहीं मनसा वायसा कायसा करूँ नहीं अनु-

मोदूँ नहीं मनसा वायसा कायसा, कराऊँ नहीं
अनुमोदूँ नहीं मनसा वायसा कायसा ।

आंक एक ३१ को भांगा ३—
तीन करण एक जोग से, करूँ नहीं कराऊँ
नहीं अनुमोदूँ नहीं मनसा, करूँ नहीं कराऊँ
नहीं अनुमोदूँ नहीं वायसा, करूँ नहीं कराऊँ,
नहीं अनुमोदूँ नहीं कायसा ।

आंक एक ३२ भांगा ३—
तीन करण दोय जोग से करूँ नहीं कराऊँ
नहीं अनुमोदूँ नहीं मनसा वायसा करूँ नहीं
कराऊँ नहीं अनुमोदूँ नहीं मनसा कायसा,
करूँ नहीं कराऊँ नहीं अनुमोदूँ नहीं वायसा
कायसा । आंक एक ३३ को भांगो १—
तीन करण तीन जोग से, करूँ नहीं कराऊँ
नहीं अनुमोदूँ नहीं मनसा वायसा कायसा ।

२५ पच्चीस में बोले चारित्र ५ पांचः—

सामायिक चारित्र १, छेदोस्थापनीय चारित्र
२, पडिहार विशुद्ध चारित्र ३, सूक्ष्म सम्पराय
चारित्र ४, यथाख्याति चारित्र ५,

॥ इति पच्चीस बोल सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ श्रावक गुलाबछत ॥

॥ प्रश्नोत्तर बालबोध ॥

(१) प्रश्न–जीव कितने प्रकार के हैं ?—

उत्तर–२ प्रकार के–सिद्ध और संसारी;

(२) प्रश्न–संसारी जीव कितने प्रकार के हैं ?—

उत्तर–संसारी जीव ६ प्रकारके हैं–पृथ्वी, पाणी, वनस्पति, अग्नि, वायु, (तथा) त्रस;

(३) प्रश्न– त्रसजीव कितने प्रकार के हैं ?—

उत्तर–त्रसजीव ४ प्रकार के हैं–बेन्द्री, तेन्द्री, चौरेन्द्री पञ्चेन्द्री;

(४) प्रश्न–एकेन्द्री के कोनसी इन्द्रीय होती है और छः काय में से कितनी काय एकेन्द्री हैं ?—

उत्तर–एकेन्द्री के एक स्पर्श इन्द्री अर्थात् शरीर ही होता है, और छकाय में से पृथ्वीकाय, अप्पकाय, तेऊकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय यह पांचोंकाय एकेन्द्री हैं;

(५) प्रश्न–बेन्द्री के कितनी और कौन२सी इन्द्रीय होती है ?—

उत्तर–बेन्द्रीके स्पर्श और रस ए दो इन्द्रियां होती हैं;

(६) प्रश्न–तेन्द्रीके कितनी और कौन २ सी इन्द्रियां होती हैं ?—

उत्तर–तेन्द्रीके स्पर्श, रस, घ्राण, यह तीन इन्द्रियां होती हैं;

(७) प्रश्न–चौरेंद्रीके कितनी और कौन२सी इन्द्रियां होती हैं ?—

उत्तर–चौरेन्द्री के स्पर्श, रस, घ्राण, चक्षु यह च्यार इन्द्रियां होती हैं;

(८) प्रश्न–स्पर्श इन्द्री किसे कहते हैं ?—

उत्तर–शरीर को;

(९) प्रश्न—रश इन्द्री किसे कहते हैं ?—
उत्तर—जीह्वा को;

(१०) प्रश्न—घ्राण इन्द्री किसे कहते हैं ?
उत्तर—नासिका को; (नाक)

(११) प्रश्न—चक्षु इन्द्री किसे कहते हैं?—
उत्तर—नेत्रों को (आंखें)

(१२) प्रश्न—श्रुत इन्द्री किसे कहते हैं?—
उत्तर—श्रवण अर्थात् कानों को;

(१३ प्रश्न—स्थावर जीव किसे कहते हैं और कौन २ से हैं?—
उत्तर—स्थिर रहे अर्थात् अपने आप हलते चलते नहीं, वे पांच प्रकार के हैं।—पृथ्वी पाणी, वनस्पति, अग्नि, वायु;

(१४) प्रश्न—त्रस जीव किसे कहते हैं और कौन २ से हैं?—
उत्तर—त्रस जीव उन्हें कहते हैं जो अपने आप हलते चलते फिरतेहों, डरतेहों, भागतेहों, खाना ढूंढतेहों, यह च्यार प्रकार के हैं।—बेन्द्रीय, तेन्द्रीय, चौरेन्द्रीय, पंचेन्द्रीय;

(१५) प्रश्न—तीन विकेन्द्रीय जीव कौन २ से हैं और इन्हों के मन होता हैं वा नहीं ?—
उत्तर—तीन प्रकार के हैं; बेन्द्री, तेन्द्री, चौरेन्द्री, और इन्हों के मन नहीं होता है असन्नी हैं;

(१६) प्रश्न—पञ्चेन्द्रिय जीव कितनी प्रकार के हैं और सन्नी हैं या असन्नी हैं?—
उत्तर—पञ्चेन्द्रीय जीव च्यार प्रकार के हैं-नारकी, तिर्यञ्च, मनुष्य, देवता; इन्होंमें नारकी देवता तो सन्नीही होते हैं,

मनुष्य और तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रीय, यह सन्नी असन्नी दोनूं ही प्रकार के होते हैं, ।

(१७) प्रश्न—इन्द्रियां किसे कहते हैं—

उत्तर—इन्द्रियां उन्हें कहते हैं जीन्होंके द्वारा वस्तुका ज्ञान हो अर्थात् जानाजाय—जैसे!—

१ स्पर्श इन्द्रीय अर्थात् शरीर के स्पर्शने से हलका, भारी, ठंढा, उन्हा, (गर्म) रूखा, चिकना, खरदरा, सुहाला यह, आठ प्रकार स्पर्श का ज्ञान होता हैं—

२ रस इन्द्रीय अर्थात् रसना (जीभ) से खट्टा मीठा, कडुवा कषायला, तीखा (चरपरा) इनह पांचों रसों का ज्ञान होता हैं;

३ घ्राण इन्द्रीय से सुगन्ध, (खुशबू) दुर्गन्ध, (बदबू) का ज्ञान होता है!—

४ चक्षु इन्द्रीय से काला, पीला, नीला, लाल, श्वेत, (धोला) इन पांचों वर्णों का ज्ञान होता हैं!—

५ श्रुत इन्द्रीय अर्थात् कानों से जीवशब्द, अजीवशब्द, मिश्र शब्द इन्ह तीन प्रकारों के शब्दों का ज्ञान होता है; अर्थात् जाने जाते हैं!—

(१८) प्रश्न—जीव जीवे सो दया या नहीं मारे सो दया?—

उत्तर—जीव जीवे सो दया नहीं, मारे नहीं सो दया हैं;

(१९) प्रश्न जीव मरे सो हिन्सा या मारे सो हिन्सा?—

उत्तर— जीव मरे सो हिन्सा नहीं, मारे सो हिन्सा है;

(२०) प्रश्न जीवको जिवानें के लिए अन्य जीवों को मारे जिस कर्त्तव्य में धर्म है या पाप!—

उत्तर—पाप है क्योंकि परमेश्वर नैं शास्त्रों में फरमाया है सर्व प्राण भूत जीव सत्व को अर्थात् एकेन्द्रीय से पञ्चेन्द्री पर्यन्त किसी भी जीव को न मारनां, न मरानां, न भला जाननां;

(२१) प्रश्न—असंजती जीवों का जीनां, मरनां, और संसार समुद्र सैं तिरनां वंछनें में क्या होता है?—

उत्तर—असंजति का जीना वंछे सो राग, मरना वंछै सो द्वेष, और संसाररूपी समुद्र सैं तिरनां वंछे सो वीतराग परमेश्वर का प्ररूप्या धर्म;

(२२) प्रश्न—धर्म और पुण्य सुपात्रों को दान देनेसे ही होता है या कुपात्रों को देने से;

उत्तर—धर्म और पुण्य तो सुपात्रों को देनेसे होता है, कुपात्रों को देनेसें तो पाप ही है;

(२३) प्रश्न—सुपात्र कौन है और कुपात्र कौन है?—

उत्तर—जीवहिंसा न करै, झूंठ न बोलैं; चोरी न करै, मैथुन न सेवै, परिग्रह न राखै, सो सुपात्र है और इन्ह पांचों आश्रवों को सेवै सेवावे भला जानै सो कुपात्र पणाही है;

(२३) व्रत क्या और अव्रत क्या है तथा धर्म किसमें है? श्रावक को खाने खिलाने अनुमोदनें सें क्या होता है?—

उत्तर—अट्ठारै प्रकार के पाप सेना सेवाना और भला जाननें का त्याग करै सो व्रत है और त्याग नहीं सो अव्रत है; श्रावक का खाना खिलाना अनुमोदना इन्ह तीनो करणो में पाप है क्योंकि यह अव्रत का आश्रव द्वार है इससे पाप कर्महीं बंध है;

(२५) प्रश्न—संसारी उपकार क्या और धार्मिक उपकार क्या

उत्तर—तर्क अर्थी बिना संसारी जीवों को सुखसाता देनी दुखीः को अन्न पान वस्त्र द्रव्यादि देके सुखी करना यह तो संसारिक उपकार है और जीवों को मिथ्यात्वी से सम्यक्त्वी करना धर्मका मार्ग देके दुर्गति पड़ते हुए को मार्ग पथा तथ्य बता के संसार मयी समुद्र से तारना सो धार्मिक उपकार है;

॥ देव गुरु धर्म का संक्षेपलक्षण ॥

१ देव अरिहन्त, अर्थात् पाप कर्म रूपी बैरी को हणे वह आरिहन्त, सर्व दोष रहित, केवल ज्ञान केवल दर्शन सहित;

२ गुरु निर्ग्रंथ अर्थात् परिग्रह रहित, पंच महाव्रतधारी, शुद्ध आचारी, नवकल्प विहारी, कनक कामनी के त्यागी, निर्दोष आहार पानी, वस्त्रपात्र स्थानक आदि के भोगी अर्थात् साधुओं के लिए बनावे या मोल लेवै उसे नहीं भोगते;

३ धर्म केवली प्ररूपित (जैन श्वेताम्बरी तेरापंथी) अर्थात् राग द्वेष मयी शत्रु को जीते सो जिन और जिन कथित धर्म सो जैन धर्म श्वेत वस्त्र परिमाणोपेत रक्खें सो श्वेताम्बरी, और पंच सुमति, तीन गुप्ति, पंच महाव्रत, यह तेरह जो मुक्तिका पंथ (मारग) में चलै सो तेरापंथी;

धम्मो मङ्गल मुक्किठं, अहिन्सा संजमो तवो।
देवादितं नमंसंती, जस्स धम्म सया मणो ॥ १ ॥

॥ इति ॥

॥ अथ पानाकी चरचा ॥

१ जीव रूपीके अरूपी ? अरूपी, किणन्याय कालो पीलो नीलो रातो धोलो यह पांच वर्ण नहीं पावै इण न्याय ।

२ अजीव रूपीके अरूपी ? रूपी अरूपी दोनूँ हीं किणन्याय, धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय काल यह च्याऊँ तो अरूपी और पुद्गलास्तिकाय रूपी ।

३ पुन्य रूपीके अरूपी ? रूपी, ते किणन्याय पुन्य ते शुभ कर्म, कर्म ते पुद्गल, पुद्गल ते रूपी ही छै ।

४ पाप रूपीके अरूपी ? रूपी, ते किणन्याय पापते अशुभ कर्म, कर्मते पुद्गल, पुद्गल ते रूपी ।

५ आश्रव रूपीके अरूपी ? अरूपी, ते किणन्याय आश्रव जीवका परिणाम छै, परिणाम ते जीव छै, जीव ते अरूपी छै, पांच वर्ण पावै नहीं इण न्याय ।

६ संवर रूपीके अरूपी ? अरूपी, किणन्याय पांच वर्ण पावै नहीं ।

७ निर्जरा रूपीके अरूपी ? अरूपी छै, ते किण न्याय निर्जरा जीवका परिणाम छै पांच वर्ण पावै नहीं इण न्याय ।

८ बंध रूपीके अरूपी ! रूपी, किण न्याय बंध ते शुभ अशुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्‌गल छै पुद्‌गल ते रूपी छै ।

९ मोक्ष रूपीके अरूपी ? अरूपी छै, ते किण न्याय समस्त कर्मसे मूकावै ते मोक्ष अरूपी ते जीव सिद्ध थया ते मां पांच वर्ण पावै नहीं इण न्याय ।

॥ छठी बोल सावद्य निरवद्य की ॥

१ जीव सावद्यके निरवद्य ? दोनूँही छै, ते किण न्याय चोखा परिणामां निरवद्य, खोटा परिणामां सावद्य छै ।

२ अजीव सावद्य निरवद्य दोनूँ नहीं अजीव छै ।

३ पुन्य सावद्य निरवद्य दोनूँ नहीं अजीव छै ।

४ पाप सावद्य निरवद्य दोनूँ नहीं अजीव छै ।

५ आश्रव सावद्यके निरवद्य ! दोनूँही छै किण न्याय मिथ्यात्व आश्रव, अव्रत आश्रव,

प्रमाद आश्रव, कषाय आश्रव, यह च्यार तो एकान्त सावद्य छै, शुभ जोगां सें निरज्जरा होय तिण न्यांसरी निरवद्य छै अशुभ जोग सावद्य छै ।

६ संवर सावद्यके निरवद्य ! निरवद्य छै, ते किणन्याय कर्म रोकवारा परिणाम निरवद्य छै ।

७ निरज्जरा सावद्यके निरवद्य ! निरवद्य छै, ते किणन्याय कर्म तोडवारा परिणाम निरवद्य छै ।

८ बंध सावद्यके निरवद्य ! दोनूँ नहीं, ते किणन्याय अजीव छै इणन्याय ।

९ मोक्ष सावद्यके निरवद्य ? निरवद्य छै, सकल कर्म मुकाय सिद्ध भगवंत थया ते निरवद्य छै ।

॥ लड़ी तीजी आज्ञा मांहि बाहरकी ॥

१ जीव आज्ञा मांहि के बाहर ? दोनूँ छै किणन्याय, जीवका चोखा परिणाम आज्ञा मांहि छै, खोटा परिणाम आज्ञा बाहिर ।

२ अजीव आज्ञा मांहि के बाहिर ? दोनूँ नहीं, अजीव छै ।

३ पुन्य आज्ञा मांहि के बाहिर ? दोनूँ नहीं, अजीव छै इणन्याय ।

४ पाप आज्ञा मांहि के बाहर? दोनूँ नहीं अजीव छै।

५ आश्रव आज्ञा मांहि के बाहर? दोनूं मांहि छै, ते किणन्याय, आश्रव नां पांच भेद छै, तिणमें मिथ्यात्व अव्रत प्रमाद कषाय यह च्यार तो आज्ञा बाहिर छै, अनें जोगनां दोय भेद शुभ जोग तो आज्ञा मांहि छै, अशुभ जोग आज्ञा बाहिर छै।

६ संवर आज्ञा मांहि के बाहर? आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय, कर्म रोकवारा परिणाम आज्ञा मांहि छै।

७ निर्जरा आज्ञा मांहि के बाहर? आज्ञा मांहि छै, ते किणन्याय, कर्म तोडवारा परिणाम आज्ञा मांहि छै।

८ बंध आज्ञा मांहि के बाहर? दोनूं नहीं ते किणन्याय आज्ञा मांहि बाहर तो जीव हुवे, यह बंध तो अजीव छै, इणन्याय।

९ मोक्ष आज्ञा मांहि के बाहर? आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय, कर्म मुंकाय सिद्ध थया ते आज्ञा मैं छै।

॥ लड़ी चौथी जीव अजीव की ॥

१ जीव ते जीव छै के अजीव, जीव, ते कि॰ णान्याय सदाकाल जीव को जीव रहसे, अजीव कदे हुवे नहीं ।

२ अजीव ते जीव छै के अजीव छै, अजीव छै, अजीव को जीव किण ही कालमें हुवे नहीं ।

३ पुन्य जीव छै के अजीव छै, अजीव छै, ते किणान्याय, शुभ कर्म पुद्गल छै पुद्गल ते अजीव छैं ।

४ पाप जीव छै के अजीव छै ? अजीव छै किणान्याय, पाप ते अशुभ कर्म पुद्गल छै, पुद्गल ते अजीव छै ।

५ आश्रव जीव छै के अजीव छै ? अजीव छै, ते किणान्याय शुभ अशुभ कर्म ग्रह ते आश्रव छै, कर्म ग्रह ते जीव ही छै ।

६ संवर जीव के अजीव छै ? जीव छै, ते कि॰ णान्याय, कर्म रोकै ते जीव ही छै ।

७ निरजरा जीव के अजीव ? जीव छै, किणा॰ न्याय, कर्म तोडै ते जीव छै ।

८ बंध जीव के अजीव छै ? अजीव छै किण न्याय शुभ अशुभ कर्म को बंध अजीव छै ।

६ मोक्ष जीव के अजीव ? जीव छै, किणन्याय समस्त कर्म मुकावै ते मोक्ष जीव छै ।

॥ लडी पांचमी चोर के साहूकार ॥

१ जीव चोर के साहूकार ? दोनूं छै, किणन्याय चोखा परिणामां साहूकार छै, मांठा परिणामां चोर छै ।

२ अजीव चोर के साहूकार ? दोनूं नहीं, किण न्याय, चोर साहूकार तो जीव हुवै अह अजीव छै ।

३ पुन्य चोर के साहूकार ? दोनूं नहीं, अजीव छै ।

४ पाप चोर के साहूकार ? दोनूं नहीं, अजीव छै ।

५ आश्रव चोर के साहूकार ? दोनूं छै, किण न्याय, च्यार आश्रव तो चोर छे, अनें अशुभ जोग पण चोर छै, शुभ जोग साहूकार छै ।

६ संवर चोर के साहूकार ? साहूकार छै, किण न्याय, कर्म रोकवारा परिणाम साहूकार छै ।

७ निर्जरा चोर के साहूकार? साहूकार छै, किगा न्याय, कर्म तोडवारा परिणाम साहूकार छै।

८ बंध चोर के साहूकार; दोनू नहीं; अजीव छै,

९ मोक्ष चोर के साहूकार; साहूकार; किगान्याय कर्ममुकायकर सिद्ध थया ते साहूकार, छै।

॥लडी छट्ठी छांडवा जोगके आदरवा जोगकी ॥

१ जीव छांडवा जोगके आदरवा जोग? छांडवा जोग छै, किन्याय, पोतः जीवनू भाजन करे अनेरा जीवपर ममत्व भाव तें छांडवा जोग छै

२ अजीव छांडवा जोग के आदरवा जोग; छांडवा जोग छै, किगान्याय अजीव छै।

३ पुन्य छांडवा जोगके आदरवा जोग? छांडवा जोग छै, ते किगान्याय पुन्य ते शुभ कर्म पुद्गल छै, कर्म ते छांडवा ही जोग छै।

४ पाप छांडवा जोग के आदरवा जोग; छांडवा जोग छै, किगान्याय, पाप ते अशुभ कर्म छै जीवनें दुखदाई छै, ते छांडवा जोग छै।

५ आश्रव छांडवा जोग के आदरवा जोग; छांडवा जोग छै, किगान्याय आश्रव द्वारे जीवै

कर्म लागे, आश्रव कर्म आवानां वारणा छे, ते छांडवा जोग छे।

६ संवर छांडवा जोग के आदरवा जोग आदरवा जोग छे, किणन्याय, कर्म रोके ते संवर छे ते आदरवा जोग छे।

७ निर्जरा छांवडा जोग के आदरवा जोग ? आदरवा जोग छे, किणन्याय देशथी कर्म तोडे देशथी जीव उज्वल थाय ते निर्जरा छे, ते आदरवा जोग छे।

८ बंध छांडवा जोग के आदरवा जोग ? छांडवा जोग छे, ते किणन्याय शुभ अशुभ कर्म नों बंध छांडवा जोग ही छे।

९ मोक्ष छांडवा जोग के आदरवा जोग ? आदरवा जोग छे, ते किणन्याय, सकल कर्म खपावे, जीव निरमल थाय, सिद्धहुवे, इणन्याय आदरवा जोग छे।

॥ षटद्रव्यपे लडी सातमी रूपी अरूपी की ॥

१ धर्मास्ति काय रूपी के अरूपी ? अरूपी, किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

२ अधर्मास्ति काय रूपी के अरूपी ! अरूपी, किणन्याय, पांच वर्ण नहीं पावै इणन्याय।
३ आकाशास्तिकाय रूपी के अरूपी ? अरूपी, किणन्याय, पांच वर्ण नहीं पावै इणन्याय।
४ काल रूपी के अरूपी ? अरूपी, किणन्याय, पांच वर्ण नहीं पावै इणन्याय।
५ पुद्गल रूपी के अरूपी ? रूपी, किणन्याय, पांच वर्ण पावै इणन्याय।
६ जीव रूपी के अरूपी ? अरूपी, किणन्याय, पांच वर्ण नहीं पावै इणन्याय।

॥ छव द्रव्य पर लड़ी आठमी, सावद्य निर्वद्य की॥

१ धर्मास्ति काय सावद्य के निर्वद्य ? दोनूं नहीं, अजीव छै।
२ आकाशास्तिकाय सावद्य के निर्वद्य ? दोनूं नहीं, अजीव छै।
३ काल सावद्य के निर्वद्य ? दोनूं नहीं, अजीव छै।
४ पुद्गलास्तिकाय सावद्य के निर्वद्य ? दोनूं नहीं, अजीव छै।

६ जीवास्तिकाय सावद्य के निर्वद्य दोनूं है, खोटा परिणाम सावद्य है, चोखा परिणाम निर्वद्य है।

॥ छव द्रव्य पर लड़ी ६ नवमी ॥

१ धर्मास्तिकाय आज्ञा मांहि के बाहर? दोनूं नहीं, ते किण न्याय, आज्ञा मांहि बाहर तो जीव छै अनें यह अजीव है।

२ अधर्मास्ति काय आज्ञा मांहि के बाहर? दोनूं नहीं, किण न्याय; अजीव छै।

३ आकाशास्ति काय आज्ञा मांहि के बाहर? दोनूं नहीं, किण न्याय अजीव छै।

४ काल आज्ञा मांहि के बाहर? दोनूं नहीं, किण न्याय; अजीव छै।

५ पुद्गल आज्ञा मांहि के बाहर? दोनूं नहीं, किण न्याय, अजीव छै।

६ जीव आज्ञा मांहि के बाहिर? दोनूं छै, किण न्याय, निर्वद्य करणी आज्ञा मांहि छै, सावद्य करणी आज्ञा बाहर छै, इण न्याय।

॥ लड़ी १० दसमी ॥

१ धर्मास्ति काय चोर के साहूकार? दोनूं नहीं,

किणन्याय, चोर साहूकार तो जीव छै; यह धर्मास्ति काय अजीव छै, इणन्याय ।

२ अधर्मास्ति काय चोर के साहूकार ? दोनूं नहीं, अजीव छै ।

३ आकाशास्ति काय चोर के साहूकार ? दोनूं नहीं, अजीव छै ।

४ काल चोर के साहूकार ? दोनूं नहीं, अजीव छै ।

५ पुद्गल चोर के साहूकार ? दोनूं नहीं, अजीव छै ।

६ जीव चोर के साहूकार ? दोनूं छै, किणन्याय, मांठा परिणाम आंसरी चोर छै, चोखा परिणामां आंसरी साहूकार छै ।

॥ छव द्रव्य पर लड़ी इग्यारमी जीव अजीव की ॥

१ धर्मास्ति काय जीव के अजीव ? अजीव छै ।

२ अधर्मास्ति काय जीव के अजीव ? अजीव छै ।

३ आकाशास्ति काय जीव के अजीव ? अजीव छै ।

४ काल जीव के अजीव ? अजीव छै ।

५ पुद्गलास्ति काय जीव के अजीव ? अजीव छै ।

६ जीवास्ति काय जीव के अजीव ? जीव छै ।

॥ छव द्रव्य पर लडी बारमी एक अनेक की ॥

१ धर्मास्तिकाय एक छै के अनेक छै ? एक छै, कियान्याय द्रव्य थकी एक ही द्रव्य छै ।

२ अधर्मास्ति काय एक छै के अनेक छै ? एक छै, द्रव्यथकी एक ही द्रव्य छै ।

३ आकाशास्ति काय एक के अनेक ? एक छै, लोक अलोक प्रमाणे एक ही द्रव्य छै ।

४ काल एक छै के अनेक छै ? अनेक छै, द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य छै इणन्याय ।

५ पुद्गल एक छै के अनेक छै ? अनेक छै, द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य छै, इणन्याय ।

६ जीव एक छै के अनेक छै ? अनेक छै, अनन्ता छै इणन्याय ।

॥ लडी १३ तेरमी ॥

॥ छव में नव में की चरचा ॥

१ कर्मा को करता छव पदारथ में कोण नव तत्व में कोण ? उत्तर—छे में जीव, नव में जीव, आश्रव ।

२ कर्मां को उपार्जित छव में कोण नव में कोण? उत्तर-छव में जीव, नव में जीव, आश्रव।

३. कर्मां को लगावता छव में कोण नव में कोण? उ०—छै में जीव, नव में जीव, आश्रव।

४. कर्मां को रोकता छै में कोण नव में कोण? उ०—छै में जीव, नव में जीव, संवर।

५. कर्मां को तोड़ता छव में कोण नव में कोण? उ०—छै में जीव, नव में जीव, निर्जरा।

६ कर्मां को बांधता छव में कोण नव में कोण? छव में जीव, नव में जीव, आश्रव।

७ कर्मां को मुकावता छव में कोण नव में कोण? छव में जीव, नव में जीव, मोक्ष।

॥ लड़ी १४ चौदमी ॥

१ अट्ठारह पाप सेवे ते छव में कोण नव में कोण? छव में जीव, नव में जीव, आश्रव।

२ अट्ठारह पाप सेवा का त्याग करे ते छव में कोण नव में कोण, छव में जीव, नव में जीव, निर्जरा। ते शुभ जोग वर्त्यां ते आश्री अने त्याग छै में जीव, नव में जीव, संवर।

३ सामायक छवमें कौंण नवमें कौंण ? छवमें जीव, नवमें जीव, संवर ।

४ व्रत छवमें कौंण नवमें कौंण ? छवमें जीव, नवमें जीव, संवर ।

५ अव्रत छवमें कौंण नवमें कौंण ? छवमें जीव, नवमें जीव, आश्रव ।

६ अट्ठारह पाप को विहरमण छवमें कौंण नवमें कौंण ? छवमें जीव, नवमें जीव, संवर ।

७ पंच महाव्रत छवमें कौंण नवमें कौंण ? छवमें जीव, नवमें जीव, संवर ।

८ पांच चारित्र छवमें कौंण नवमें कौंण ? छवमें जीव, नवमें जीव, संवर ।

९ पांच सुमति छवमें कौंण नवमें कौंण ? छवमें जीव, नवमें जीव, निर्जरा ।

१० तीन गुप्ती छवमें कौंण नवमें कौंण ? छवमें जीव, नवमें जीव, संवर ।

११ बारह व्रत छवमें कौंण नवमें कौंण ? छवमें जीव, नवमें जीव, संवर ।

१२ धर्म छवमें कौंण नवमें कौंण ? छवमें जीव, नवमें जीव, संवर निर्जरा ।

१३ अधर्म छवमें कौंण नवमें कौंण ? छवमें जीव, नवमें जीव, आश्रव ।

१४ दया छवमें कौंण नवमें कौंण ? छवमें जीव, नवमें जीव; संवर निर्जरा ।

१५ हिंसा छवमें कौंण नवमें कौंण ? छवमें जीव; नवमें जीव, आश्रव ।

॥ लडी १५ पंदरमी ॥

१ जीव छवमें कौंण नवमें कौंण, छवमें जीव; नवमें जीव, आश्रव, संवर, निर्जरा; मोच्च ।

२ अजीव छवमें कौंण नवमें कौंण ? छवमें पांच; नवमें अजीव, पुन्य; पाप; बंध ।

३ पुन्य छवमें कौंण नवमें कौंण, छवमें पुद्गल; नवमें अजीव; पुन्य, बंध ।

४ पाप छवमें कौंण नवमें कौंण ? छवमें पुद्गल; नवमें अजीव, पाप, बंध ।

५ आश्रव छवमें कौंण नवमें कौंण छवमें जीव; नवमें जीव, आश्रव ।

६ संवर छवमें कौंण नवमें कौंण ? छवमें जीव; नवमें जीव, संवर ।

७ निर्जरा छवमें कौण नवमें कौण ? छवमें जीव, नवमें जीव, निर्जरा ।

८ बंध छवमें कौण नवमें कौण ? छवमें पुद्गल, नवमें अजीव, पुन्य, पाप, बंध ।

९ मोक्ष छवमें कौण नवमें कौण ? छवमें जीव, नवमें जीव, मोक्ष ।

॥ लड़ी १६ सोलमी ॥

१ धर्मास्ति छवमें कौण नवमें कौण ? छवमें धर्मास्ति, नवमें अजीव ।

२ अधर्मास्ति छवमें कौण नवमें कौण ? छवमें अधर्मास्ति, नवमें अजीव ।

३ आकाशास्ति छवमें कौण नवमें कौण ? छवमें आकाशास्ति, नवमें अजीव ।

४ काल छवमें कौण नवमें कौण ? छवमें काल, नवमें अजीव ।

५ पुद्गल छवमें कौण नवमें कौण ? छवमें पुद्गल, नवमें अजीव, पुन्य, पाप, बंध ।

६ जीव छवमें कौण नवमें कौण ? छवमें जीव, नवमें जीव, आश्रव, संवर, निर्जरा, मोक्ष ।

॥ लड़ी १७ सतरमी ।

१ लेखणी (कलम) पूठो, कागद को पानों, लकड़ी की पाटी, छवमें कोंण नवमें कोण ? छवमें पुद्गल, नवमें अजीव ।

२ पात्रो, रजोहरण, चादर चोलपट्टो आदि भंड उपगरण, छवमें कोण नवमें कोण ? छवमें पुद्गल, नवमें अजीव ।

३ धानको दाणो, छवमें कोण, नवमें कोण ? छवमें जीव, नवमें जीव ।

४ रूंख (वृक्ष) छवमें कोण, नवमें कोण ? छवमें जीव, नवमें जीव ।

५ तावड़ो, छाया, छवमें कोण, नवमें कोण ? छवमें पुद्गल नवमें अजीव ।

६ दिन रात छवमें कोण, नवमें कोण ? छवमें काल, नवमें अजीव ।

७ श्रीसिद्ध भगवान् छवमें कोण नवमें कोण ? छवमें जीव, नवमें जीव मोक्ष ।

॥ लड़ी १८ अट्ठारमी ॥

१ पुन्य और धर्म एक के दोय ? दोय, किण न्याय, पुन्य तो अजीव है, धर्म जीव है ।

२ पुन्य और धर्मास्ति एक के दोय ? दोय, किणन्याय, पुन्य तो रूपी छै, धर्मास्ति अरूपी

३ धर्म और धर्मास्ति एक के दोय ? दोय, किणन्याय धर्म तो जीव छै, धर्मास्ति अजीव छै।

४ अधर्म और अधर्मास्ति एक के दोय ? दोय किणन्याय, अधर्म तो जीव छै, अधर्मास्ति अजीव छै।

५ पुन्य अनें पुन्यवान एक के दोय ? दोय, किणन्याय, पुन्य तो अजीव छै, पुन्यवान जीव छै।

६ पाप अनें पापी एक के दोय ; दोय, किणन्याय, पाप तो अजीव छै, पापी जीव छै।

७ कर्म अनें कर्मा को करता एक के दोय ; दोय, किणन्याय, कर्म तो अजीव छै, कर्मांरो करता जीव छै।

॥ लड़ी १९ उन्नीसमी ॥

१ कर्म जीव के अजीव ! अजीव।

२ कर्म रूपी के अरूपी ! रूपी छै।

३ कर्म सावद्य के निरवद्य ; दोनूं नहीं अजीव छै।

४ कर्म चोरके साहूकार ! दोनूं नहीं, अजीव छै।
५ कर्म आज्ञा मांहि के बाहर; दोनूं नहीं, अजीव छै।
६ कर्म छांडवा जोग के आदरवा जोग ! छांडवा जोग छै।
७ आठ कर्मा में पुन्य कितना, पाप कितना ! ज्ञानावरणी, दरिशनावरणी, मोहनीय, अंतराय यह च्यार कर्म तो एकान्त पाप छै वेदनी, नाम, गोत्र, आयु यह च्यार कर्म पुन्य पाप दोनूं ही छै।

॥ लड़ी २० बीसमी ॥

१ धर्म जीव के अजीव ! जीव छै।
२ धर्म सावद्य के निरवद्य ; निरवद्य छै।
३ धर्म आज्ञा मांहि के बाहर ; श्री वीतराग देवकी आज्ञा मांहि छै।
४ धर्म चोर के साहूकार ; साहूकार छै।
५ धर्म रूपी के अरूपी ; अरूपी छै।
६ धर्म छांडवा जोग के आदरवा जोग ; आदरवा जोग छै।
७ धर्म पुन्य के पाप ! दोनूं नहीं, किशान्याय धर्म तो जीव छै पुन्य पाप अजीव छै।

॥ लड़ी २१ इकीसमी ॥

१ अधर्म जीव के अजीव ? जीव छै।
२ अधर्म सावद्य के निरवद्य ! सावद्य छै।
३ अधर्म चोर के साहूकार ? चोर छै।
४ अधर्म आज्ञा मांहि के बाहर ? बाहर छै।
५ अधर्म रूपी के अरूपी ? अरूपी छै।
६ अधर्म छांडवा जोग के आदरवा जोग छांडवा जोग छै।

॥ लड़ी २२ बाईसमी ॥

१ सामायक जीव के अजीव ? जीव छै।
२ सामायक सावद्य के निरवद्य ? निरवद्य छै।
३ सामायक चोर के साहूकार ? साहूकार छै।
४ सामायक आज्ञा मांहि के बाहर? आज्ञा मांहि छै।
५ सामायक रूपी के अरूपी ? अरूपी छै।
६ सामायक छांडवा जोग के आदरवा जोग। आदरवा जोग छै।
७ सामायक पुन्य के पाप ? दोनूं नहीं किण-न्याय, पुन्य पाप अजीव छै, सामायक जीव छै।

॥ लड़ी २३ तेवीसमी ॥

१ सावद्य जीव के अजीव ! जीव छै।
२ सावद्य सावद्य छै के निरवद्य ? सावद्य छै।
३ सावद्य आज्ञा मांहि के बाहर ? बाहर छै।
४ सावद्य चोर के साहूकार ! चोर छै।
५ सावद्य रूपी के अरूपी ? अरूपी छै।
६ सावद्य छांडवा जोग के आदरवा जोग छांडवा जोग छै।
७ सावद्य पुन्य, के पाप ? दोनूं नहीं, पुन्य पा तो अजीव छै, सावद्य जीव छै।

॥ लड़ी २४ चोबीसमी ॥

१ निरवद्य जीव के अजीव ? जीव छै।
२ निरवद्य सावद्य के निरवद्य ? निरवद्य छै।
३ निरवद्य चोर के साहूकार ? साहूकार छै।
४ निरवद्य आज्ञा मांहि के बाहर ? मांहि छै।
५ निरवद्य रूपी के अरूपी ? अरूपी छै।
६ निरवद्य छांडवा जोग के आदरवा जोग ? आदरवा जोग छै।
७ निरवद्य धर्म के अधर्म ? धर्म छै।

८ निरवद्य पुन्य के पाप ? पुन्य पाप दोनूं नहीं, क्रियान्याय, पुन्य पाप तो अजीव छै, निरवद्य जीव छै ।

॥ लड़ी २५ पच्चीसमी ॥

१ नव पदार्थ में जीव कितना पदार्थ, अनें अजीव कितना पदार्थ ? जीव, आश्रव, संवर निर्जरा, मोक्ष, यह पांच तो जीव छै, अनें अजीव, पुन्य, पाप, बंध, यह च्यार पदार्थ अजीव छै ।

२ नव पदार्थ में सावद्य कितना निरवद्य कितना ? जीव अनें आश्रव यह दोय तो सावद्य निरवद्य दोनूं छै, अजीव, पुन्य, पाप, बंध, यह सावद्य निरवद्य दोनूं नहीं । संवर, निर्जरा, मोक्ष, यह तीन पदार्थ निरवद्य छै ।

३ नव पदार्थ में आज्ञा मांहि कितना, आज्ञा बाहर कितना ? जीव, आश्रव, यह दोय तो आज्ञा मांहि पण छै, अनें आज्ञा बाहर पण छै । अजीव, पुन्य, पाप, बंध, यह च्यार आज्ञा मांहि बाहर दोनूं ही नहीं । संवर, निर्जरा मोक्ष, यह आज्ञा मांहि छै ।

४ नव पदार्थ में चोर कितनां, साहूकार कितनां ? जीव, आश्रव, तो चोर साहूकार दोनूंहीं छै। अजीव; पुन्य; पाप; बंध यह चोर साहूकार दोनूं नहीं: सम्बर; निर्जरा; मोक्ष, यह तीन साहूकार छै।

५ नव पदार्थ में छांडवा जोग कितनां, आदरैवा जोग कितना; जीव, अजीव, पुन्य, पाप; आश्रव, बंध, यह छव तो छांडवा जोग छै: संवर, निर्जरा; मोक्ष, यह तीन आदरवा जोग छै, अनें जाणवा जोग नवोंहीं पदार्थ छै।

६ नव पदार्थ में रूपी कितनां अरूपी कितनां ? जीव, आश्रव, संवर, निर्जरा; मोक्ष, यह पांच तो अरूपी छै: अजीव रूपी अरूपी दोनूं छै; पुन्य पाप बन्ध रूपी छै।

७ नव पदार्थ में एक कितना, अनेक कितना ? उ० अजीव टाली आठ पदार्थ तो अनेक छै, अनें अजीव एक अनेक दोनूं छै, किण न्याय, धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति यह तीनूं द्रव्य थकी एक एक ही द्रव्य छै।

॥ लड़ी २६ छत्तीसमी ॥

छव द्रव्य में जीव कितना, अजीव कितना ?
एक जीव, पांच अजीव छै।

२ छव द्रव्य में रूपी कितना, अरूपी कितना ?
जीव, धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति
काल, यह पांचतो अरूपी छै, पुद्‌गल रूपी छै।

३ छव द्रव्य में आज्ञा मांहि कितना, आज्ञा
बाहर कितना ? जीवतो आज्ञा मांहि बाहर
दोनूं छै, बाकी पांच आज्ञा मांहि बाहर
दोनूं नहीं।

४ छव द्रव्य में चोर कितना, साहूकार कितना ?
जीवतो चोर साहूकार दोनूं छै, बाकी पांच
द्रव्य चोर साहूकार दोनूं नहीं, अजीव छै।

५ छव द्रव्य में सावद्य कितना, निरवद्य कितना ?
एक जीव द्रव्यतो सावद्य निरवद्य दोनूं छै,
बाकी पांच द्रव्य सावद्य निरवद्य दोनूं नहीं।

६ छव द्रव्य में एक कितना, अनेक कितना ?
धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति, यह तीनों
तो एकही द्रव्य छै, काल, जीव, पुद्‌गलास्ति
तीन अनेक छै, इणांका अनन्ता द्रव्य छै।

७ छव द्रव्य में सप्रदेसी कितना, अप्रदेसी कितना? एक काल तो अप्रदेसी छै, बाकी पांच सप्रदेसी छै।

॥ लड़ी २७ सत्ताईसमी ॥

१ पुन्य धर्म के अधर्म? दोनूं नहीं, किण न्याय, धर्म अधर्म जीव छै, पुन्य अजीव छै।

२ पाप धर्म के अधर्म? दोनूं नहीं, किण न्याय, धर्म अधर्म तो जीव छै, पाप अजीव छै।

३ बंध धर्म के अधर्म? दोनूं नहीं, किण न्याय धर्म अधर्म तो जीव छै, बंध अजीव छै।

४ कर्म अनें धर्म एक के दोय? दोय छै, किण न्याय, कर्म तो अजीव छै, धर्म जीव छै।

५ पाप अनें धर्म एक के दोय? दोय छै किण न्याय, पाप तो अजीव छै, धर्म जीव छै।

६ अधर्म अनें अधर्मास्ति एक के दोय, दोय, किण न्याय, अधर्म तो जीव छै, अधर्मास्ति अजीव छै।

७ धर्म अनें धर्मास्ति एक के दोय? दोय, किण न्याय, धर्म तो जीव छै, धर्मास्ति अजीव छै।

८ धर्म अनें अधर्मास्ति एक के दोय ? दोय, किणन्याय, धर्म तो जीव, अधर्मास्ति अजीव छै।

९ अधर्म अनें धर्मास्ति एक के दोय, दोय, किणन्याय, अधर्म तो जीव छै, धर्मास्ति अजीव छै।

१० धर्मास्ति अनें अधर्मास्ति एक के दोय ? दोय, किणन्याय, धर्मास्ति को तो चालवा नो सहाय छै, अनें अधर्मास्तिनो थिर रहवानों सहाय छै।

११ धर्म अने धर्मी एक के दोय ? एक छै, किणन्याय, धर्म जीवका चोखा परिणाम छै।

१२ अधर्म अनें अधर्मी एक के दोय ? एक छै, किणन्याय, अधर्म जीव का खोटा परिणाम छै।

* प्रश्नोत्तर *

१ थांरी गति कांई ? मनुष्य गति
२ थांरी जाति कांई ? पञ्चेन्द्री ।
३ थांरी काय कांई ? त्रस काय ।
४ इन्द्रीयां कितनी पावै ? ५ पांच ।
५ पर्याय कितना पावै ? छव ।
६ प्राण कितना पावै ? १० दस पावै ।
७ शरीर कितना पावै ? ३ तीन—औदारिक, तेजस, कार्मण ।
८ जोग कितना पावै ? ६ नव पावै, च्यार मन का, च्यार वचन का, एक काया को, औदारिक ।
६ तुमें उपयोग कितना पावै ? ४ च्यार पावै मतिज्ञान १ श्रुतिज्ञान २ चक्षुदर्शन ३ अचक्षु दर्शन ४ ।
१० थांरै कर्म कितना ? ८ आठ ।
११ गुणस्थान कितो पावै ? व्यवहारथी पांचसूं, साधू नें पूछे तो छट्ठो ।
१२ विषय कितना पावै ? २३ तेवीस ।

१३ मिथ्यात्वनां दश बोल पावै के नहीं ? व्यवहारथी नहीं पावै ।

१४ जीवका चौदा भेदामें से किसो भेद पावै ? १ एक चोदमूं पर्याप्तो सन्नी पञ्चेन्द्री को पावै ।

१५ आतमां कितनी पावै ? श्रावक में तो ७ सात पावै, अनें साधू में आठ पावै ।

१६ दण्डक किसो पावै ? एक इकवीसमुं ।

१७ लेश्या कितनी पावै ? ६ छव ।

१८ दृष्टी कितनी पावै ? व्यवहारथी एक सम्यक् दृष्टी पावै ।

१९ ध्यान कितना पावै ? ३ तीन, सुक्ल ध्यान टाल के ।

२० छव द्रव्य में किसो द्रव्य पावै ? १ एक जीव द्रव्य ।

२१ राशि किसी पावै ? एक जीव राशि ।

२२ श्रावक का बारा व्रत श्रावक में पावै ।

२३ साधूका पञ्च महा व्रत पावै के नहीं ? साधू में पावै, श्रावक में पावै नहीं ।

१४ पांच चारित्र श्रावक में पावै के नहीं ? नहीं पावै, एक देश चारित्र पावै ।

१ एकेन्द्री की गति कांई—तिर्यञ्च गति ।

२ एकेन्द्री की जाति कांई—एकेन्द्री ।

३ एकेन्द्री में काया किसी पावै—५ पांच थावर की ।

४ एकेन्द्री में इन्द्रीयां कितनी पावै—एक स्पर्श इन्द्री ।

५ एकेन्द्री में पर्याय कितनी पावै—४ च्यार मन भाषा यह दोय टली ।

६ एकेन्द्री में प्राण कितना पावै—४ च्यार पावै—स्पर्श इन्द्रीय बलप्राण १ कायबल-प्राण २ स्वासोस्वासबलप्राण ३ आऊषो-बलप्राण ४

७ मुरड़ माटी मुलतानी फत्तर सोनूं चांदी रत-नादिक पृथ्वीकाय का प्रश्नोत्तर ।

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय किसी	पृथ्वीकाय
इन्द्रियां कितनी पावै	एक स्पर्श इन्द्री

पर्याय कितनी पावै	४ च्यार, मन भाषा टलै
प्राण कितना	४ च्यार पावै—स्पर्श इन्द्रीबल प्राण १ काय बल २ श्वासोश्वास बल ३ आयुषो बलप्राण ४

८ पाणी ओसादि अपकायका प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
गति काई	तिर्यंच गति
जाति काई	एकेन्द्री
कायकिसी	अपकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार मन भाषाटली
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

९ अग्नि तेउकायना प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
गति काई	तिर्यंच गति
जाति काई	एकेन्द्री
काय किसी	तेऊकाय
इन्द्रीयां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, मन भाषाटली
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

१० वायु कायका प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
गति काई	त्रियँच गति

जाति काई	एकेन्द्री
काय काई	वायु काय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार ऊपर प्रमाणे
प्राण कितना	४ च्यार ऊपर प्रमाणे

११ वृक्ष, लता, पांन, फूल, फल, लीलण, फूलण आदि वनस्पतिकायनां प्रश्नोत्तर ।

प्रश्न	उत्तर
गति काई	तिर्यंच गति
जाति काई	एकेन्द्री
काय काई	वनस्पतिकाय
इन्द्रियां कितनीं	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	च्यार ऊपर प्रमाणे
प्राण कितना	च्यार ऊपर प्रमाणे

१२ लट गिडोला आदि बेन्द्री का प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
गति काई	तिर्यंच गति
जाति काई	बेन्द्री
काय काई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	२ दोय—स्पर्श, रस, इन्द्री
पर्याय कितनी	५ पांच—मन पर्याय टली
प्राण कितना	६ छव—रस इन्द्री बल प्राण १ स्पर्श इन्द्री बल प्राण २ काय बल प्राण ३

सासोश्वास बल प्राण	४
आउषो बल प्राण	५
भाषा बल प्राण	६

१३ कीड़ी मकोड़ा आदि तेन्द्री का ।

प्रश्न	उत्तर
गति काई	तिर्यच गति
जाति काई	तेन्द्री
काय काई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	३ तीन, स्पर्श १ रस २ घ्राण ३
पर्याय कितनी	५ पांच, मन टलीं
प्राण कितना	७ सात, छै तो ऊपर प्रमाणे घ्राण इन्द्री बल प्राण वध्यौ

१४ मांखी मच्छर टीडी पतंगियां बिच्छु आदि चौ इन्द्री का ।

प्रश्न	उत्तर
गति काई	तिर्यच गति
जाति काई	चौ इन्द्री
काय काई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	४ च्यार, श्रुत इन्द्री टली
पर्याय कितनी	५ पांच, मन टल्यो
प्राण कितना	८ आठ, सात तो ऊपर प्रमाणे एक चक्षु इन्द्री बल प्राण और वध्यो

१५ पंचेन्द्रीकी

प्रश्न	उत्तर
गति कितनी पावै	४ च्यारूं ही पावै
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	पांचोंही
पर्याय कितनी	६ छवों ही पावै सन्नी में, और असन्नी में ५ पांच, मन टल्यो,
प्राण कितना पावे	सन्नी में तो १० दसूं ही पावैं, असन्नी में ९ पावै मन टल्यो

१६ नारकी की पूछा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	नरक गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	५ पांचों ही
पर्याय कितनी	५ पांच, मन भाषा भेली लेखवी
प्राण कितना	१० दसों ही

१७ देवताकी पूछा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	देव गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय

इन्द्रियाँ कितनी	५ पाँचोंही
पर्याय कितनी	५ मन भाषा वेली करनी
प्राण कितना	१० दसों ही

१८ मनुष्य की पूछा असन्नी की

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	मनुष्य गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रश काय
इन्द्रियाँ कितनी	५ पांच
पर्याय कितनी	३॥ स्वास लेवे तो उस्वास नहीं
प्राण कितना	७॥ स्वास लेवे तो उस्वास नहीं

१९ सन्नी मनुष्य की पूछा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	मनुष्य गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रश काय
इन्द्रियाँ कितनी	५ पांच
पर्याय कितना	६ छव
प्राण कितना	१० दश

१ तुमे सन्नी के असन्नी ? सन्नी, किण न्याय मन छै।
२ तुमे सुक्षम के बादर ? बादर किण० दीखूं छूं।
३ तुमे त्रश के स्थावर ? त्रश, किण० हालूं चालूं छूं।

४ एकेन्द्री सन्नी के असन्नी ? असन्नी, किया० मन नहीं।

५ एकेन्द्री सुक्ष्म के बादर ? दोनूं ही छै, किया० एकेन्द्री दोय प्रकार की छै, दीखे छै ते बादर छै, नहीं दीखे ते सुक्ष्म छै।

६ एकेन्द्री त्रश के स्थावर ? स्थावर छै, हाले चाले नहीं।

७ एकेन्द्री में इन्द्रियां कितनी ? एक स्पर्शइन्द्री (शरीर)

८ पृथ्वीकाय अप्पकाय तेउकाय वायुकाय वनस्पतिकाय।

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छै मन नहीं
सुक्ष्म के बादर	दोनूं ही प्रकार की छै
त्रश के स्थावर	स्थावर छै

९ बेन्द्री तेन्द्री चौ इन्द्री की पृछा।

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छै मन नहीं
सुक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रश के स्थावर	त्रश छै

१० तिर्यंच पंचेन्द्री की पृच्छा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	दोनूं ही छै
सुक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

११ असन्नी मनुष्य चउदै स्थानक में नीपजै ।

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छै
सुक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१२ सन्नी मनुष्य ते गर्भ में उपजै जिणारी पृच्छा ।

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै
सुक्ष्म के बादर	बादर छै

१३ नारकी का नेरिया की पृच्छा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
सुक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१४ देवता की पृच्छा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै

सुक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१५ चौपद हाथी घोड़ा बहल पंखी आदि पसू ज्यानवर की पृछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	दोनूं ही प्रकार का छै समूर्छिम के मन नहीं, गर्भज के मन छै
सुक्ष्म के बादर	बादर छै, नेत्र सें देखबा में आवै छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै—हालै चालै छै

१ एकेन्द्री में बेद कितनां पावै—एक नपुंसक बेद पावै

२ पृथ्वी पांणी बनस्पति अग्नि बायरो यां पांचां में बेद कितनां पावे—१ एक नपुंसक ही छै

३ बेन्द्री तेन्द्री चौइन्द्री में बेद कितनां पावै—एक नपुंसक बेद ही पावे छै

४ पंचेन्द्री में बेद कितनां पावै—सन्नी में तो तीनों ही बेद पावे छै, असन्नी में एक नपुंसक बेदही छै

५ मनुष्य में बेद कितनां पावै—असन्नी मनुष्य चौदै थानकां में उपजै जीवां में तो बेद एक नपुंसकही पावे छै, सन्नी मनुष्य गर्भ में उपजै जियां में बेद तीनों ही पावे छै

६ नारकी में वेद कितना पावै—एक नपुंसक वेदही पावैछे।

७ जलचर थलचर उपर भुजपुर खेचर यां पांच प्रकार का तिर्यंचा में वेद कितना पावै—छः मोछम उपजै ते असन्नीछे जिणामें तो वेद नपुंसकही पावैछे, अनें गर्भमें उपजे ते सन्नीछे जिणामें वेद तीनोंही पावैछे।

८ देवतामें वेद कितना पावै—उत्तर भवनपती, वाणव्यन्तर, जोतिषी, पहला दूजा देवलोक तांई तो वेद दोय स्त्री १ पुरुष २ पावैछे, और तीजा देवलोक सें स्वार्थ सिद्ध तांई वेद एक पुरुषहीछै।

६ चौवीस दण्डक का जीवांके कर्म कितना—उगणीस दण्डकका जीवांमें तो कर्म आठही पावै छै, अने मनुष्य में सात आठ तथा च्यार पावै छै।

१ धर्म व्रत में के अव्रत में—व्रत में।

२ धर्म आज्ञा मांहि के बाहर—श्री वीतरागदेव की आज्ञा मांहि छै।

३ धर्म हिन्सा में के दया में—दया में।

४ धर्म मोल मिलै के नहीं मिलै—नहीं मिलै, धर्म तो अमूल्य छै ।

५ देव मोल मिलै के नहीं मिलै—नहीं मिलै अमूल्य छै ।

६ गुरु मोल लीयां मिलै के नहीं मिलै—नहीं मिलै; अमूल्य छै ।

७ साधूजी तपस्या करै ते व्रत में के अव्रत में—उ. व्रत पुष्टको कारण छै: अधिक निर्जरा धर्म छै ।

८ साधूजी पारणो करै ते व्रत में के अव्रत में—अव्रत में नहीं, किणन्याय साधूके कोई प्रकार अव्रत रही नहीं सर्व सावद्य जोगका त्याग छै । तिणसुं निर्जरा थाय छै तथा व्रत पुस्टको कारण छै

९ श्रावक उपवास आदि तप करै ते व्रत में के अव्रत में—व्रत में ।

१० श्रावक पारणो करै ते व्रत में के अव्रत में—अव्रत में; किणन्याय श्रावक को खाणो पीणो पहरणो यह सर्व अव्रत में छै; श्रीउववाई तथा सुयगडांग सूत्र में विस्तारकर लिख्या छै ।

११ साधूजी ने सूजतो निर्दोष आहार पाणी दियां कांई होवै व्रत में के अव्रत में—अशुभ कर्म क्षयथाय तथा पुन्य बंधै छै, १२ मुं व्रत छै ।

१२ साधूजी नें असूजतो दोषसहित आहार पाणी दियाँ कांई होवे तथा व्रत में के अव्रत में—श्रीभगवती सूत्र में कह्यो छै, तथा श्रीठाणांग सूत्रके तीजे ठाणेमें कह्या छै अल्प आयुबंधे अकल्याणकारी कर्म बंधे, तथा असूजतो दीधो ते व्रत में नहीं । पाप कर्म बंधे छै ।

१३ अरिहंत देव देवता के मनुष्य—मनुष्य छै ।

१४ साधू देवता के मनुष्य—मनुष्य छै ।

१५ देवता साधूनीं वंछा करै के नहीं करै—करै साधू तो सबका पूजनीक छै ।

१६ साधू देवता की वंछा करे के नहीं करे—नहीं करै ।

१७ सिद्ध भगवान देवता के मनुष्य—दोनूं नहीं ।

१८ सिद्ध भगवान सुक्ष्म के बादर—दोनूं नहीं ।

१९ सिद्ध भगवान त्रश के स्थावर—दोनूं नहीं ।

२० सिद्ध भगवान सन्नी के असन्नी—दोनूं नहीं ।

२१ सिद्ध भगवान पर्याप्ता के अपर्याप्ता—दोनूं नहीं

॥ इति दानाकी चरचा ॥

१ असंयति अव्रती ने दीयां कांई होवे—श्री भगवति सूत्र के आठ में शतक छठे उद्देशे

कह्यो असंयति अव्रति नें सूजतो असूजतो सचित अचित च्यार प्रकारको आहार दियां एकान्ति पाप होय निर्जरा नहीं होय ।

२ असंजति अव्रती जीवां को जीवणो वांछणो के मरणो वंछणो—असञ्जति को जीवणो वांछणो नहीं, मरणो वांछणो नहीं, संसार समुद्र सें तिरणो वांछणो तें श्रीवीतरागदेव को धर्म छै ।

३ कसाई जीवां नें मार तिणवेल्यां साधु कसाई नें उपदेश देवे के नहीं देवै—अवसर देखे तो उपदेश देवै हिंसाका खोटाफल कहे ।

प्रश्न—जीवां को जीवणो वांछकर उपदेश देवै के कसाई नें तारवा निमित्त उपदेश देवै—

उत्तर—कसाई नें तारवा निमित्त उपदेश देवै तें वीतरागको धर्म छै ।

४ कोई वाडामें पशु ज्यानवर दुखिया छै अनें साधु जिणरस्ते जाय रह्या छै तो जीवांकी अनुकम्पा आणी छोडै के नहीं छोडै—नहीं छोडे, किणन्याय, उ० श्रीनिसीथ सूत्र १२ वारमें उद्देशामें कह्यो छै अनुकम्पा करि त्रस

जीव मांधे बंधावै अनुमोदै तो चौमासी प्राय-श्चित आवै; तथा छोडै छुडावै छोड़तां नैं भलो जाणैं तो चौमासी प्रायश्चित्त आवै, साधु तो संसारी जीवांकी सार संभार करै नहीं साधु तो संसारी कर्तव्य त्याग दिया ।

॥ अथ तेरा द्वार ॥

प्रथम मूल द्वार ।

१ मूल १ दृष्टान्त २ कुंण ३ आत्मा ४ जीव ५ अरूपी ६ निरवद्य ७ भाव ८ द्रव्य गुण पर्याय ९ द्रव्यादिक १० आज्ञा ११ ज्ञिनय १२ तलाव १३ यह तेराद्वार जांणवा; प्रथम मूलद्वार कहै छै—जीव ते चेतना लक्षण, अजीवते अचेतना लक्षण, पुन्य ते शुभ कर्म, पापते अशुभ कर्म, कर्म ग्रहते आश्रव, कर्म रोकै ते संवर, देशथकी कर्म तोडी देशथी जीव उज्वल थाय ते निर्जरा, जीव संघाते शुभाशुभ कर्म बंध्या ते बंध, समस्त कर्मों से मूंकावै ते मोक्ष ।

॥ इति प्रथम द्वार सम्पूर्ण ॥

॥ दूसरो दृष्टान्त द्वार ॥

जीव चेतन का २ दोय भेद—

एक सिद्ध, दूजो संसारी, सिद्ध कर्मां रहित छै: संसारी कर्मां सहित छै तिणारा अनेक भेद छै—सूक्ष्म अनें बादर, त्रश नें स्थावर, सन्नी अनें असन्नी, तीन वेद, च्यार गति, पांच जाति, छव काय, चौदह भेद जीवनां चौबीस दंडक, इत्यादिक अनेक भेद जाणवा ते चेतन गुण ओलखवाने सोनारो दृष्टान्त कहै छै, जिम सोनारा गहणां भांजी भांजी ने और और आकारे घडावै तो आकार नों बिनासथाय पण सोनारो बिनाश नहीं, ज्युं कर्मां का उदय थी जीव की पर्याय पलटै पण मूल चेतन गुणको बिनाश नहीं।

अजीव अचेतन तिणारा पांच भेद—

धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति, काल, पुद्गलास्ति, तिणमें च्यारांकी पर्याय पलटै नहीं, एक पुद्गलास्ति की पर्याय पलटै ते ओलखवानें सोनारो दृष्टान्त कहै छै—

जिम कोई सोनारो गहणो भांजी भांजी और और आकारे घडावे तो आकारनो विनाश होय सोनारो विनाश नहीं, ज्यूं पुद्गल की पर्याय पलटै पण पुद्गल गुण को विनाश नहीं ।

पुन्यते शुभ कर्म, पापते अशुभ कर्म, ते पुन्य पाप ओलखवाने पथ्य अपथ्य आहार नो दृष्टान्त कहे छे, कदेक जीवके पथ्य आहार घटै और अपथ्य आहार बधै, तो जीव के निरोगपणो घटै अनें सरोगपणो बधै, कदे जीवरै अपथ्य आहार घटै पथ्य बधै तब जीवरै सरोगपणो घटै अनें निरोगपणों बधै, पथ्य अपथ्य दोनूं घटजाय तो प्राणी मर्ण पामें, ज्यों जीवके पुन्य घटै अरु पाप बधें तो सुख घटै अनें दुख बधै, कदे जीवरै पाप घटै अरु पुन्य बधें तो दुख घटै अनें सुख बधै, पुन्य पाप दोनूं खय होय तो जीव मोक्ष पामें, कर्म ग्रहते आश्रव ते ओलखवानैं तीन दृष्टान्त पांच कहणा कहै छै ।

प्रथम कहणा (कथन)

१ तलावरे नालो ज्यूं जीवरे आश्रव ।
२ हवेली के बारणों ज्यों जीवरे आश्रव ।
३ नावा के छिद्र ज्यों जीवरे आश्रव ।

२ दूजो कहणा (कथन)

१ तलाव अनें नालो एक ज्यूं जीव आश्रव एक ।
२ हवेली बारणों एक, ज्यूं जीव आश्रव एक ।
३ नाव अनें छिद्र एक, ज्यूं जीव आश्रव एक ।

३ कर्म आवे ते आश्रव ते ओलखवानें तीजो कहणा कहे छै ।

१ पाणी आवे ते नालो ज्यों कर्म आवे ते आश्रव
२ मनुष्य आवे ते बारणों ज्यों कर्म आवे ते आश्रव
३ पाणी आवे ते छिद्र ज्यों कर्म आवे ते आश्रव ।

४ इम कह्यां थकां कोई कर्म अनें आश्रव एक श्रधे तेहनें दोय श्रधावानें चौथो कहणा कहे छे

१ पाणी अनें नालो दोय ज्यों कर्म अनें आश्रव दोय ।

२ मनुष्य अनैं बारणों दोय ज्यों कर्म अनैं आश्रव दोय ।

३ पांणी छिद्र दोय ज्यों कर्म अने आश्रव दोय ।

५ विशेष ओलखवानैं पांचमुं कह्या कहै छै ।

१ पांणी आवै ते नालो पण पांणी नालो नहीं, ज्यों कर्म आवै ते आश्रव पण कर्म आश्रव नहीं ।

२ मनुष्य आवै ते बारणों पण मनुष्य बारणों नहीं, ज्यों कर्म आवै ते आश्रव पण कर्म आश्रव नहीं ।

३ पांणी आवै ते छिद्र पण पांणी छिद्र नहीं, ज्यों कर्म आवै ते आश्रव पण कर्म आश्रव नहीं ।

६ कर्म रोकै ते संवर ते ओलखवानैं तीन दृष्टांत कहै छै ।

१ तलाव रो नालो रूंधै ज्यों जीवरे आश्रव रूंधै ते संवर ।

२ हवेलीरो बारणों रूंधै ज्यों जीवरे आश्रव रूंधै ते संवर ।

३ नावरा छिद्र रूंधै ज्यूं जीवरे आश्रव रूंधै
ते संवर ।

देश थकी कर्म तोड़ी जीव देशथी उज्वल थाय
ते निर्जरा ओलखवानैं तीन दृष्टान्त कहै छै ।

१ तलावरो पांणी मोरियादिक करी नें काढ़ै
ज्यों जीव भला भाव प्रवर्तावी नें कर्म
रूपियो पांणी काढै ते निर्जरा ।

३ हवेलीरो कचरो पूंजी पूंजी नें काढै ज्यों
भला भाव प्रवर्तावी नैं जीव कर्म रूपियो
कचरो काढे ते निर्जरा ।

२ नावांको पांणी उलेचा २ नें काढै ज्यूं जीव
भला भाव प्रवर्तावी नें कर्म रूपीयो पांणी
काढै ते निर्ज़रा ।

जीव संघातें कर्म बंधिया हुयाते बंध ते ओलखवानें
छव बोल कहै छै ।

१ पहलै बोलै कहो स्वामीजी जीव अनें कर्मनी
आदि छै यह बात मिलै अथवा न मिलै गुरू
बोल्या न मिलै (प्रश्न) क्युं न मिलै गुरू
बोल्या यह ऊपनों नहीं ।

२ दुजै बोलै कहो स्वामीजी पहली जीव और

पाछै कर्म यह बात मिलै। गुरु बोल्या नहीं मिलै। प्र०—क्यों न मिलै, उ—कर्म बिना जीव रह्यो किहां मोक्षगयो पाछोआवै नहीं यों न मिलैं।

३ तीजे बोले कहो स्वामीजी पहली कर्म अनैं पछै जीव यह मिलैं गुरु कहै नहीं मिलै। प्रश्न—क्यों न मिलैं। गुरु कहै कर्म कीयांबीना हुवै नहीं तो जीव बिना कर्म कुण कीया।

४ चौथे बोलै कहो स्वामीजी जीव कर्म एक साथ ऊपना यह मिलैं गुरु कहै न मिलै। प्र०—किणन्याय? उ०—जीव कर्म, यां दोयांनै उपजावणवालो कुण।

पांच मे बोलैं जीव कर्म रहित छै यह बात मिलै गुरु कहै न मिलै। प्र०—किणन्याय? उ०—यहजीव कर्म रहित होवे तो करणी करवारी खप (चुप) कुणकर मुक्ति गयोपाछो आवै नहीं।

छैटे बोलै कहो स्वामीजी जीव अनें कर्म नों मिलाप किणविध थाय छे, गुरु कहै अपर्छनो

थापूर्ने पणौ अनादि कालसे जीव कर्मरो मिलाप चल्यो जायछै ।

तिण बंधरा ४ च्यार भेद छै.

प्रकृति बंध कर्म स्वभावरे न्याय १ स्थिति बंध काल व्यवहाररे न्याय २ अनुभाग बंध रस विपाकरे न्याय ३ प्रदेश बंध जीव कर्म लोली भूतरे न्याय ४ ते ओलखवाने तीन दृष्टांत कहे छै ।

१ तेल अने तिल लोली भूत ज्यों जीव कर्म लोली भूत ।

२ घृत दूध लोली भूत ज्यों जीव कर्म लोली भूत ।

३ धातू मांठी लोली भूत ज्यों जीव कर्म लोली भूत ।

समस्त कर्मासे मूकावे ते मोक्ष ते ओलखवाने तीन दृष्टान्त कहे छै ।

१ घांणीयादिकनूं उपाय करी तेल खल रहित होवे ज्यों तप संजमादि करी जीव कर्म रहित होवे ते मोक्ष ।

२ जैरणादिक को उपायकरी घृत छाछ रहित होवे ज्यों तप संजमकरी जीव कर्म रहित होवै ते मोक्ष ।

३ अग्नियादिकनूं उपायकरी धातू मांटी रहित होवै ज्यों तप संजमकरी जीव कर्म रहित होवै ते मोक्ष ।

॥ तीजो कुण द्वार कहे छै ॥

जीव चेतन छवद्रव्यामें कुंण नव पदार्थां में कुंण ? छवद्रव्यां में तो एक जीव, नव पदार्थां में पांच । जीव १, आश्रव २, संवर ३, निर्जरा ४, मोक्ष ५,

अजीव अचेतन छवमें कौण नवमें कौण— छवमें ५, नवमें ४, छवद्रव्यां में तो धर्मास्ति १, अधर्मास्ति २, आकाशास्ति ३, काल ४, पुद्गलास्ति ५, नव पदार्थों में अजीव १, पुन्य २, पाप ३, बंध ४,

पुन्यते शुभ कर्म छवमें कौण नवमें कौण— छवमें एक पुद्गल; नवमें तीन अजीव १, पुन्य २ बन्ध ३ ।

पापते अशुभ कर्म छवमें कौण, नवमें कौण- छवमें एक पुद्गल; नवमें तीन अजीव १, पाप२ बन्ध ३ ।

कर्म ग्रह ते आश्रव छवमें कौण नवमें कौण छवमें जीव; नवमें जीव १, आश्रव २ ।

कर्मरोके ते संवर छवमें कौण नवमें कौण- छवमें जीव, नवमें जीव सम्वर ।

देशथी कर्म तोड़ी देशथी जीव उज्वल थाय ते निर्जरा छवमें कौन नवमें कौण—छवमें जीव नव में जीव १, निर्जरा २;

बंध छव में कौण नवमें कौण—छव में पुद्गल; नवमें अजीव १, पाप २, पुन्य ३, बंध ४;

मोक्ष छवमें कौण नवमें कौण—छवमें जीव, नवमें जीव, मोक्ष;

चाले ते कौण चलवानों सहाय किणरो— चाले ते जीव पुद्गल, अने सहाय धर्मास्तिकायनों।

थिर रहे कौण थिर रहवानों सहाय किणरो— थिर रहे जीव पुद्गल, सहाय अधर्मास्तिकाय नों,

वस्तु ते कौण भाजन किणरो—वस्तु तो जीव पुद्गल, भाजन आकासास्तिकायनों;

वर्तें ते कोंण वर्तें किण ऊपर—वर्तें तो काल, अनें वर्तें जीव अजीव पर;

भोगवे ते कोंण अनें भोगमें आवे ते कोंण—भोगवे ते जीव, भोगमें आवे ते पुद्गल, दोय प्रकारे, एक तो शब्दादिक पर्यों, दूजो कर्म पर्यों;

कर्मांरो करता कोंण कीधाहोवे ते कोण, करता तो जीव, कीधाहुवा ते कर्म;

कर्मांरो उपाय ते कोंण उपनां ते कोंण—उपाय तो जीव, उपना ते कर्म ।

कर्मांने लगावै ते कोंण लाग्या हुवा ते कोंण—लगावै ते जीव, लागै ते कर्म;

कर्मांनें रोकै ते कोंण रुक्या ते कोंण—रोकै तो जीव, रुक्या ते कर्म;

कर्मां नें तोडै ते कोंण तूट्या ते कोंण—तोडै ते जीव, अनें तूट्या ते कर्म;

कर्मांनें बांधे ते कोंण बंध्या ते कोंण—बांधे ते जीव, बंधिया ते कर्म ।

कर्मांनें खपावै ते कोंण अनें खयथया ते कोंण—खपावै ते जीव, खयथया ते कर्म;

॥ इति तृतीय द्वारम् ॥

॥ अथ चौथो आतमद्वार कहै छै ।

जीवचेतन ते आतमा छै अनेरो नहीं ।

अजीव अचेतन आतमा नहीं अनेरो छै ।

आतमारेकाम आवे छै पण आतमा नहीं, कौण कौण काम आवे ते कहै छै ।

धर्मास्तिकाय अवलम्ब नें चालै छै ।

अधर्मास्तिकाय अवलम्ब नें स्थिर रहै छै ।

आकाशास्तिकाय अवलम्ब ने वसै छै ।

काल अवलम्बनें कार्य करै छै ।

पुद्गल खाय छै, पीवै छै, पहरै छै, ओढै छै, इत्यादि अनेक प्रकार आतमारै काम आवे छै, पण आतमा नहीं । पुन्य ते शुभ कर्म आतमारै शुभ पणै उदय आवे छै पण आतमां नहीं ।

पाप ते अशुभ कर्म आतमारै अशुभ पणै उदय आवे छै पण आतमां नहीं ।

शुभाशुभ कर्म ग्रहः ते आश्रव आतमां छै अनेरो नहीं ।

कर्म रोकै ते सम्बर आतमा छै अनेरो नहीं देशथकी कर्म तोडी देशथकी जीव उज्वलथाय ते

निर्जरा आतमां छै अनेरो नहीं ।

जीव संघाते कर्म बंधाणा ते बंध आतमा नहीं अनेरो छै आतमां नैं बांध राखी छै पण आतमां नहीं।

समस्त कर्मां सैं मूकावै ते मोक्ष आतमां छै अनेरो नहीं ।

॥ इति चतुर्थ द्वारम् ॥

१ अथ पांचमू जीवद्वार कहै छै ।

जीव ते चेतन तिण जीवनै जीव कहिजे, जीवनैं आश्रव कहिजे, जीवनैं संवर कहिजे, जीव नैं निर्जरा कहिजे, जीवनैं मोक्ष कहिजे ।

अजीव अचेतननैं अजीव कहिजे, पुन्य कहिजे, पाप कहिजे बंध कहिजे ।

पुन्य ते शुभ कर्म तेहनैं पुन्य कहिजे, तेह नैं अजीव कहिजे, तेहनैं बंध कहिजे ।

पाप ते अशुभ कर्म तेहनैं पाप कहिजे, अजीव कहिजे, बंध कहिजे ।

कर्म ग्रह ते आश्रव कहिजे तेहनैं जीव कहिजे, कर्म रोकै ते संवर कहिजे, जीव कहिजे ।

देशथकी कर्म तोड़ै देशथकी जीव उज्वलथाय तेहनें निर्जरा कहिजे जीव कहिजे ।

जीव सङ्काते कर्म बंधाणा ते बंध कहिजे अजीव कहिजे ।

समस्त कर्म मूकावे ते मोक्ष कहिजे जीव कहिजे हिवे यहनीं ओलखणा न्याय सहित कहे छै ।

जीवनें जीव किणन्याय कहिजे, गये काल जीव छो, वर्त्तमान काल जीव छै, आगामीकाल जीवको जीव रहसी इणन्याय ।

अजीव नें अजीव किणन्याय कहिजे, गयेकाल अजीव छो, वर्तमानकाल अजीव छै, आगामी कालें अजीव को अजीव रहसी ।

पुन्य नें अजीव किणन्याय कहिजे; पुन्य ते शुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते अजीव छै ।

पाप नै अजीव किणन्याय कहिजे; पाप ते अशुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते अजीव छै ।

आश्रव नें जीव किणन्याय कहिजे—आश्रव तो कर्म ग्रह छै, कर्मांरो कर्त्ता छै, कर्मांरी उपाय छै, उपाय ते जीव ही छै ।

१ मिथ्यात्व आश्रव नें जीव किणन्याय कहिजे, विपरीत सरधान ते मिथ्यात्व आश्रव जीवरा परिणाम छै।

२ अव्रत आश्रव नें जीव किणन्याय कहिजे अत्यांग भाव ते जीवरी आशा वंछा अव्रत आश्रव छै, ते जीवरा परिणाम छै।

३ प्रमाद आश्रव नें जीव किणन्याय कहिजे, अणउत्साह पणों ते प्रमाद आश्रव छै, तें जीवरा परिणाम छै।

४ कषाय आश्रव नें जीव किणन्याय कहिजे, कषाय आत्मा कही छै, कषाय ते जीवरा परिणाम छै, ते जीव छै।

जोग आश्रव नें जीव किणन्याय कहिजे, जोग आत्मा कही छै जोग तें जीवरा परिणाम छै तीनूं ही जोगांरो व्यापार जीवरो छै।

संवर नें जीव किणन्याय कहिजे सामाई पच्चखाण, संयम, संवर विवेक, विउसग्ग एह छऊं आतमा कही छै, वलि चारित्र आतमा कही छै चारित्र जीवरा परिणाम छै इणन्याय।

निर्जरा नें जीव किण न्याय कहिजे, भला भाव प्रवर्त्तावी नें जीव देशथी उज्जलो हुवै ते जीव छै।

बन्ध नें अजीव किण न्याय कहिजे, बन्ध ते शुभ अशुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल ते अजीव छै।

मोक्ष नें जीव किण न्याय कहिजे? समस्त कर्म मूकावै ते मोक्ष कहिजे, निर्वाण कहिजे, सिद्ध भगवान कहिजे, सिद्ध भगवान ते जीव छै, इण न्याय मोक्ष नें जीव कहिजे।

इति पंचम द्वारम्।

अथ छट्ठो रूपी अरूपी द्वार कहै छै।

जीव अरूपी छै, अजीव रूपी अरूपी दोनूं छै, पुन्य रूपी छै, पाप रूपी छै, आश्रव अरूपी छै, संवर अरूपी छै, निर्जरा अरूपी छै, बंध रूपी छै, मोक्ष अरूपी छै, हिवे एहनी ओलखना कहे छै।
जीव नें अरूपी किण न्याय कहिजे? छव द्रव्यमें जीव नें अरूपी कह्यो छै, पांच वर्ण पावे नहीं।

अजीव नें अरूपी रूपी दोनूं किण न्याय कहिजे अजीव का पांच भेद धर्मास्ति, अधर्मास्ति आकाशा-

स्ति, काल, पुद्गल, इण में च्यार तो अरूपी छै यामें पांच वर्ण पावै नांहि, एक पुद्गल रूपी छे ।

पुन्य नें रूपी किण न्याय कहिजे ? पुन्य तो शुभ कर्म छै, कर्म तो पुद्गल छै, पुद्गल ते रूपी छै ।

पाप नें रूपी किण न्याय कहिजे ? पाप ते अशुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते रूपी छै ।

आश्रव नें अरूपी किण न्याय कहिजे ? कृष्णादिक छऊँ भाव लेश्या अरूपी कहि छै ।

मिथ्यात्व आश्रव नें अरूपी किण न्याय कहिजे ? मिथ्या दृष्टी अरूपी कही छै ।

अव्रत आश्रव नें अरूपी किण न्याय कहिजे ? अत्याग भाव परिणाम जीवरा अरूपी कह्या छै ।

प्रमाद आश्रव नें अरूपी किण न्याय कहिजे ? अणउछाहपणो ते प्रमाद आश्रव छै, जीवरा परिणाम छै, ते जीव छै, जीव ते अरूपी छै ।

कषाय आश्रव नें अरूपी किण न्याय कहिजे ? श्रीठाणांग दशमें ठाणें जीव परिणामीरा दश भेद

में कषाय परिणामी कह्यो छै, अनें ज्ञान दर्शन चारित्र परिणामी कह्या छै, यह जीव छै तिण कषाय परिणामी जीव छै कषायपणें परिणमें तेकषाय परिणामी आश्रव छै, जीव छै जीव ते अरूपी छै।

जोग आश्रव नें अरूपी किणन्याय कहिजे? तीनों ही जोगांरो उट्ठान कर्म बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रम अरूपी छै।

संवर नें अरूपी किणन्याय कहिजे अट्ठार पाप ठाणांरो विरमण अरूपी कह्यो छै।

निर्जरा नें अरूपी किण न्याय कहिजे? कर्म तोडवारो बल वीर्य पुरषाकार प्राक्रम अरूपी छै।

बंधनें रूपी किण न्याय कहिजे? बंधते शुभा शुभ कर्म छै; कर्म ते पुदगल छै, पुदगल तें रूपी छै।

मोक्ष नें अरूपी किण न्याय कहिजे? समस्त कर्मा सें मूकावे ते जीव छै, तेहनें मोक्ष कहिजे, निर्वाण कहिजे: सिद्धभगवान कहिजे; सिद्धभगवान ते अरूपी छै।

इति छट्ठो द्वारम्।

॥ अथ सातमूँ सावद्य निर्वद्य द्वार ॥

जीव तो सावद्य निर्वद्य दोनूं छै । अजीव सावद्य निर्वद्य दोनूँ नहीं । पुन्य पाप सावद्य निर्वद्य दोनूँ नहीं, अजीव छै । आश्रव का पांच भेद-मिथ्यात्व आश्रव अव्रत आश्रव, प्रमाद आश्रव, कषाय आश्रव, यह च्यारतो सावद्य छै अशुभ जोग सावद्य छै, शुभ जोग निर्वद्य छै । इण न्याय आश्रव सावद्य निर्वद्य दोनूँ छै । संवर निर्वद्य छै । निर्जरा निर्वद्य छै । बंध सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं, अजीव छै । मोक्ष निर्वद्य छै ।

॥ इति सप्तम द्वारम् ॥

॥ अथ आठमूँ भाव द्वार कहै छै ॥

भाव ५ पांच-उदय भाव १, उपसम भाव २ क्षायक भाव ३, क्षयोपसम भाव ४ परिणामिक भाव ५

उदय तो आठ कर्म अनें उदय निपन्नरा दोय भेद-जीव उदय निपन्न १ दूजो जीवरे अजीव उदय निपन्न २, तिणमें जीव उदय निपन्नरा ३३ (तेतीस)

भेद ते कहे, छै च्यार गति ४, छव काय १०, छव लेस्या १६, च्यार कषाय २०, तीन बेद एवं २३- मिथ्याती २४, अव्रती २५, असन्नी २६, अनाणी २७, आहारता २८, संसारता २६, असिद्ध ३०, अकेवली ३१, छद्मस्थ ३२, संजोगी ३३ ।

हिवे जीवरे अजीव उदय निप्पन्नरा ३० (तीस) भेद ते कहै छै, पांच शरीर ५; पांच शरीरे प्रयोगे परिणाम्यां द्रव्य पांच १०, पांच वर्ण १५, दोय गंध १७, पांच रस २२, आठ स्पर्श; एवं तीस ।

उपसमरा दोय भेद । एक तो उपसमे १ दूजो उपसम निप्पन्न; भाव; उपसम तो एक मोह कर्म होय, उपसम निप्पन्नरा दोय भेद, उपसम समकित १, उपसम चारित्र २ ।

क्षायकरा दोय भेद । एक तो क्षायक, दूजो क्षायक निप्पन्न, क्षायक तो आठ कर्मा को होय अने क्षायक निपन्नरा १३ तेरा भेद ते कहै छै ।

केवल ज्ञान १, केवल दरशन २, आत्मिक सुख ३, क्षायक समकित ४, क्षायक चारित्र ५, अटल अवगाहना ६, अमूर्तिक पणो ७, अगुरु लघू पणो ८, दाना लब्धि ९, लाभा लब्धि १०

भोगा लब्धि ११, उपभोगा लब्धि १२, वीर्य लब्धि १३,

क्षयोपसमरा दोय भेद, एक तो क्षयोपसम १, दूजो क्षयोपसम निष्पन्न भाव २, क्षयोपसम तो च्यार कर्मको—ज्ञानावरणीय, दरिशणावरणीय, मोहनीय अन्तराय, अनें क्षयोपसम निष्पन भाव-रा ३२ बत्तीस बोल, ते कहे छे।

ज्ञानावरणीय कर्मरो क्षयोपसम होय तो ८ बोलपामैं—केवल वरजी च्यार ज्ञान, तीन अज्ञान, एक भणवो गुणवो।

दरशनावरणीय कर्म रो क्षयोपसम होयतो आठ बोलपामैं पांच इंद्री, तीन दरिशन केवल वरजी।

मोहनीय कर्मरो क्षयोपसम होयतो आठ बोलपामैं, ४ च्यार चारित्र, एक देश व्रत, ३ तीन दृष्टि

अंतराय कर्मरो क्षयोपसम होवे तो आठ बोल पामैं, ५ पांच लब्धि, ३ तीन वीर्य।

परिणामिकरा दोय भेद, सादिया परिणामि १, अनादिया परिणामी २, अनादिया परिणामिकरा १० भेद, तिणमें छव द्रव्य धर्मास्ति आदि ६, सातमूं लोक ७, आठमूं अलोक ८, नवमूं भवी ९

दशमूँ अभवी १०, अनें साढ़िया परिणामीरा अनेक भेद जाणवा । गाम नगर गढ़ा पहाड़ पर्वत पताले समुद्र द्वीप भुवन विमान इत्यादि अनेक भेद आदि सहित परिणामिकरा जाणवा ।

जीव आश्रयी जीव परिणामीरा १० भेद ते कहे छै ।

गति परिणामी १, इन्द्रिय परिणामी २, कषाय परिणामी ३, लेस्या परिणामी ४, जोग परिणामी ५, उपयोग परिणामिक ६, ज्ञान परिणामी ७, दरशन परिणामी ८, चारित्र परिणामी ९, वेद परिणामी १०,

हीवं जीव आश्रय अजीव परिणामीरा १० भेद कहे छैं ।

बन्धन परिणामी १, गई परिणामी २, संठाण परिणामी ३, भेद परिणामी ४, वर्ण परिणामी ५, गन्ध परिणामी ६, रस परिणामी ७, स्पर्श परिणामी ८, अगुरु लघू परिणामी ९, शब्द परिणामी १०; जीव में भाव पांचूँ ही; अजीव पुन्य पाप बन्ध भाव एक परिणामिक ।

आश्रव भाव दोय—उदय परिणामिक

सम्बर भाव ४, उदय बरजी नैं

निर्जरा भाव ३, क्षायक क्षयोपसम, परिणामिक।
मोक्ष भाव २ क्षायक, परिणामिक।

इति अष्टम द्वारम्।

॥ अथ नवमूँ द्रव्य गुण पर्याय द्वार ॥

द्रव्य तो जीव असंख्य प्रदेशी, गुण ८, ज्ञान १, दरिशन २, चारित्र ३, तप ४, वीर्य ५, उपयोग ६, सुख ७, दुख ८, यां एक एक गुणारी अनन्त अनन्त पर्याय।

ज्ञानें करी अनन्ता पदार्थ जाणैं तिणसूँ अनन्ती पर्याय।

दरशनें करी अनन्ता पदार्थ श्रधै तिणसूँ अनन्ती पर्याय।

चारित्र थी अनन्त कर्म प्रदेश रोकै तिणसूँ अनन्ती पर्याय।

तपकरी अनन्त कर्म प्रदेश तोडै तिणसूँ अनन्त पर्याय।

वीर्यनी अनन्ती शक्ति तिणसूँ अनन्ती पर्याय।

उपयोग थी अनन्त पदार्थ जाणैं देखै तिणसूँ अनन्ती पर्याय ।

सुख अनन्त पुन्य प्रदेशसूँ अनन्त पुद्गलिक सुख वेदै तिणसूँ अनन्ती पर्याय । वलि अनन्त कर्म प्रदेशां अलग हुयां थी अनन्त आत्म सुख प्रगटै तिणसूँ अनन्ती पर्याय ।

दुख अनन्त पाप प्रदेश सूँ अनन्त दुख वेदै तिणसूँ अनन्ती पर्याय ।

अजीव नां पांच भेद—धर्मास्ति, अधर्मास्ति आकाशास्ति, काल, पुद्गलास्ति यांको द्रव्य गुण पर्याय कहै छै ।

द्रव्य तो एक धर्मास्ति, गुण चालवानों साझ पर्याय अनन्त पदार्थ नें चालवानों सहाय तिणसूँ अनन्ती पर्याय ।

द्रव्य तो एक अधर्मास्ति, गुण थिर रहवा नों सहाय पर्याय अनन्ता पदार्थ नें थिर रहवानों साझ तिणसूँ अनन्ती पर्याय ।

द्रव्य तो एक आकाशास्ति, गुण भाजन; पर्याय अनन्त पदार्थां नों भाजन तिणसूँ अनन्ती पर्याय ।

द्रव्य तो एक काल, गुण वर्त्तमान, पर्याय अनन्ता पदार्थां पर बरते तिणसूँ अनन्ती पर्याय।

द्रव्य तो एक पुद्गल. गुण अनन्त गले अनन्त मिले तिणसूँ अनन्ती पर्याय।

द्रव्य तो पुन्य, गुण जीवके शुभ पणे उदय आवे, पर्याय अनन्त प्रदेश शुभ पणे उदय आवे अनन्त सुख करै तिणसूँ अनन्ती पर्याय।

द्रव्य तो पाप, गुण जीवरे अनन्त प्रदेश अशुभ पणे उदय आवे अनन्त दुख करै तिणसूँ अनन्ती पर्याय।

द्रव्य तो आश्रव गुण कर्म ग्रह, पर्याय अनन्ता कर्म प्रदेश ग्रह तिणसूँ अनन्ती पर्याय।

द्रव्य तो संवर, गुण कर्म रोकवारो, पर्याय अनन्ता कर्म प्रदेश रोके तिणसूँ अनन्ती पर्याय।

द्रव्य तो निरजरा, गुण देशथकी कर्म प्रदेश तोडी देश थी जीव ऊजलो थाय, पर्याय अनन्त कर्म प्रदेश तोडै तिणसूँ अनन्ती पर्याय।

द्रव्य तो बंध, गुण जीवनें बांध राखवारो, पर्याय अनन्ता कर्म प्रदेश करी बांधै तिणसूँ अनन्ती पर्याय।

द्रव्य तो मोक्ष, गुण आत्मिक सुख, पर्याय अनन्त कर्म प्रदेश खपहुयां अनन्त सुख प्रगटै तिणसूँ अनन्ती पर्याय ।

॥ इति नवमूं द्वारम् ॥

अथ दसमूं द्रव्यादिकरी ओलखना द्वार ॥

जीवनें पांचां बोलांकरी ओलखीजे—

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत्रथी लोक प्रमाणे, कालथकी आदि अन्त रहित, भावथी अरूपी, गुणथी चेतन गुण ।

अजीव नें पांचा बोलांकरी ओलखीजे—

द्रव्यथकी अनन्ता द्रव्य, खेत्रथी लोकालोक प्रमाणे, कालथकी आदि अन्त रहित, भावथी रूपी अरूपी दोनूं, गुणथकी अचेतन गुण ।

पुन्य नें पांचां बोलांकरी ओलखीजै—

द्रव्यथकी अनन्ता द्रव्य, खेत्रथकी जीवांकने

कालथकी आदि अन्त रहित भावथकी रूपी गुणथकी जीवरे शुभ पणे उदय आवे।

पाप नैं पांचां बोलांकरी ओलखीजे—

द्रव्यथकी अनन्ता द्रव्य, खेत्रथी जीवांकनैं, कालथकी आदि अन्त रहित भावथकी रूपी गुणथकी जीवरै अशुभ पणे उदय आवे।

आश्रव नैं पांचां बोलांकरी ओलखीजे—

द्रव्यथकी अनन्ता द्रव्य, खेत्रथी जीवांकनैं, कालथकी तीन भेद—एकेक आश्रवरी आदि नहीं अन्त नहीं ते अभव्य आंसरी, एकेक आश्रवरी आदि नहीं पण अन्त है ते भव्य आंसरी, एकेक आश्रवरी आदि है अन्त है ते पडवाइ आंसरी, तेहनी स्थिती जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्टी देस ऊणी अर्ध पुद्गल परिवर्तन, भावथकी अरूपी, गुणथकी कर्म ग्रहवानों गुण।

संवर नैं पांचां बोलांकरी ओलखीजे—

द्रव्यथकी तो असंख्याता द्रव्य, खेत्रथी जीवांकनैं, कालथकी आदि अन्त सहित, भावथी अरूपी गुणथकी कर्म रोकवारो गुण।

निर्जरा नैं पांचां बोलांकरी ओलखीजे—

द्रव्यथकी अकाम निर्जराका तो अनन्ता द्रव्य सकाम निर्जराका असंख्याता द्रव्य, खेत्रथकी जीवांकनै, कालथकी आदि अन्त सहित, भावथकी अरूपी, गुणथकी कर्म तोड़वारो गुण।

बन्धनें पांचां बोलां ओलखीजे—

द्रव्यथी अनन्ता द्रव्य, खेत्रथकी जीवांकनैं कालथकी आदि अन्त सहित, भावथकी रूपी गुणथकी कर्म बांध राखवारो गुण।

मोक्षनें पांचां बोलांकरी ओलखीजे—

द्रव्यथकी अनन्ता द्रव्य, खेत्रथकी जीवांकनें, कालथकी एकेक सिद्धांरी आदि अन्त नहीं, एकेक सिद्धांरी आदि छै पण अन्त नहीं, भावथकी अरूपी, गुणथकी आत्मिक सुख।

धर्मास्तिकायनें पांचां बोलांकरी ओलखीजे—

द्रव्यथकी एक द्रव्य, खेत्रथी लोक प्रमाणे, कालथकी आदि अन्त रहित, भावथकी

अरूपी, गुणथकी जीव पुद्गलनें चालवारो साझ ।

अधर्मास्तिकायनें पांचां बोलांकरी ओलखीजे—
द्रव्यथकी एक द्रव्य, खेत्रथी लोक प्रमाणे, कालथकी आदि अन्त रहित, भावथकी अरूपी गुणथकी जीव पुद्गलनें थिर रहवानों सहाय ।

आकाशास्तिकायनें पांचां बोलांकरी ओलखीजे-
द्रव्यथकी एक द्रव्य, खेत्रथकी लोक अलोक प्रमाणे, कालथकी आदि अन्त रहित, भाव-थकी अरूपी, गुणथकी भाजनगुण ।

कालनें पांचां बोलांकरी ओलखीजे—
द्रव्यथकी अनन्ता द्रव्य, खेत्रथी अढाई द्वीप प्रमाणे, कालथकी आदि अन्त रहित, भाव-थकी अरूपी, गुणथकी वर्त्तमानगुण ।

पुद्गलास्तिकायनें पांचा बोलांकरी ओलखीजे—
द्रव्यथकी अनन्ता द्रव्य, खेत्रथकी लोक प्रमाणे, कालथकी आदि अन्त सहित, भावथकी रूपी, गुणथकी गलै मलै ।

॥ इति दशम द्वारम् ॥

॥ अथ एकादशमूं आज्ञा द्वार कहै छै ॥

जीव आज्ञा मांही बाहर दोनूं छै; ते किण न्याय? सावद्य कर्त्तव्य आसरी आज्ञा बाहर छै। अने निर्वद्य कर्त्तव्य आसरी आज्ञा माँहि छै। अजीव आज्ञा माँहि के बाहर? अजीव आज्ञा मांहीं बाहर दोनूं नहीं; ते किण न्याय? अजीव छै अचेतन छै जड़ छै।

पुन्य, पाप, बंध, यह तीनूं आज्ञा मांहीं; बाहर नहीं अजीव छै।

आश्रव आज्ञा माँहि बाहर दोनूं छै, किण न्याय? आश्रवना पाँच भेद—मिथ्याति १, अव्रति २, प्रमादि ३, कषाय ४, यह च्यार ती आज्ञा बाहर छै। जोग आश्रव का दोय भेद—शुभ जोग वर्त्तताँ निर्जरा हुवै तिण अपेक्षा आज्ञा माँहि छै। अशुभ जोग आज्ञा बाहर।

संवर आज्ञा माँहि छै; ते किण न्याय? संवरथी कर्म रुके ते श्री बीतराग की आज्ञा माँहि छै।

निर्जरा आज्ञा माँहि छै: ते किण न्याय? कर्म तोड़वारो उपाय श्री बीतराग की आज्ञा में छै।

मोक्ष आज्ञा मांहिं छै; ते किण न्याय ? सकल कर्म खपावारी श्रीवीतरागकी आज्ञा छै ।

॥ इति एकादशम द्वारम् ॥

॥ अथ बारमूंज्ञय द्वार कहै छै ॥

जीवनें जीव जाणवो । अजीवनें अजीव जाणवो । पुन्यनें पुन्य जाणवो । पापनें पाप जाणवो । आश्रवनें आश्रव जाणवो । संवरनें संवर जाणवो । निर्जरानें निर्जरा जाणवो । बंधनें बंध जाणवो । मोक्षनें मोक्ष जाणवो । यह नव पदार्थ जाणवायोग कह्या छै । इणांमें आदरवाजोग ३, संवर १, निर्जरा २, मोक्ष ३, बाकी छव छांडवा जोग छै ।

जीवनें छाँडवा जोग किण न्याय कहिजे ? आपरा जीवको भाजन करी किणी जीव ऊपर ममत्व भाव न करवो ।

अजीव छाँडवा जोग किण न्याय कहिजे ? किणी अजीव पर ममत्व भाव न करवो ।

पुन्य पाप छांडवा जोग किणन्याय कहिजे? शुभ अशुभ कर्म छांडवा जोग छै।

आश्रव नें छांडवा जोग किणन्याय? कहिजे आश्रव कर्म ग्रहै छै। कर्मारो उपाय छै। शुभाशुभ कर्म आवाना बारणां छै। ते छांडवा जोग छै।

कर्मरोकै ते संवर आदरवा जोग छै।

देशथकी कर्म तोड़ी देशथकी जीव उज्वल थाय ते निर्जरा आदरवा जोग छै।

बंधनें छांडवा जोग किणन्याय कहिजे? शुभाशुभ कर्म जीवके बंध रह्या छै ते बंध तो छोडवाही जोग छै।

मोक्ष नैं आदरवा जोग किणन्याय कहिजे? समस्त कर्म मूकावे ते मोक्ष आदरवा जोग छै।

॥ इति द्वादशमो द्वारम् ॥

॥ अथ तेरमूं तलाव द्वार कहै छै।

तलाव रूपी जीव जाणवो। अतलाव ते तलाव बाहर रूप अजीव जाणवो। निकलता पांणी

रूप पुन्य पाप जांणवो । नालारूप आश्रव जा-णवो । नाला बन्ध रूप संवर जाणवो । मोरी करीने पाणी काडै ते निर्जरा जाणवी । मांहिला पाणी रूप बंध जाणवो । खाली तलाव रूप मोक्ष जाणवो ।

यह तेरा द्वारतन्त किया श्रीभीखनजीस्वामी ।

॥ इति तेराद्वार सम्पूर्ण ॥

अथ दश विधयति धर्म

खंती १	मुत्ती २	अज्जवे ३	मद्दवे ४
क्षमा	निरलोभता	आरजता	मार्दवता
लाघवे ५	सच्चे ६	संजमे ७	तवे ८
अद्रिकता	सत्यता	संयम	तप
चेईय ९	वंभचर्यवासे १०		
ज्ञानवंत	शीलवंत		

अथ सतरा भेद संयम

१ पृथिवी काय संयम्, २ अप्पकाय संयम्, ३ तेऊ काय संयम्, ४ वाऊ काय संयम्, ५ वन-स्पति काय संयम्, ६ बेइन्द्री संयम्, ७ तेइन्द्री

संयम्, ८ चौरिन्द्री संयम्, ९ पंचेन्द्री संयम्, १० अजीव काय संयम्, ११ पेहा संयम् (मर्यादा उपरांत वस्त्रादि नहिं राखै) १२ उपेहा संयम्, (कालों काल पडि लेहणादि करे) १३ पूंजणियां संयम्, (जयणा युत पूंजै) ४ परिट्ठावणियां संयम् (जयणा सें निर्जीव भूमि मैं परठै) १५ मन संयम्, १६ वचन संयम्, १७ काया संयम्

अथ साधू मुनिराज बयांलीस दोष टाल के आहार पाणी लेवे ॥

१६ दोष उदगमण का दातार सें लागे ।

१ आधाकर्म्मी—साधुके निमत्त करै ।

२ उदेशी—साधुके निमित्त उदक देवै ।

३ पूतिकर्म्म—साधु के निमित्त कियोहुयो द्रव्य को भाजन खाली करके उस भाजन में घालकर अनेरो द्रव्य बहिरावे ।

४ साधु निमत्त स्थाप राखकर बहिरावे ।

५ मिश्र—आप तथा साधु का भाव मेल कर कर्‌यो हुयो द्रव्य बहिरावे ।

६ पाहुणां आवा पाछा करे अर्थात् साधु नहरण आवे उसी दिन पाहुणा ने जीमण बुलावे तमदा भोजन बहरावा निमित नूंत्यो हुवो पाहुणो आघो पाछो करे

७ अंधाराथी उजाले करे।

८ साधु निमित् मोल खरीद कर बहरावे

९ उधार लेके वहिरावे।

१० सटलो बदलो कर वहिरावे।

११ सनमुख लेजा के वहिरावे।

१२ छांदो किंवाड़ खोलकर वहिरावे।

१३ ऊंची अवखी जगां से उतार कर वहिरावे।

१४ निरबलकने स्ंू खोसकर वहिरावे।

१५ सीरकी वस्तु सीरी ने विना पूछ्यां वहिरावे

१६ आंधण में साधु निमित्त अधिक ओरे।

१६ दोष उत्पात का—साधु तथा दातार दोना का जोगसुं।

१ धायर्नापंडे लेवै—अर्थात् बालकों को खिलावे (रमावे)

२ दूतनीपंडे लेवे—(गृहस्थ का संदेसा

ग्रामान्तर कहे)

३ निमित्त भाषकर लेवै

४ जाति जणाई लेवै ।

५ गरीबी बताई लेवै ।

६ वैद्यगीरी करी लेवै ।

७ क्रोध करी लेवै ।

८ मान करी लेवै ।

९ माया करी लेवै ।

१० लोभ करी लेवै ।

११ दातार का गुण करी लेवै ।

१२ विद्या कामण करी लेवै ।

१३ मंत्र यंत्र करी लेवै ।

१४ गोली चूरण करी लेवै ।

१५ सौभाग्य दौभाग्य बता करी लेवै ।

१६ गर्भ गाली लेवै ।

१० दोष साधु का जोग से लागे ।

१ शंका सहित लेवै ।

२ सचित से हात खरड्या हुवे जिणासु लेवे ।

३ सचित पर मेल्योडो लेवै ।

४ सचित्त करी ढांक्यो हुयो लेवै ।

५ सचित्त का संघट्ट से लेवै ।

६ आँधा कनैं सें लेवैं ।

७ सचित्त अचित्त भेल को लेवै ।

८ सस्त्र पूरोनहीं पर गम्यो हुवे अर्थात सर्व अचित नाहि हुयोहो लेवै ।

९ नांखीतो द्रव्य अर्थात ढुलतो हुयो लेवै ।

१० सचित्ता ढिकसें लीप्यो आंगणपर से लेवै ।

इति ।

॥ अथ ५ मंडल का दोष ॥

१ संयोग मेलै ।

२ प्रमाण से इधको लेवै ।

३ सरस आहार सराय २ करै ।

४ निरस आहार विसराय करै ।

५ छव कारण विना करैं ।

अथ छव कारण सें साधुनें आहार करणो ।

१ क्षुधा वेदनी मिटावा ।

२ व्यावच निमित्त ।

३ ईर्ष्या सुमति निमित्त ।
४ संयम् पालवा निमित्त ।
५ संयम् जीवितव्य निमित्त ।
६ धर्म जागरणा निमित्त ।

अथ छव कारण आहार नहिं करणो—

१ रोग उत्पन्न होतो जाणतो ।
२ उपसर्ग होतो जाणतो ।
३ दया पलती नहीं दीखतो ।
४ ब्रह्मचर्य पलतो नहिं दीखे तो ।
५ तप उपवासा निमित्त ।
६ संथारा संलेषणा निमित्त ।

॥ इति ॥

॥ अथ स्तवनम् ॥

मन मैल मिटै, तन नींद पड़ै, यह रग भङ्ग का लोटा ॥ ए चाल ॥

अघ कर्म कटै, मन भर्म मिटै, इणा चङ्ग भङ्ग का लोटा । गणि नाम रटै, सुख शिव सैं सटै, तसु

मोहि रहे कछु टोटा ॥ लेई सुघट श्रद्धा शिलाडी, करि गुरानी लोढी ठाडी; वांटया सुमती बैसाडी, पय मिश्री जिन वच घोल । करो किल्लोल । हुवै रंग रोल । मिटाके शङ्का कस्व भिम्भोटा ॥ अघ० ॥ १ ॥ बादाम अनुभव जानों, चरचा मघ मिरची मानों, दलि सुयश इलायची आनों; तत्व शौंफा मैंछान । श्री सत् वान । करो-हम पान । पिलाके पीवे जे नर मोटा ॥ अ ॥ २ ॥ गणी गुण निज गुन की खानी, निरमल जिम गंगनौ पानी; फुन शान्ति दान्ति शुद्ध जानी; भवि धार सार शुक्कार । उतर भव पार । कुमति विष टार । हटावो कुगुरु कुपंथी खोटा ॥ अ ॥ ३ ॥ सद्गुरु गुण जोई मंगावे, निज आतम ऋद्धि बढावे, वे अजर अमर पद पावे, यह रीत अनुभव प्रीत । अरि अघ जीत । खेल करि स्याद्वाद दही दोटा ॥ ४ ॥ सुन पाखंडी मुरझावे, गणी तेज देख लुक जावे, गुणवंतानें गुण भावें; कहैं गुलाबचंद आनंद । हटे दुख दंध । कटे सब फंध । लिया शुभ समकित करमें घोटा ॥ अ ॥ ५ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यो ॥

॥ श्रीजिन वचन स्तवन ॥

धोखै से लही बुलाय बालम मोय कैसी ठानीरे ॥ ए चाल ॥

तन मन सें लागी प्रीत सुनी मैं श्रीजिन वानीरे, सुगुरु मुख सुन के जिनवर वान, प्रगट भयो घट में सम्यक् ज्ञान, करी सावद्य निरवध पहिचान, व्रत अव्रत ओलखान आंखां मैं जिन धर्म जानीरे, ॥ तन ॥ १ ॥ ज्ञानादिक है निज गुन सुखदाय, कोहादि हैं पर गुन दुःख दाय समझ सें शिव पद जलदी पाय, जन्म मर्ण मिटजाय काय खटदया बखानीरे, ॥ तन ॥ २ ॥ असंजति जीतव वंछ्यां राग, मर्ण वन्छ्यां थी द्वेष अथाग, तरण वन्छै ते जिनवर माग, मोह निद्रा तज जाग लाग शुद्ध कृया ठानीरे ॥ तन ॥ ३ ॥ दया नहीं जीव जीवे तसु होय, मरै तिणरी हिन्सा नहीं कोय मारण वालारे हिन्सा जोय, दया जाण अवलोय कोय मत हणो पर प्रानीरे ॥ तन ॥ ४ ॥ देव गुरू धर्म तीन अन मोल, तेरापंथी का पक्का कोल न्याय त्राजु सें लीजे तोल, मिथ्या घुराडी खोल गुलाब कहै गुलाब सुहानीरे ॥ ५ ॥

॥ अथ बावनबोल को थोकड़ो

१ पहलै बोलै ८ आत्मा में कर्मांरी करता किती ? रोकता किती ? तोड़ता किती आत्मा ? करता तो ३ आत्मा—कषाय, जोग, दरशन। रोकता २ आत्मा—दरशन, चारित्र। तोड़ता एक जोग आत्मा।

२ दूजै बोलै ८ आत्मा में द्रव्य जीव केती ? भाव जीव केती ?

१ द्रव्य जीव एक द्रव्य आत्मा।

७ भाव जीव सात आत्मा।

३ तीजे बोलै आठ आत्मामें उदय भावकेती ? यावत परिणामी भाव केती आत्मा ?

३ उदय भाव तीन—कषाय, जोग दरशन.

२ उपसम भाव दोय—दरशन, चारित्र।

६ क्षायक क्षयोपसम भाव छव आत्मा द्रव्य कषायटली। ८ परिणामिक भाव आठ आत्मा

४ चौथे बोलै आठ आत्मा में सास्वती केती।
असास्वती । केती
१ सास्वती तो एक द्रव्य आत्मा।
७ असास्वती सात आत्मा।

५ पांचमे बोलै आठ अत्मा में सावद्य केती?
निर्वद्य केती?
१ द्रव्य आत्मा तो सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीः
१ कषाय आत्मा सावद्य छै।
२ जोग तथा दरशन अत्मा सावद्य निर्वद्य दोनूँ छै।
४ ज्ञान, चारित्र, वीर्य, उपयोग यह च्यार आत्मा निर्वद्य छै।

६ छटे बोले आठ अत्मा में जाणे किसी! देखै किसी! सरधे किसी आत्मा!
जाणे तो ज्ञान तथा उपयोग आत्मा, देखै उपयोग आत्मा।
श्रधे दर्शन आत्मा।
कला जाणे उपयोग आत्मा, करे जोग आत्मा कर्म रोकै चारित्र आत्मा, तोडै जोग आत्मा शक्ति वीर्य आत्माकी!

७ सातमें बोलै उदयका ३३ (तेतीस) बोलां सावद्य केता ? निर्वद्य केता ।

१६ सोलह बोलतो सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं ते कहै छै च्यार गति ४, छव काय १० असन्नी ११, अन्नाणी १२, संसारता १३ असिद्ध १४, अकेवली १५, छद्मस्थ १६

३ तीन भली लेस्या निर्वद्य छै ।

१२ बारह सावद्य छै, तीन मांठी लेस्या ३ च्यार कषाय ७, तीन वेद १०, मिथ्याती ११ अबती १२, २ आहारता, सँजोगी, यह दोय सावद्य निर्वद्य दोनूं ही छै ।

८ आठमें बोलै जीव पदार्थ किसे भाव ! यावत मोक्ष पदार्थ किसे भाव ?

१ जीव पदार्थ भाव पांचोंही पावै ।

४ अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध, यह च्यार पदार्थ भाव १ परिणामिक ।

१ आश्रव पदार्थ भाव दोय—उदय परिणामिक ।

१ संवर पदार्थ भाव च्यार—उदय बरजीनें ।

१ निर्जरा पदार्थ भाव तीन—क्षायक क्षयो-
पसम, परिणामिक ।

१ मोक्ष भाव दोय—क्षायक, परिणामिक ।

६ नवमें बोलै उदयका ३३ (तेतीस) बोल
किसे किसे कर्मका उदयसे तथा किसो आत्मा
१३ तेरा बोलतो नांम कर्मके उदयसे, तिणमें
च्यारगति, ४, छव काय, १०, तीन भली
लेस्या १३ ।

१२ बारे बोल मोहनीय कर्म के उदय से, च्यार
कषाय, ४, तीन वेद, ७, तीन मांठीलेस्या
१० मिथ्याती, ११, अव्रती, १२ एवं ।

२ दोय बोल ज्ञानावरणी कर्म का उदय से—
असन्नी अन्नाणी ।

२ आहारता, संजोगी, यह दोय बोल मोहनीय
नाम, कर्मनां उदय सें ।

२ छद्मस्थ, अकेवली, यह दोय बोल, ज्ञाना-
वरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय यां तीन कर्म
का उदयसें ।

२ संसारता, असिद्धता यह दोय बोल च्यार
अघातिक कर्मका उदयसें, हिवे आत्मा कहेछै ।

१७ सतरह बोलतो अनेरी आत्मा—
चयार गति ४, छव काय १०, अव्रती ११, असन्नी १२, अनाणी १३, संसारता १४, असिद्ध १५, अकेवली १६ छद्मस्थ १७।

८ आठ बोल जोग आत्मा –
छव लेस्या ६, आहारता ७, संयोगी ८।

४ च्यार कषाय कषाय आत्मा।

३ तीन वेद कोई कषाय कहै कोई अनेरी कहै।

१ मिथ्याती दर्शन आत्मा।

१० दसमें बोलै जीवनें जीव जाणै यावत मोक्ष नें मोक्ष जाणै ते किसे भाव ?—क्षायक क्षयोपशम, परिणामिक, यह तीन भाव।

११ इग्यारमें बोलै जीवनें जीव जाणै, यावत मोक्ष नें मोक्ष जाणै ते किसी आत्मा। उपयोग अनें ज्ञान आत्मा।

१२ बारमें बोलै जीव पदार्थ केती आत्मा! यावत मोक्ष पदार्थ केती आत्मा? जीवमें आत्मा पावै आठों हीं; अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध, आत्मा नहीं। आश्रव ३ (तीन) आत्मा—कषाय, जोग दर्शन। सम्वर २ (दोय) आत्मा,

दर्शन, तथा चारित्र । निर्जरा (५) पाँच आत्मा द्रव्य, कषाय, चारित्र, टली । मोक्ष पदार्थ अनेरी आत्मा ।

१३ तेरमें बोले— छव में नव में कोण ?

उदय छव में कोण, नव में कोण ?—छव में पुद्गल; नव में च्यार—अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध । उपसम छवमें कोण नवमें कोण ?—छवमें पुद्गल: नवमें तीन—अजीव, पाप, बंध क्षायक छव में कोण ? नव में कोण ?—छव में पुद्गल नवमें च्यार—अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध । क्षयोपसम छव में कोण नव में कोण छव में पुद्गल; नव में तीन—अजीव, पाप बन्ध । परिणामिक छव में कोण ? नव में कोण ?—छव में छव, नव में नव ।

१४ चौदमें बोले उदय निप्पन्न छवमें कोण ? नव में कोण ?—यावत परिणामिक निप्पन्न छव में नव में कोण ?—

उदय निप्पन्न छव में कोण ? नवमें कोण ?—छवमें जीव; नव में जीव, आश्रव । उपसम

निष्पन्न छव में कौण ? नव में कौण ?—छव में जीव; नव में जीव, संवर । क्षायक निष्पन्न छव में कौण ? नव में कौण ?—छव में जीव; नव में ४—जीव, सम्बर, निर्जरा, मोक्ष । क्षयोपसम निष्पन्न छव में कौण ? नव में कौण ?—छव में जीव; नव में ३—जीव, सम्बर, निर्जरा ।

परिणामिक निष्पन्न छव में कौण ? नव में कौण ?—छव में छव; नव में नव ।

१५ पंदरमे बोलै आठ कर्मनों उदय; छव में, नव में कौण?—ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अंतराय, यह च्यार कर्मनों उदय तो छवमें पुद्गल; नव में तीन—अजीव, पाप, बन्ध । वेदनी, नाम, गोत, आयु यह च्यार कर्मनों उदय छव में पुद्गल; नव में च्यार—अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध ।

१६ सोलमे बोलै मोहनीय कर्मनों उपसम; छव में कौण ? नव में कौण ? छव में पुद्गल, नव में तीन—अजीव, पाप, बन्ध । बाकी सात कर्म नों उपसम होवै नहीं ।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अन्तराय, यह च्यार कर्म नों क्षायक; छव में कौण ?

नव में कौण ? छव में पुद्गल, नव में

तीन—अजीव, पाप, बन्ध ।

वेदनी, नाम, गोत, यह तीन कर्म नों नायक

छव में कौण ? नव में कौण ? छव में पुद्गल,

नव में च्यार—अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध ।

आयुषाका नायक छव में कौण ? नव में

कौण ? छव में पुद्गल; नव में तीन—अजीव

पुन्य, बंध ।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अन्तराय

यह च्यार कर्म नो क्षयोपसम; छव में कौण ?

नव में कौण ? छव में पुद्गल; नव में तीन—

अजीव, पाप, बंध। बाकी च्यार कर्म रो क्षयोपसम होवे नहीं।

१७ सतरमें बोलै आठकर्म ना निष्पन्नरी विगतः

छव कर्मनों उदय निष्पन्न; छव में कौंण ? नव में कौंण?—छव में जीव, नव में जीव।

मोहनीय, नाम, ए दोय कर्म नो उदय निष्पन्न; छव में जीव, नव में जीव, आश्रव।

सात कर्म नों तो उपसम निष्पन्न होवे नहीं; येक मोहनीय कर्मनों उपसम निष्पन्न होवे; ते

छवमें जीव, नवमें जीव, सम्बर

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय, यां तीन कर्मरो क्षायक निष्पन्न छवमें जीव, नवमें जीव, निर्जरा। एक मोहनीय कर्म को क्षायक निष्पन्न छवमें जीव, नवमें जीव, सम्बर, निर्जरा। बाकी च्यार अघातिक कर्म को छवमें जीव, नवमें जीव, मोक्ष। च्यार अघातिक कर्मरो तो क्षयोपसम निष्पन्न होवे नहीं। ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय, यां तीन कर्म को क्षयोपसम निष्पन्न तो छवमें जीव, नवमें जीव, निर्जरा। मोहनीय कर्म को क्षयोपसम निष्पन्न छवमें जीव, नवमें जीव, सम्बर, निर्जरा।

१८ अठारमें बोलै आठ कर्मनों बन्ध आदिसत्ता, किसे किसे गुणठाणें—

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय, नाम, गोत यां पांच कर्मनों बंध पहला गुण ठाणांसे दसमां गुण ठाणां तांई।

मोहनीय कर्मनों बन्ध पहला गुण ठाणांसे नवमां, गुण ठाणां तांई।

आयु कर्मनों बन्ध पहला गुण ठाणांसें सातमां तांई। तीजो गुण ठाणों टाली।

वेदनी कर्मनों बंध तेरमां गुण ठाणां तांई। ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय यां तीन कर्मनो उदय अनें उदय निष्पन्नी सत्ता बारमां गुण ठांणां तांई।

वेदनी, नाम, गौत्र आयुष यां च्यार कर्मनों उदय अने उदय निपन्ननी सत्ता चौदमां गुण ठाणां तांई।

मोहनीय कर्मनों उदय निष्पन्न पहला गुण ठाणांसें दशमां गुणठाणां तांई। अने सत्ता इग्यारमां गुणठांणां तांई।

१९ उगणीसमें बोलै चौदह गुणठाणां को उदय उपसम चायक चयोपसम निष्पन्न कहैछै, ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय यां तीन कर्मनों उदय निष्पन्न तो पहलासें बारमां तांई।

दर्शन मोहनीयनों उदय निष्पन्न पहला सें सातमा तांई।

चारित्र मोहनीयनौं उदय निष्पन्न पहला सैं दशमां तांई ।

वेदनी, नांम, गोत्र, आयुष यां च्यार कर्मनों उदय निष्पन्न पहला सें चौदमां तांई ।

सात कर्मनों तो उपसम होवे नहीं । एक मोहनीय कर्मनों होय । तिणमें दर्शन मोहनीयनों उपसम निष्पन्न तो चौथासें इग्यारमां तांई चारित्र मोहनीयको इग्यारमें गुणठाणांही । ज्ञानावरनी दर्शनावरणी अन्तराय यां तीन कर्मनो क्षायक निष्पन्न तेरमें चौदमैं गुणठाणैं तथा श्री सिद्ध भगवान में । दर्शन मोहनीयको क्षायक निष्पन्न चौथा गुण ठाणांसे चौदमां तांई । अनें चारित्र मोहणी को बारमां सें चौदमां तांई तथा श्रीसिद्ध भगवान मांहि ।

वेदनी नांम गोत्र आयु यां च्यार कर्मनों क्षायक निष्पन्न गुणठाणां में पावे नहीं; श्रीसिद्ध भगवान में पावें ।

ज्ञानावरणी दर्शनावरणी अन्तराय यां

कर्मनों क्षयोपसम निष्पन्न तो पहला से बारमां गुणठाणां तांई ।

दर्शन मोहनीय को क्षयोपसम निष्पन्न पहला सें सातमां गुणठाणां तांई ।

चारित्र मोहनीय नों क्षयोपसम निष्पन्न पहला सें दशमां गुणठाणां तांई ।

च्यार अघाति कर्मनों क्षयोपसम निष्पन्न होवे नहीं ।

३० बीसमें बोले आठ कर्मामें पुन्य कितना, पाप कितना, तथा पुन्य कितना सें लागे, पाप कितना सें लागे ?—

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय अन्तराय यह च्यार कर्म तो एकान्त पाप छै ।

वेदनी, नाम, गोत्र आयु यह च्यार कर्म पुन्य पाप दोनूंही छै ।

मोहनीय कर्म सें तो पाप लागै, अने नाम कर्म से पुन्य लागै, बाकी छः कर्म से पुन्य पाप दोनूं नहीं लागै ।

२१ इकीसमें बोले आश्रवनां बीस भेद किसे २ गुणठाणों कितना कितना पावे ।

आश्रव के २० बीस भेदों की विगत ।

पहले तथा तीजे गुणठाणें तो बीस पावे, दूजे चौथे पांचमें गुणठाणें उगणीस पावे मिथ्यात्व टल्यो । छटे गुणठाणें अठारह पावे मिथ्यात्व तथा अव्रत आश्रव टल्यो । सातमांसें दशमां गुणठाणां तांई ५ (पांच) आश्रव पावे, कषाय जोग मन वचन काया यह पांच जांणवा । इग्यार में बारमें तेरमें च्यार पावे कषाय टली । चौदमें आश्रव पावे नहीं । हिवे संवरके बीस बोलांकी विगत—पहलासें चौथा गुणठाणां तांई तो संवर पावे नहीं पांचमें गुणठाणें एक समकितं संवर पावे सम्पूर्ण व्रतते संवर पावे नहीं ।

देश व्रत पावे ते लेख्यो नहीं ।

छट्ठे गुणठाणें २ (दोय) पावे समकिते व्रतते सातमांसें दशमां गुणठाणां तांई १५ (पंदरह) संवर

पावै । अकषाय अजोग मन वचन काया यह पाँच टल्या ।

इग्यारवें से तेरमें गुणठाणां तांई १६ (सोलह) संवर पावै; अजोग मन वचन काया यह च्यार टल्या ।

चौदमें गुणठाणों २० वीसूं ही संवर पावै

२२ बाईस में बोले चौदा गुणठाणां किसे भाव किसी आतमा ।

पहलो दूजो तीजो गुणठाणों तो भाव दोय-क्षयोपसम परिणामिक आत्मादर्शन । चौथो गुणठाणों भाव च्यार—उदय वरजीनें आतमा दर्शन ।

पांचमूं गुणठाणों भाव दोय—क्षयोपसम परिणामिक आतमा देशचारित्र ।

छठासैं दशमां गुणठाणां तांई भाव दोय—क्षयोपसम परिणामिक आतमा चारित्र । इग्यारमूं गुणठाणों भाव दोय—उपसम परिणामिक आतमा उपसम चारित्र ।

बारमूं गुणठाणों भाव दोय—क्षायक परिणामिक आत्मा क्षायक चारित्र ।

तेरमूं गुणठाणों भाव दोय—क्षायक परिणामिक आत्मा उपयोग ।

चौदमों गुणठाणों भाव परिणामिक आत्मा अनेरी ।

२३ तेवीसमें बोलै धर्म अधर्म किसो भाव किसी आत्मा ।

धर्म भाव ४ (च्यार) उदय टाली आत्मा तीन दर्शन चारित्र जोग । अधर्म भाव दोय उदय परिणामि; आत्मा ३ (तीन) कषाय जोग दर्शन ।

२४ चोवीसमें बोलै दया हिन्सा किसे भाव किसी आत्मा ।

दया भाव ४ (च्यार) उदय बरजीनें आत्मा २ (दोय) चारित्र जोग ।

हिन्सा भाव २ (दोय) उदय परिणामी आत्मा जोग छवमें नवमें का बोल कहना ।

२५ पचीसमें बोलै शुभ जोग अशुभ जोग किसो भाव किसी आत्मा ।

शुभ जोग तो भाव च्यार—उपसम बरजीनें आतमा जोग।

अशुभ जोग भाव दोय—उदय परिणामी आतमा जोग छवमें नवमें का बोल कह्या।

२६ छवबीसमें बोलै व्रत अव्रत किसो भाव किसी आतमा।

व्रत भाव ४ (च्यार) उदय बरजीनें आतमा चारित्र। अव्रत भाव २ (दोय) उदय परिणामी आतमा अनेरी।

२७ सत्तावीसमें बोलै पंचमहाव्रत पमसुमति तीन गुप्त किसो भाव किसी आतमा।

पंचमहाव्रत तीन गुप्त तो भाव ४ (च्यार)उदय बरजी आतमा चारित्र।

पांच सुमति भाव तीन—क्षायक क्षयोपसम परिणामिक आतमा जोग।

२८ अठावीसमें बोलै १२ (बारे) व्रत किसो भाव किसी आतमा।

भाव क्षयोपसम परिणामी आतमा देशचारित्र

२६ उगणतीसमें बोलै समकित मित्थ्यात्व किसो भाव किसो आत्मा ? समकित भाव च्यार— उदय, बरजी, आत्मा, दर्शन । मित्थ्यात्व भाव उदय परिणामी, आत्मा दर्शन ।

३० तीसमें बोलै ज्ञान अज्ञान किसो भाव किसो आत्मा—

ज्ञान भाव ३ (तीन) खायक खयोपसम परिणामी, आत्मा, ज्ञान उपयोग, । अज्ञान भाव २ (दोय) खयोपसम परिणामिक आत्मा उपयोग

३१ इकतीमें बोलै द्रव्यजीव भावजीव किसे भाव किसो आत्मा—

द्रव्य जीव भाव एक परिणामिक, आत्मा द्रव्य, भाव जीव भाव पाँचोंही, आत्मा द्रव्य बरजीनें सात ॥ छवमें नवमेंका बोल कहणा ।

३२ बत्तीसमें बोलै अठारह पाप ठाणांरो उदय उपसम खायक खयोपसम छवमें कोण नवमें कोण ।

छवमें पुद्गल, नवमें तीन अजीव, पाप, बंध ।

३३ तेतीसमें बोले अठारे पाप ठाणारो उदय उपसम चायक चयोपसम निष्पन्न छवमें कोण नवमें कोण ?

उदय निष्पन्न छवमें जीव नवमें जीव आश्रव।
उपसम निष्पन्न छवमें जीव नवमें जीव सम्वर।
सतरा (१७) कातो चायक निष्पन्न छवमें जीव नवमें जीव संबर, येक मिथ्या दर्शन सल्यको छवमें जीव नवमें जीव संबर निर्जरा, चयोपसम निष्पन्न छवमें जीव नवमें जीव सम्वर निजरा।

३४ चौतीसमें बोलै बारह व्रत को द्रव्य खेत्र काल भाव राखै तेहनी बिगत।

पहला व्रतसे आठमां व्रत ताई तो द्रव्य थकी आघार राखे ते द्रव्य उपरान्त त्याग, खेत्रथी सर्व खेत्रमें, काल थकी जावजीव, भाव थकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा। नवमें व्रत द्रव्य खेत्र उपर परिमाणो कालथकी येक महुरत भाव थी रागद्वेष रहित, उपयोगसहित, गुण थकी संवर निर्जरा दशमु व्रत द्रव्य खेत्र भाव गुणातो ऊपर परि-

माथे, कालथकी राखे जितनों काल । इग्यारमो व्रत को द्रव्य खेत्र भाव गुणातों उपर परिमाणे कालथकी अहोरात्रिपरिमाण ।

बारमूं व्रत को द्रव्य थकी साधूजी नैं कल्पे ते चौदह प्रकारनो द्रव्य, खेत्र थकी कल्पे ते खेत्रमें कालथकी कल्पे ते कालमें, भावथकी रागद्वेष रहित, गुणथकी संवर निर्जरा ।

३५ पैंतीसमें बोले नव पदार्थमें निजगुण कितना परगुण कितना ?

निज गुणतो पाँच । जीव, आश्रव, संवर निर्जरा मोक्ष ।

परगुण ४ (च्यार) । अजीव, पुन्य, पाप बंध ।

३६ छतीसमें बोले दर्शन मोहनीय कर्मको उदय उपसम क्षायक क्षयोपसम कितना गुण ठाणां पावे दर्शन मोहनीयको उदय निष्पन्न पहला गुणठाणांसे सातमा ताई, चारित्र मोहनीय को उदय निष्पन्न पहिलासें दशमां ताई ।

चारित्र मोहनीको उपसम निष्पन्न येक इग्यारमें हीं गुणठाणों ।

दर्शन मोहनीय को उपसम निप्पन्न चौथा से इग्यारमें गुणठाणां ताई ।

दर्शन, मोहनीय को क्षायक निप्पन्न चौथा सें चौदमें गुणठाणें तथा सिद्धांमें ।

चारित्र मोहनीय को क्षायक निप्पन्न बारमें तेरमें चौदमें गुणठाणें ।

दर्शन मोहनीय को क्षयोपसम निप्पन्न पहला सें सातमां गुणठाणें ताईं ।

चारित्र मोहनीयको क्षयोपसम निप्पन्न पहला सें दशमां गुणठाणां ताईं ।

३७ सैंतीसमें बोले आठ आतमांमें मूलगुण कितनी उत्तर गुण कितनी —

मुल गुण एक चारित्र आतमा, उत्तर गुण एक जोग आतमा । बाकी दोनू नही ।

३८ अड़तीसमें बोले आठ आतमा किसे भाव किसी आतमा—आतमा तो आप आपरी, द्रव्य आतमा तो भाव एक परिणामी भाव, कषाय आतमा भाव दोय उदय परिणामी, जोग आतमा भाव च्यार

छुपसम बरजीने, उपयोग ज्ञान वीर्य यह तीन आत्मा भाव तीन क्षायक क्षयोपसम परिणामिक, दर्शन आत्मा भाव पांचोंही ।

चारित्र आतमा भाव च्यार उदय बरजी ।

३९ गुणचालीस में बोलै आठ आत्मा छव में कोंण नव में कोण ।

द्रव्य आत्मा छव में जीव नव में जीव, कषाय आत्मा छव में जीव नव में जीव आश्रव ।

योग आत्मा छव में जीव नव में जीव आश्रव निर्जरा ।

उपयोग, ज्ञान, वीर्य यह तीन आत्मा छव में जीव नव में जीव निर्जरा ।

दर्शन आत्मा छव में जीव नव में जीव आश्रव सम्बर निर्जरा ।

चारित्र, आत्मा, छवमें जीव नव में जीव संवर ।

४० चालीसमें बोलै आश्रव का (बीस) २० बोल किसे भाव किसी आत्मा ।

भाव तो उदय परिणामिक बीसूं ही बोल ।

मित्याात्व दर्शन आत्मा, अव्रत प्रमाद अनेरी। कषाय–कषाय आत्मा। बाकी सोलह आश्रव योग आत्मा।

४१ एकचालीस में बोलै संबरना २० (वीस) बोल किसे भाव किसी आत्मा।

अकषाय संवर भाव तीन उपसम चायक, परिणामिक, आत्मा अनेरी।

अजोग मन बचन काया यह च्यार संवर भाव एक परिणामिक आत्मा अनेरी। सम्यक् ते संवर भाव ४ उदय बरजीनें, आत्मा दर्शन। अप्रमादी संवर भाव च्यार–उदय–बरजी आत्मा अनेरी। बाकी १३ संवरका बोल भाव ४ उदयबरजीनें आत्मा चारित्र।

४२ बयांलीसमें बोलै पंद्रह जोग किसे भाव किसी आत्मा,–जीव, अजीव तथा रूपी अरूपी की विगत।

❋ भावकी विगत ❋

सत्यमन जोग सत्य भाषा व्यवहार मन जोग व्यवहार भाषा, औदारिक यह पांच जोग भाव च्यार उपसम बरजीने।

औदारिकको मिश्र, कार्मण यह दोय जोग भाव तीन—उदय क्षायक परिणामिक।

असत्य मनजोग, मिश्र मन जोग, असत्य भाषा, मिश्र भाषा, वैक्रैयनो मिश्र, आहारिकनूं मिश्र, यह छव जोग भावे दोय—उदय, परिणामिक; आहारिक वैक्रै यह दोय जोग भाव ३ उदय क्षयोपसम परिणामी—पंदरह ही जोग आत्मा।

* सावद्य निर्वद्य कितना *

असत्य मन जोग असत्य भाषा, मिश्र मन जोग मिश्र भाषा, आहारिकनूं मिश्र, वैक्रैयनूं मिश्र यह छव योग तो सावद्य छै, बाकी नव योग सावद्य निर्वद्य दोनूं छै।

पनरह योग जीव के अजीव द्रव्ये अजीव भावे जीव।

पनरह योग रूपी के अरूपी ! द्रव्ये रूपी भावे अरूपी।

४२ तयांलीसमें बोले पांच इन्द्रियां की पूछा।

पांच इन्द्री जीव के अजीव ? द्रव्ये अजीव भावे जीव। पांच इन्द्री रूपी के अरूपी ?

द्रव्ये रूपी भावे अरूपी । पांच इन्द्रियां में कामी कितनी भोगी कितनी ? कामी तो दोय श्रुत इन्द्री, चक्षु इन्द्रीय, अने भोगी बाकी तीन इन्द्रियां । पांच इन्द्रियांमें चेत्री कितनी अचेत्री कितनी ? एक स्पर्श इन्द्री तो चेत्री बाकी च्यार इन्द्रियां अचेत्री ।

द्रव्यथी इन्द्री कितनी भावथी कितनी ? द्रव्यथी तो आठ ते कहे छै दोय कान, दोय आंख, दोय नांक, जीह्वा, स्पर्श । भाव थी पांच श्रुत चक्षु घ्राणरस स्पर्श एवं छवमें कोण नवमें कोण ? भाव इन्द्री छवमें जीव नवमें जीव निर्जरा ते क्षिणन्याय दर्शनावरणी कर्म क्षय उपसम थयां थी जीव इन्द्रीय पणो पाम्यो इण न्याय

४४ चमालीसमें बोले जीव परिणामीरा १० बोल किसे भाव किसी आत्मा ।

गति परिणामी भाव दोय—उदय परिणामी आत्मा अनेरी । कषाय परिणामी भाव उदय परिणामिक, आत्मा कषाय, वेद परिणामी भाव उदय परिणामी आत्मा कषाय, तथा

असेरी। योग परिणामी, लेस्यापरिणामी, भाव
क्षयार–उपसम वरजीने, आतमा योग। इन्द्रीय
परिणामिक भाव दोय–क्षयोपसम परिणामि,
आतमा उपयोग। ज्ञान परिणामिक, उपयोग
परिणामिक, भाव तीन–क्षायक क्षयोपसम
परिणामी, आतमा आप आपरी। दर्शन
परिणामी भाव पांचोंहीं, आतमा दर्शन।
चारित्र परिणामी भाव क्ष्यार–उदयवरजीनें,
आतमा चारित्र।

३५ पैंतालीसमें बोले जीव परिणामीरा १० बो-
ल छवमें कोण नवमें कोण।

गतिपरिणामी, छवमें जीव नवमें जीव, जा-
णवो, वेद परिणामी, कषायपरिणामी, छवमें
जीव नवमें जीव आश्रव। योग लेश परि-
णामी छवमें जीव नवमें जीव आश्रव नि-
र्जरा। दर्शन परिणामी छवमें जीव नवमें
जीव आश्रव संवर निर्जरा इन्द्रीय उपयोग
ज्ञान परिणामी छवमें जीव नवमें जीव नि-
र्जरा। चारित्र परिणामी छवमें जीव नवमें
जीव संवर।

४६ छयांलीसमें बोलै चौदह गुणठाणांवाला में शरीर कितना पावै ।

पहला से पांच गुणठाणां तांई तो शरीर ४ पावै—आहारिक टल्यो, छठे गुण ठाणें शरीर पावे पांचों हीं; सातमां गुणठाणां सें चौदमा गुणठाणां तांई शरीर पावै ३ औदारिक, तेजस, कार्मण । पांच शरीर चौस्पर्सीके आठ स्पर्सी ? च्यार शरीर तो आठ स्पर्सी छै, कार्मण चौ स्पर्सी छै ।

पांच शरीर जीव के अजीव ? अजीव छै ।

४७ सातचालीसमें बोलै २४ दंडका में लेस्या कितनी पावै ।

सात नारकी १, तेउ २, वायु ३, बेइन्द्री ४, तेइन्द्री ५, चौइन्द्री ६, असन्नी मनुष्य ७, असन्नी तिर्यंच ८, यांमें तो ३ मांठी लेस्या पावै ।

पृथ्वीकाय १, अपकाय १, वनस्पतीकाय १ भवन पतिका १०, वानव्यंतराका १ यां चौदह दण्डकां में लेस्या पावै ४ पद्म शुक्ल वरजीनें जोतषी अनें पहला दूजा देवलोक का देवता

में लेस्या पावै १ तेजू । तीजा सें पांचमांताई पद्म । छट्ठा देवलोक सें सरवार्थ सिद्ध ताई पावै १ शुक्ल । सन्नी मनुष्य सन्नी तिर्यंच में लेस्या पावै छव ।

सर्व जुगलिया में ४ च्यार पद्म शुक्ल टली ।

४८ अडतालीसमें बोलै अजीव नां चौदह भेद ऊंचा नीचा तिरछा लोक में कितना ? ऊंचो लोक अने अढ़ी द्वीप बारै १० पावै । धर्मास्ति अधर्मास्ति आकाशास्तिको खंध अने काल यह च्यार टल्या ।

नीचो लोक अढ़ाई द्वीपमें ११ पावै काल और बध्यो । ऊंची दिशमें ११ पावै, नीची दिशमें १० पावै ।

४६ एगुणपचासमें बोलै च्यार गति ४, पांच जाति ६, छव, काय १५, चौदह भेद जीवका २६, चौबीस दण्डक एवं ५३, सूक्ष्म ५४, बादर ५५, त्रश ५६, स्थावर ५७, पर्यासो ५८, अपर्यासो ५६, यह गुणपट बोल किसो भाव किसी आतमा ? भाव उदय परिणामी; आत्मा

अनेरी, छवमें कौण नवमें कौण ? छवमें जीव नवमें जीव । तथा सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं ।

५० पचासमें बोलै २२ परिशह किसे किसे कर्म के उदय तथा छवमें नवमें कौण ।
११ इग्यारह परिशह तो वेदनी कर्मना उदय सें ।
२ दोय ज्ञानवरणी कर्मना उदय सें ।
८ आठ मोहनीय कर्मना उदय सें ।
१ अन्तराय कर्म का उदय सें ।
छवमें जीवमें जीव निर्जरा ।

५१ इक्यावनमें बोलै तेवीस पदवी किस्यो भाव किसी आत्मा ।
१६ उगणीस पदवी तो भाव २ उदय परिणामिक, आत्मा अनेरी ।
१ केवली महाराज की पदवी भाव दोय क्षायक परिणामिक, आत्मा उपयोग ।
१ साधुजी महाराज की पदवी भाव ४ उदय वरजी, आत्मा चारित्र ।
१ श्रावक की पदवी भाव २ क्षयोपसम परि

गामी, आत्मा देशचारित्र ।

१ समदृष्टी की पद्वी भाव ४ उदय बरजी, आत्मा दर्शन ।

उगणीस पद्वी तो छवमें जीव नवमें जीव, समदृष्टी की अनें केवली की पदवी छवमें जीव नवमें जीव निर्जरा । साधू श्रावककी पद्वी छवमें जीव नवमें जीव संवर ।

५२ बावनमें बोलै नव तत्वका ११५ (एकसह पंद्रह) बोल की विगत ।

जीव कितना—जीव तो ७० तेहनी विगत जीवका १४, आश्रवका २०, संवरका २०, निर्जराका १२, मोक्षका ४, एवं ७० ।

अजीव ४५—तेहमें अजीवका १४, पुन्यका ६ पापका १८, बंधका ४ एवं ४५ ।

सावद्य कितना निर्वद्य कितना ।

निर्वद्य तो ३६ तिणमें निर्जरा का १२, संवर का २०, मोक्षका ४ यह ३६ छत्तीस ।

सावद्य १६ तिणमें आश्रवका १६ (मनवचन काया योग ए च्यार टल्या) ।

दोनूँ नहीं ५६ तिणमें ४५ अजीवका १४, जीवका यह सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं ।

च्यार आश्रव मन वचन काया जोग यह सावद्य निर्वद्य दोनूं छै ।

आज्ञा मांही कितना—३६ ऊपर परमाणे ।

आज्ञा बाहर कितना—१६ आश्रवका ।

आज्ञा मांही बाहर कितना—४ मन वचन काया योग यह च्यार आश्रवका ।

५६ बोल आज्ञा मांही बाहर दोनूं नहीं ।

रूपी कितना अरूपी कितना ? ।

अरूपी तो ८० तिणमें ७० तो जीवका, १० अजीवका(पुद्गलका च्यार टल्या)।४पुद्गल का ६पुन्यका, १८पापका ४बंधका। यह ३५ रूपी छै ।

एकसह पंदरह बोलांमें छांडवा आदरवा जा- णवा योग कितना ।

जांणवा योगतो ११५ आदरवा योग ३६, निर्वद्य कह्या सो; अने छांडवा योग ७६

तिणमें अजीवका ४५, जीवका १४, आश्रवका २०, एवं ७६ थया ।

॥ किसे भाव ॥

४५ अजीवका तो भाव एक परिणामिक; १४ जीवका २० आश्रवका यह चौतीस बोल भाव दोय उदय परिणामिक ।

संवरका २० बोल में से १५ तो भाव च्यार उदय वरजीनें, अनें अकषाय संवर भाव ३ उपसम चायक परिणामिक; अयोग मन वचन काया यह भाव एक परिणामिक ।

निर्जराका १२ बोल भाव ३ चायक चयोपसम परिणामिक ।

४ मोक्षका यामें से ज्ञान तप दोय तो भाव तीन—चायक चयोपसम परिणामी; अनें दर्शन चारित्र यह दोय भाव च्यार—उदय वरजीनें ।

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

* जाणा पणांका २५ बोल *

१ देव अरिहन्त, गुरु निग्रंथ, धर्म केवली परूप्यो यह तीन अमूल्य रत्न छे ।

२ जीव अजीव, पाप पुन्य, धर्म अधर्म, व्रत अव्रत, आज्ञा अणआज्ञा, यथार्थ जाणियां विना समकित नहीं, समकित विना चारित्र नहीं तथा मुक्ति नहीं, उघाडे मुख बोल्यां धर्म नहीं ।

३ साधू का भेष पहन कर साधू नाम धराणे सें साधू नहीं, जैसे हीं पंचम् गुणस्थान स्पर्श विना श्रावक नहीं; छ द्रव्य, नव तत्व, च्यार गति छ काय, देव गुरु धर्म ओलख्यां सें सम्यक्त्वी जाणवो ।

४ असंजती जीवको जीवणो वंछे ते राग मरणो वंछे ते द्वेष संसार समुद्र सें तिरणो वंछै ते वीत राग देवको धर्म ।

५ जीव जीवे ते दया नहीं, मरे ते हिन्सा नहीं मारण वालानें हिन्सा, नहीं मारे ते दया ।

६ पृथ्वी पाणी वनस्पति अग्नी वायरो (हवा) अशस्त्र में बेन्द्री से पंचेन्द्री तक यह छऊं कायाने

मारैनहीं मरावै नहीं मारतां प्रते भलो जाणैं नहीं, तेह दया छै, भय नहीं उपजावै ते अभय दान छै ।

७ श्रावक त्याग्यं आहार भोगवे ते अव्रत छै तेहथी पापकर्म लागै छै; देशथकी वा सर्वथकी त्यागकरै तेह व्रत छै संवर धर्म छै मन वचन काया का शुभजोग वरतावे ते निर्जरा धर्म तिणथी पुन्य कर्म लागै छै ।

८ गृहस्थ खावे पीवै, दूजानैं खुवावे पावै, खावतां पीतां प्रते भलो जाणै ते अधर्म अव्रत आश्रवद्वार, तेहथी अशुभ पापकर्म लागैं छै ।

९ सर्व सावद्य जोगका त्यागकरी, पँच महा व्रत पालै तेह साधू, नहीं पालै ते असाधू, देशथकी त्यागकरी शुद्ध देवगुरु धर्मकी आराधनाकरै, संसार सगपण अनित्य जाणी, साधूपणांका मनरालै श्रमण निर्ग्रंथ की उपाशना करै ते श्रमणोपासक

१० अठारह पाप सेवाका त्यागकरै, तीन करण तीन जोगसें सावद्य जोग पचखै, साधू तणीपर गोचरीकरै, पडिमा आदरै, पादोपगमनादि सँथारो करे, साधू पणो नहीं पचखै, तो श्रावक ही छै गुणस्थान पांचमो ही पावे, उणनैं साधु नहीं

कहिजे, आनन्दजीनें संथारामें अंतसमांताई उपां-शगदसा सूत्रमें गृहस्थ कह्यो छै ।

११ शुद्ध साधु मुनिराजनें सुजतो निर्दोष आहारसणी दियां कर्म निर्जरा होय, तथा कल्याणकारी कर्म ते पुन्य बँधै, प्रति सँसारकरै, शुभ दीर्घ आयु बांधे, ठाणांग भगवती विपाक आदि सूत्रांमें घणीजगां कह्यो छै ।

१२ सर्व व्रतधारी साधू ते संजती छट्ठा गुण स्थानसें चौदमां ताईं, अव्रती अपच्चखाणी ते असंजती पहला गुणस्थानसे चौथा ताईं देश व्रत-धारी व्रताव्रती श्रावक ते पंचम गुणस्थान जाणदो त्यागकरै ते व्रत देश संवर, आगार राख्यो सो सेवै सेवावे भलो जाणें तें अव्रत आश्रव छै, सुयगडांग उववाई आदि घणां सूत्रांमें विस्तार छै।

१३ असँजती अव्रती अपच्चखाणी नें च्यारू आहार सुजतो असूजतो निर्दोष तथा दोष सहित पाडिलाभै तो एकान्त पाप, निर्जरा नथी, भगवती सुत्र के आठ में शतक छट्ठे उद्देसे कह्यो छै ।

१४ साता दियां साता होय यह परूपणां वाला नें भगवान सूत्र सुयगडांग अध्येन३ उद्देसे ४

में इम कह्यो छै—आर्य मार्ग थी न्यारो १, समाधि मार्ग थी अलगो २, जिन धर्म की हेलणा रो करण हार ३, अल्प सुखां रे वास्ते घणां सुखांरो हारण हार ४, असत्य पक्ष थी अमोक्षरो कारण ५, लोहवांणीयां परे घणो झूरसी ६ ।

१५ त्रश जीव नें साधू अनुकम्पा अर्थे बांधे बंधावे बांधता नें भलो जानें तो चौमासी प्रायश्चित्त कह्यो, तथा बंधीया हुया जीवानें अनुकम्पाआंणी छोड़े छुड़ावे छोड़तां प्रते भलो जाणें तो चौमासी प्रायश्चित्त आवे, सूत्र निसीथ उद्देसे १२ में कह्यो छै ।

१६ चूलणी पिया श्रावक पोसा में ३ पुत्रा नें मारतो देखी रुचाया नहीं, माता नें छुड़ावण उठ्यो तो पोसो भागो, उपासग दसा सूत्र अध्ययन तीजे कह्यो छै, तथा अरणक आदि श्रावक पण मोह अनुकम्पा नहीं करी ।

१७ साधू मुनिराजनें लब्ध फोड़णी नहीं, सूत्र पन्नवणा पद ३६ में कह्यो छै तेजुलेस्या फो ड्यां जघन्य ३ उत्कृष्ट ५ क्रया लागे, इम वैक्रय लब्धी आहारिक लब्धी फोड्यां क्रिया कही छै

तथा भगवती शतक ३ उद्देश ४ वैक्रिय लब्धी फोडै तिणनें माई कह्यो, विना आलोयां मरै तो विराधक कह्यो छै ।

१८ असंजतीनें दान देवा दीवावाका त्याग आगे पण बडा २ श्रावकां किया सूत्रो में चाल्या छैः उपासग दशामें आनन्दजी अन्यतीरथी ते असंजती ने देवा दीवावाका त्याग भगवंत पासै कीयाछै धर्म होयतो त्याग किसकरे ।

१९ देवल प्रतिमा कारणै पृथ्वीकाय हणै तिणनें भगवान् आचारंग तथा प्रश्न व्याकरण सूत्रमें अहित अबोध को कामी कह्यो, तथा धर्म हेत जीवहणयां दोष नहीं इम परूपै ते अनारजनो वचन छै आचारंग में कह्यो छै, एहवो अशुद्ध परूपणावालो मिथ्याती मंद बुद्धि छै ।

२० सर्व प्राण भूत जीव सत्वनें दुःख उपजावे नहीं, भय उपजावे नहीं, झुरावे नहीं, प्रतापना नहीं देवै, तो साता वेदनी नो बंध सूत्र भगवती शतक ७ में उद्देसे ६ कह्यो छैः परन्तु एकेन्द्री मार पंचेन्द्री पोख्यां धर्म किसी जगां नहीं कह्यो ।

२१ साता वेदनी, मनुष्य देवतानो आयुष,

शुभ नाम, ऊंचगोत्र यह ४ शुभ कर्म ते पुन्य छै तेहनीं करणी निर्वद्य जिनआज्ञामें छै, यह पुण्यः नीं करणी सूत्र भगवती शतक ८ में उद्देसे ६ में कही छै।

२२ साधु मुनिराज आहार उपधादिक भोगवै तेह निरवद्य छै। दशवैकालिक अध्ययन ४ चौथे गाथा ८ मी में कह्यो छै जयणा युत आहार करतां पाप नहीं, तथा अध्ययन ५ में साधुनी गोचरी असावद्य मोक्ष साधवानों हेतु कह्यो। सूत्र भगवति शतक १ उद्देश ६ में कह्यो छै साधु शुद्ध आहार भोगतां (७) सात कर्म ढीः लापडे तथा दशवैकालिक सूत्रमें शुद्धगति कही छै।

२३ मिथ्याती उपवास बेलादिक तपकरे अः थवा साधु मुनिराजनें निर्दोष आहार पाणी बहिः रावे तथा मन बचन कायाका शुभ जोग वर्त्तावे यह निर्वद्य करणी जिन आज्ञामें छै, तेहथी पाप क्षयहोय पुन्यबंधे, सूत्र भगवती शतक ८ में उद्देसे १० में ज्ञान बिना क्रिया करे तेहनें देश आराधक कह्यो छै, मेघ कुमार हाथीरा भवमे सुः

सला ज्ञानवरनों दयाकरी आपणों पग ऊंचोराख्यो घणोंकष्ट सह्यो तिणसूं प्रति संसार करी मनुष्यनों आयुष बांध्यो, उत्तराध्ययन ७ में मिथ्यातीनें निर्जरा आश्री शुव्रती कह्यो छै, भगवती शतक ६ में उद्देसे ३१ में असोच्चा केवली अधिकारे प्रथम शुभाठाणारा धणीरा शुभ अध्यवसाय शुभपरिणाम विशुद्धलेश्या कही छै।

२४ साधू मुनिराज अचित निर्दोष आहार भोगवे अनेंठंडा बासी आहार पाणीमें बेन्द्री आदि जीव हुवें ते नही भोगवे, परन्तु बेइन्द्रियादि तथा फूलणादि नही होवे तो ठंडो बासी आहार भोगवतां दोष नहीं:—उत्तराध्ययन ८ में गाथा १२ मी में सीतल पिन्ड आहार लेणो कह्यो, तथा आचारंगश्रुतखंध १ अध्ययन ९ में उद्देसे ४ चौथे गाथा १३ मी में भगवान् ठंडो आहारे ओल्यो लीयो कह्यो छैः तिहां टीकामें बासीभात, कह्यो तथा प्रश्न व्याकरण अध्ययन १० में सीतल बासी कह्यो, विणठोरस एहवो आहार करीद्वेष नहीं करवो इम कह्यो छै।

२५ गृहस्थनें सूत्र भणावा की जिण आज्ञा नहीं—

प्रश्न व्याकरण अध्ययन ७ में मैं महा ऋषि नैं हीं सूत्र भणवारी आज्ञा कही; देवेन्द्र नरेन्द्र अर्थे भणौं तथा अन्य तीर्थी गृहस्थ नैं वांचणी देवै देवावे देवता भते भलो जाणै, चौमासी प्रायश्चित्त आवै निसीथ उद्देसे ६ मैं कह्यो छै, साधू नें भी कल्प आयां सूत्र भणवा सूत्र व्यवहार उद्देसे १० में कह्यो छै तिणरी विगतः दिक्षालीयां ३ वर्ष हुयां निशीथ, ४ वर्ष हुयां पछै सुयगडांग, ५ वर्ष पछै बृहत् कल्प व्यवहार दसा श्रुत स्कन्ध; ८ वर्ष ठाणांग समवायंग, १० वर्ष दिक्षालियां पछै भगवती कल्पै इम कह्यो छै तथा उववाई प्रश्न २० मैं श्रावकांनें अर्थरा जाणकार कह्या छै।

यह २५ बोल जयाचार्य कृत प्रश्नोत्तर मांहि थी सूक्ष्म पणे धारया छै विशेष बेरावार भर्म विध्वंसणादि में बांचवो ॥ इति ॥

॥ गुलाबचन्द लुणीयां ॥
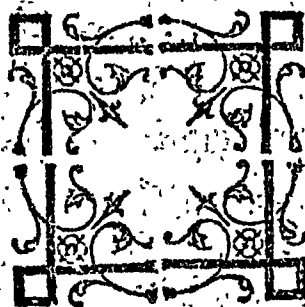
देवगुरु धर्मनों संक्षेप ओलखणा ।

देव अरिहन्त, गुरुनिग्रन्थ, धर्म केवली प्ररूप्यो, यह तीन अमूल्य रत्न छै, यानें यथार्थ जाणकर आस्था प्रतीत राखैं ते सम्यक्त्व जाणवो ।

१ देव अरिहन्तकिसा—तेहनी ओलखना कहेछै, अठारह दोष रहित बारह गुणां सहित, चौतीस अतिशय, पैंतीस वचनातिसय, एक हजार आठ शुभ लक्षण का धारणहार, केवल ज्ञानी, केवल दर्शनी, ज्ञानावरणी, दरिशनावरणी, मोहनीय अन्तराय यह च्यार घातिक कर्मों करके रहित, तेरमा गुण स्थान सहित, ते वीतराग प्रभू रागद्वेषरूपी अरि कहतां वेरीनें हण्या तिण नें अरिहन्त कहिजे, ज्ञानवन्त थया तिणसूं भगवन्त कहिजे, साधू साध्वी श्रावक श्राविका रूप च्यार तीर्थ प्रवर्ताया तिणसूं तीर्थंकर कहिजे, तेहनी च्यार निक्षेप ओलखना जाणवी श्री अनुयोगद्वार सूत्र में कह्योछै, जीव या अजीव तिर्थंकर को नाम हो सो तीर्थंकरका नाम निक्षेपा, स्थापना करे ते स्थापना निक्षेपा, तीर्थंकर होनेवालाजीव तिर्थंकरोंका गुण रहित हो तो द्रव्यनिक्षेपा, और तिर्थंकरों का गुणसहित हो तो भाव निक्षेपा है यह च्यार निक्षेपा कह्या, इण में गुण सहित तरण तारण भाव निक्षेपो छै ते वन्दवा जोग छै, बाकी तीन निक्षेपा गुण रहित छै ते वन्दवा जोग नहीं, गुण सहित नें नमस्कार कीयां धर्म पुन्य थाय छै । गुण सहित अरिहन्त देवाधिदेव नें धर्म देव जाणवो ।

दोहा—जिणमार्ग में देखल्यों, गुणी लारे छै पूजा ।
निगुणा ने पूजैतिके, मारग छै दूजा ॥

२ गुरु निग्रन्थ ते ग्रन्थ कहतां धन रहित ते निग्रन्थ छै, शुद्ध साधू पंच महाव्रत धारी उग्रविहारी शुद्धआचारी ब्रह्मचारी सतरह भेदः संयम पाले बयांलीस दोष टालकर आहार पाणी लेवै, पांच इन्द्रियां नें जीते, बावीस परिषह सहन करै, पंच सुमति तीन गुप्त पञ्च महाव्रत यह तेरा पन्थ में प्रवर्ते ते गुरु जाणवा ।

३ धर्म केवल ज्ञानी प्ररूप्यो ते जिन आज्ञा में धर्म, आज्ञा बाहर अधर्म, असंयती जीव को जीवणों वांछे ते राग, मरणों वांछे ते द्वेष, संसारमयी समुद्र सें तरणों वांछे ते वितराग प्ररूपितधर्म जाणवो, दुरगति पड़तां जीवनें धारी राखै ते धर्म जाणवो, ते विनय मूल धर्म दोय प्रकारे छै, श्रमण और श्रमणोपासक, श्रमणधर्म तो पञ्चमहाव्रत रूप, और श्रमणोपासक धर्म द्वादश व्रत रूप छै, ते धर्म दोय प्रकार से नीपजै छै ते कहछै निरजरा का बारह भेदसूं तथा सम्वर का वीस बोल सूं यां विना सर्व अधर्म छै ते अशुभ आश्रव छै, तेरथी अशुभ कर्म बँधे छै, आज्ञा मांहिली करणी करतां अशुभ कर्म की निरजरा हूवै तथा शुभकर्म ते पुन्य बंधे छै, यह रीति ओलखना; कुपात्र दान में पाप, सुपात्र दान में पुन्य ते शुभ जोग प्रवर्त्यां थाय छैः हिन्सा, झूठ, चौरी, मैथुन परिग्रह, यह पंच आश्रवद्वार सेवै ते कुपात्र, नहीं सेवै ते सुपात्र छै ।

॥ गुलाबचन्द लूणियाँ ॥

अथ लघु दण्डक लिख्यते

पहलो शरीर द्वार ।

"शरीर ५—औदारिक १, वैक्रिय २, आहारिक ३, तेजस ४, कार्मण ५,

सातों ही नारकी और सर्व देवताओं में शरीर पावै तीनः—वैक्रिय १ तेजस २ कार्मण ३ ।

च्यार थावर, तीन विकलेन्द्री में, तथा असन्नी तिर्यंच, असन्नी मनुष्य, सर्व जुगलियां में शरीर पावै ३—औदारिक १ तेजस २ कार्मण ३

वाऊकाय, सन्नी तिर्यंच पंचेंद्री मनुष्यणी में शरीर पावै ४ औदारिक १, वैक्रिय २, तेजस ३, कार्मण ४ ।

गर्भज मनुष्य में शरीर पावै पांचुं ही ।।"

सिद्धां में शरीर पावै नहीं ।।"

।। इति प्रथम शरीर द्वारम् ।।

२ दूसरो अवगाहना द्वार ।

जघन्य अवगाहनां आँगुलको असंख्यात ऊं-भाग, उत्कृष्टी हजार जोजन जाभेरी ।

उत्तर वैक्रिय करतो जघन्य तो आंगुलको सं-संख्यातऊं भाग, उत्कृष्टी लाखजोजनजाभेरी ।

पहली नारकीकी अवगाहनां उत्कृष्टी ७॥। धनुष्य ६ आंगुलकी ।

दूजी नारकी की अवगाहनां साढा पंद्रा १५॥ धनुष और १२ आंगुलकी ।

तीजी नारकी की अवगाहनां ३१। धनुषकी ।

चोथी नारकी की अवगाहनां ६२॥ धनुषकी ।

पांचमी नारकी की अवगाहनां १२५ धनुषकी ।

छट्टी नारकी की अवगाहनां २५० धनुषकी ।

सातमी नारकी की अवगाहनां ५०० धनुषकी ।

जघन्य में सातूहीं नारकी की आंगुलको असंख्यातऊं भाग, उत्तरवैक्रिय करै तो जघन्य तो आंगुलको संख्यातऊं भाग, उत्कृष्टी आप आ-पसू दूणी ।

देवतांकी अवगाहना ।

२५ परमाधामी, १० भुवनपती, वानव्यंतर, त्रिंभूमका जोतिषी, पहला, तथा दूजा देवलोककी

अवगाहना ७ (सात) हातकी ।

तीसरा तथा चौथा देवलोक की ६ (छव) हातकी पांचवां तथा छट्ठा देवलोक की अवगाहनां ५ (पांच) हातकी ।

सातवां तथा आठवां देवलोक का देवतां की अवगाहनां ४ च्यार, हातकी । नवमां, दशमां, ग्यारवां, तथा बारवां की (३) तीन हातकी अवगाहनां होय । ६ नवग्रैवेयक का देवांकी २ (दोय) हातकी ।

पांच अनुत्तर विमानका देवांकी अवगा० १ एक हातकी ।

देवता उत्तर वैक्रियाकरै तो जघन्य तो आंगुल को संख्यातऊं भाग, उत्कृष्टी लाख जोजन की अवगाहनां जाणो ।

बारवां देवलोक के ऊपरका देव वैक्रियकरै नहीं । च्यारथावर तथा असन्नीमनुष्यकी जघन्य, उत्कृष्टी, आंगलको असंख्यात वों भाग ।

वनस्पतिकायकी अव० जघन्य तो आंगुल को असंख्यातऊं भाग, उत्कृष्टी हजार जोजन जाझेरी कमल फूलकी अपेक्षा ।

बेइन्द्री की अव० १२ जोजनकी, उत्कृष्टी ।
तेइन्द्री की अवगाहना ३ कोसकी, उत्कृष्टी ।
चौरेन्द्रीय की अवगा० ४ कोसकी उत्कृष्टी ।
अनें जघन्य आंगुल के असंख्यातवें भाग ।

तिर्यंच पंचेन्द्री का ५ भेद—

१ जलचर सन्नी असन्नी की १०००जोजन की ।

२ थलचर सन्नी की ६ कोसकी, असन्नी की प्रत्येक कोसकी ।

३ उरपुर सन्नीकी १००० जोजनकी, असन्नी की प्रत्येक जोजनकी ।

४ भुजपुर सन्नी की प्रत्येक कोसकी, असन्नी की प्रत्येक धनुषकी ।

५ खेचर सन्नी असन्नी की प्रत्येक धनुष की तिर्यंच पंचेन्द्री उत्तर वैक्रिय करे तो जघन्य आंगुलके संख्यात में भाग उत्कृष्टी ९०० जोजनकी करे, मोटी अवगाहना वालो उत्तर वैक्रिय करै नहीं । ते जुगालिया जाणवा ।

॥ सन्नी मनुष्य अवगाहना ॥

५ भर्त, ५ एरभर्त का मनुष्यांकी, अवसर्पणी काल के पहले आरे, लागतां ३ कोस की उतरतां २ कोसकी दूजे आरे लागतां २ कोसकी उतरतां १ कोसकी, तीजे आरे लागतां १ कोसकी उतरतां ५०० धनुषकी, चौथे आरे लागतें ५०० धनुषकी उतरतां ७ हातकी, पांचवें आरे लागतां ७ हात की उतरतां १ हाथकी, छटे आरे लागतां १ हात की उतरतां १ हात मेठरी जाणवो।

इसी तरे उतसर्पणी में चढती कहणी। वेके लाख जोजन जाम्फेरी करें; ५ हेमवय, ५अरुणवय का युगलियां की १ कोस की, ५ हरिवास ५ रम्यक वास का की २ कोस की, ५ देवकुरू, ५ उत्तर कुरूकां की ३ कोसकी, ५६ अन्तर द्वीपकां की ८०० धनुष की, ५महा विदेह खेत्र का मनुष्यां की ५०० धनुष की।

सिद्धां की जघन्य १ हात ८ आंगुल की, उत्कष्टी ३३३ धनुष, १ हात ८ आंगुल की।

इति अगाहना द्वारम्

३ तीसरो संघयंण द्वार।

संघयण ६ तेहनां नांम वज्र ऋषभनाराच १ ऋषभनाराच २, नाराच ३, अर्ध नाराच ४, केल को ५, छेवटो ६ एवं ।

नारकी देवता में संघयण पावै नहीं ।
५ थावर, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यंच में संघयण १ छेवटो गर्भज मनुष्य तिर्यंच में संघयण पावै ६, छहु ही, सर्व युगलिया त्रेसठ सलाका पुरुषों मे संघयण वज्र ऋषभ नारा-च पावै ।

सिद्धां में संघयण पावै नहीं ।

इति संघयण द्वारम् ।

४ चौथो संठाण द्वार ।

संस्थान६—तेहनां नांम—समचौरंस १, निगोद परिमंडल २, साहिज ३, वावन्य ४, कुब्ज ५ हुंडक ६, ७ (सात) नारकी, ५ थावर, ३ विकलेंद्री, असन्नी मनुष्य तिर्यंच मे संठाण १ हुंडक ।

तिणमें पांच थावरकी विगत ।

पृथिवी काय को चंद मसूरकी दाल ।

अप्प कायको पाणी को बुद्बुदो ।

तेऊ कायको सूईको करनालो ।

वाऊ कायको ध्वजा पताका ।

वनस्पतिको नाना प्रकारका ।

सर्व देवता, सर्व युगालिया, तथा त्रेसठ शला-का पुर्षांमें समचौरस संस्थान;

गर्भज मनुष्य तिर्यचमें ६ छहुंही, सिद्धामें पावै नहीं,

इति संठाण द्वार ।

५ पांचमूं कषाय द्वार ।

कषाय ४—क्रोध, मान, माया, लोभ ।

२४ दंडकमें कषाय ४ पावै, मनुष्य अकषा-इपणा होय सिद्धा में कषाय नहीं ।

इति कषाय द्वारम् ।

६ छट्ठो संज्ञा द्वार ।

संज्ञा ४—आहार १, भय २, मैथुन ३, परिग्रह संज्ञा ४ । २४ दंडका में संज्ञा ४ पावै मनुष्य असंज्ञी बहुता पणाहोय, सिद्धां में संज्ञा नहीं ।

इति संज्ञा द्वारम्

७ सातमू लेश्या द्वार

सात नारकी में पावे ३ मांठी (द्रव्य लेश्या लेखवी) तेहनी विगत ।

पहली दूसरी में पावे १ कापोत ।
तीजीमें कापोत वाला घणां नील वाला थोडा ।
चौथी में पावे १ नील ।
पांचमी में नील वाला घणां, कृष्ण वाला थोडा, ।
छट्ठी में पावे १ कृष्ण ।
सातमी में पावे १ महाकृष्ण ।

भवनपति वानव्यन्तर, देवतां में लेश्या पावे ४ पद्म शुक्ल टली (द्रव्य लेखवी)

पृथ्वी अप्प वनास्पति काय में तथा सर्व युगलियामें लेस्या पावे ४ पहली ।

तेऊ वाऊकाय, ३ विकलेंद्री, असन्नी मनुष्य, तिर्यंच में लेस्या पावे ३ मांठी ।

जोतषी पहला दूजा देवलोक तथा पहला

किल्विषी में लेश्या पावै १ तेजू,

तीजा चौथा, पांचवां देवलोक तथा दूजा किल्विषी में पावै १ पद्म।

तीजा किल्विषी तथा छट्टा देवलोक सें सर्वार्थ सिद्धतांई पावै १ शुक्ल। केतलाइक मनुष्य अलेशी पणाहोय सिद्धां में लेश्या नहीं।

सन्नी मनुष्य तिर्यंच में लेश्या पावै ६ छहुंहीं।

इति लेश्या द्वारम्।

८ आठमुं इन्द्रिय द्वार।

इन्द्री ५ श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, रस, स्पर्श एवं ५ ७ नारकी, सर्व देवता, गर्भज मनुष्य गर्भज तिर्यंच, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यंच पंचे इन्द्री, सर्व जूगलिया, में इन्द्री ५ पावै। ५ थावरमें इन्द्री १ स्पर्श पावै, बेइन्द्रीमें २ इन्द्री होय—स्पर्श रस, तेइन्द्री में ३ इन्द्री होय—स्पर्श रस घ्राण चऊरिन्द्री में ४ होय श्रोत्रेंद्री बिना। मनुष्य नो इन्द्रियां पणाहोय, सिद्धांके इन्द्री होयही नहीं।

इति इन्द्रिय द्वारम्।

९ नवमुं समुद्घात द्वार।

समुद्घात ७ वेदनी १ कषाय २ मारणान्त ३ वैक्रिय ४ तेजस ५ आहारिक ६ केवल ७ ।
सात नारकी वाऊकाय में ४ पहली समुद्घात पावै, भुवनपति वाणव्यंतर, जोतिषी, बारवां देवलोक तांई देवता, गर्भज तिर्यंच में समुद्घात ५ आहारिक केवल टली, ४ थावर, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यंच, सर्व युगलिया, बारवां से ऊपरका देवतां में समुद्घात ३ पावै—पहली । गर्भज मनुष्यां में समुद्घात ७ सातों ही पावै केवल्यामें १ केवल समुद्घात पावै । तीर्थंकर समुद्घात करै नहीं, सिद्धां कै समुद्घात नहीं ।

इति समुद्घात द्वारम् ।

१० दसमूं सन्नी असन्नी द्वार ।

सन्नी के मन, असन्नीकै मन होय नहीं ।
७ नारकी, सर्व देवता, गर्भज मनुष्य, गर्भज तिर्यंच, युगलिया सन्नी होय । ५ थावर, ३ विकलेन्द्री, छमूर्छिम मनुष्य, छमूर्छिम तिर्यंच, यह असन्नी होय । मनुष्य नोसन्नी नो असन्नी पण

होय, सिद्धसन्नी असन्नी नहीं होय

इति सन्नी असन्नी द्वारम् ।

११ इग्यारमूं वेद द्वार

३—वेद स्त्री १ पुर्ष २ नपुंसक ३

७ नारकी, ५ थावर, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यंच में वेद १ नपुंसक होय। भुवनपती, वानव्यन्तर, जोतिषी, पहला दूजा देवलोक पहला किल्बिषी, सर्व जुगलिया में वेद २ स्त्री तथा पुर्ष होय। तीजा देवलोक सूं सर्वार्थ सिद्धतांई वेद १ पुरुष होय। गर्भज मनुष्य, गर्भज तिर्यंच, मे वेद तीन होय। मनुष अवेदी पण होय। सिद्धां में वेद नहीं।

इती वेद द्वार।

१२ बारमूं पर्याय द्वार।

पर्याय ६ आहार १, शरीर २, इन्द्रिय ३, स्वासोस्वास ४, भाषा ५, मन ६, पर्याय एवं ६।

सर्व देवता में पावे ५ पर्याय।

मनभाषा भेली लेखवी, ५ थावर में पर्याय ४ होय

पहली, असन्नी मनुषां में पर्याय ३॥ तीन तो पहली आधी में स्वासालेवै तो उस्वास नहीं, उस्वास लेवै तो स्वास नहीं ।३ विकलेन्द्री, छमूर्छिम तिर्यंच पचेन्द्री में पर्याय ५ पावे-मन टल्यो । सिद्धामें पर्याय पावे नहीं । सन्नी मनुष तिर्यंच. सर्व जुगलियां. ७ नारकी में पावै छे ६ ।

इति पर्याय द्वारम्

१३ तेरमुं दृष्टीद्वार ।

दृष्टी ३-सम्यक् १, मिथ्यात २, समामिथ्या द्रिष्टी३, एवं होय ।

७ नारकी, बारामां देवलोक तांई देवता, गर्भेज मनुष्या, गर्भेजतिर्यंच, में द्रष्टि तीनूं ही होय ।५ थावरां, असन्नीमनुष्या में, ५६ अन्तरद्वीप का जुगलियामें १ मिथ्या द्रष्टी पावे । ६ ग्रैवेगका देवतामें, ३ विकलेन्द्रीमें, असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री में, ३० अकर्म भूमिका जुगलियामें द्रष्टी २ सम्यक् १, मिथ्या २ पावे । ५ अनुत्तर विमानका देवता, सिद्धमें द्रष्टी १ सम्यक् पावे

इति दृष्टी द्वारम्

१४ चौदमुं दर्शन द्वारम्

दर्शन ४-चक्षु १, अचक्षु, २, अवधि ३, और केवल दर्शन एवं दर्शन ४ जाणवां ।

७ नारकी, सर्व देवतामें, गर्भजातिर्यंच में, दर्शन ३-चक्षु १, अचक्षु, २, अवधि ३ । गर्भजमनुष्या में दर्शन ४ होय ५, थावर, बेइन्द्री, तेइन्द्री में दर्शन १ अचक्षु, पावै । चोइन्द्री, छमुर्छिम तिर्यच पंचन्द्री, छमुर्छिम मनुष्या, सर्व युगलियांमे दर्शन२-चक्षु, १ अचक्षु, २। सिद्धांमें १ केवल दर्शन ही पावै ।

इति दर्शन द्वारम् ।

१५ पंदरमूं ज्ञान द्वार ।

ज्ञान ५-माति १, श्रुति २, अवधि ३, मन पर्यव४, केवल ज्ञान एवं ५ ।

७ नारकी, सर्वदेवता, गर्भज तिर्यचमें ज्ञान ३ पावे पहला । गर्भज मनुष्यां में ज्ञान ५ पावै। ५ थावर, असन्नी मनुष्या, ५६ अन्तर द्वीप का युगालियमें ज्ञान नहीं पावै । ३ विकलेन्द्री, असन्नी

पंचेन्द्री तिर्यञ्चमें, ३० अकर्म भुमिका युगलियां में) ज्ञान २ पावै । मति, श्रुति, । सिद्धां में १ केवल ज्ञान ही पावैं ।

इति ज्ञान द्वारम् ।

१६ सोलमूं अज्ञान द्वार ।

अज्ञान ३-मति अज्ञान १, श्रुति अज्ञान २, विभङ्ग अज्ञान एवं ३ ।

७ नारकी, ६ ग्रैवेकताई का देवता, गर्भज-तिर्यंच, गर्भजमनुष्या में अज्ञान ३ ही पावे । ५ थावर, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्यां, असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री, सर्व युगलिया में अज्ञान २ ही पावैं-मति अ० १, श्रुति अ० २, ५ अनुत्तर का देवता में) सिद्धामें अज्ञान पावे नहीं ।

इति अज्ञान द्वारम् ।

१७ मूं योग द्वार ।

योग १५-मनका ४; सत्य मन १, असत्य मन २, मिश्रमन ३, व्यवहार मन, एवं ४ । वचनका जोग ४- सत्य वचन १, असत्य वचन २, मिश्र

वचन ३, व्यवहार वचन एवं ४। कायाका जोग ७-
औदारिक १, औदारिक को मिश्र २, वैक्रिय ३,
वैक्रियको मिश्र ४, आहारिक ५, आहारिकको मि-
श्र ६, कार्मण ७, एवं । १५
७ नारकी, सर्वदेवता में जोग पावे ११-मनका ४,
वचनका ४, वैक्रिय ६, वैक्रियको मिश्र १०, का-
र्मण ११। सर्व युगलिया में योग पावे ११-मनका
४, वचन का ४, औदारिक ६, औदारिकको
मिश्र १०, कार्मण ११। वाऊकाय वरजीनें ४ स्थावर,
असन्नी मनुष्य में योग पावे ३-औदारिक, औदा-
रिकको मिश्र, कार्मण। तीन विकलेंद्री, असन्नी
तिर्यंच पंचेन्द्री, में पावे ४-औदारिक १, औदारिक
मिश्र २, व्यवहार भाषा ३, कार्मण ४। वाऊकायमें
योग पावे ५—औदारिक १, औदारिक मिश्र २,
वैक्रिय ३, वैक्रिय मिश्र ४, कार्मण ५। गर्भेज
तिर्यंच, मनुष्याणीमें योग पावे १३, आहारिक आ-
हारिकको मिश्र टल्यो गर्भेज मनुष्यामें पावे १५
ही चौदमें गुणाठाणें अजोगी होय। सिद्धांमें जोग
पावे नहीं।

इति योग द्वारम्।

१८. अठारमुं उपयोग द्वार।

७ नारकी, ६ नवग्रैवयकताईं का देवता, गर्भज तिर्यंचमें उपयोग पावै ६—ज्ञान तो ३—मति, श्रुति, अवधि; अज्ञान ३—मति अज्ञान, श्रुतिअज्ञान, विभंग अज्ञान; दर्शन ३—चक्षु अचक्षु अवधि।

५ थावर में पावें ३-मति श्रुति अज्ञान तथा अचक्षु दर्शन।

असन्नी मनुष्य तथा ५६ अन्तरद्वीप का जुगलिया में उपयोग पावै ४-मति श्रुति अज्ञान तथा चक्षु अचक्षु दर्शन।

बेन्द्री तेन्द्री में उपयोग पावै ५-मति श्रुति ज्ञान २, अज्ञान २, तथा अचक्षु दर्शन।

चौरिन्द्री, असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री, ३० अकर्म भूमि का जुगलियामें उपयोग पावै ६-मति श्रुति ज्ञान २ अज्ञान २, चक्षु अचक्षु दर्शन एवं ६। पांच अणुत्तरमें पावै ६-तीन ज्ञान तीन दर्शन।

गर्भज मनुष्यां में उपयोग पावै १२। सिद्धांमें उपयोग पावै २-केवल ज्ञान १, केवल दर्शन २।

इति उपयोग द्वारम्।

१९ उगणीसमूं आहार द्वार ।

उन्नीस दंडक का जीव तो छहुंही दिशाको आहार लेवै ।

पांच थावर तीन च्यार पांच छव दिशाको आहार लेवै ।

केतला मनुष्य अणआहारीकपणाहोय सिद्ध भगवन्त आहार लेवै नहीं।

इति आहार द्वारम् ।

२० वीसमूं उत्पत्ति द्वार ।

७ नारकी, आठवां देवलोक तांई का देवता, तेऊ, वाऊ काय, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य तिर्यंच, सर्व युगलियांमें उत्पत्ति पावै गति २ की, मनुष्य तिर्यंच ।

नवमां देवलोक सूं सरवार्थ सिद्धतांई का देवता में उत्पत्ति पावै १ मनुष्य गतिकी ।

पृथ्वी अप्प वनस्पतिकाय में उत्पत्ति पावै ३ गतिकी (नारकी टली)

गर्भज मनुष्य तिर्यंच में उत्पत्ति(४) च्यारूं हीं गतिकी ।

सिद्धांमें १ मनुष्य गतिकी ।

इति उत्पाति द्वारम् ।

२१ इक्कीसमूं स्थिती द्वार ।

नारकी की स्थिती ।

१ पहली नारकी की स्थिती जघन्य १० हज़ार वर्षकी उत्कृष्टी, १ सागरकी ।

२ दूसरी नारकी की जघन्य १ सागरकी उत्कृष्टी ३ सागरकी ।

३ तीसरी नारकी की जघन्य ३ सागर, उत्कृष्टी सात (७) सागरकी ।

४ चौथी नारकी की जघन्य ७ सागर की उत्कृष्टी १० सागर की ।

५ पांचवीं की जघन्य १०, उत्कृष्टी १७ सागर

६ छट्ठी नारकी की जघन्य १७, उत्कृष्टी २२ सागरकी ।

७ सातमी नारकी की जघन्य २२, उत्कृष्टी ३३ [सा]गरकी भुवन पति देवतांकी स्थिती—

दक्षण दिशिका असुर कुमार की जघन्य १०

हजार वर्षकी, उत्कृष्टी १ सागरकी, यांकी देव्यां की जघन्य दश हजार वर्ष की, उत्कृष्टी ३॥ पल्योपमकी।

दक्षण दिशिका ६ निकायका देवतां की जघन्य १० हजार वर्ष की, उत्कृष्टी १॥ पल्योपम की, यांकी देव्यांकी जघन्य १० हजार वर्ष, उत्कृष्टी, पौणा पल्योपमकी।

उत्तर दिशिका असुर कुमारकी जघन्य १०, हजार वर्ष की, उत्कृष्टी १ सागर जाझेरी, यांकी देव्यां की जघन्य दश हजार वर्षकी, उत्कृष्टी ४॥ साडा च्यार पल्योपमकी।

उत्तर दिशका ६ निकायका देवतांकी जघन्य १० हजार वर्षकी, उत्कृष्टी देशऊणी दोय पल्योपमकी, देव्यांकी ज० १० हजार वर्षकी। उत्कृष्टी देश ऊणी १ पल्योपमकी।

वानव्यन्तर देवतांकी स्थिती।

जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टी १ पल्योपमकी, यांकी देव्यांकी जघन्य दश हजार वर्ष की, उत्कृष्टी ॥ आधा पल्योपमकी, त्रिजुमका देवांकी भी इतनी हीं।

ज्योतिषी देवां की स्थिती ।

चन्द्रमांकी जघन्य पाव पल्योपमकी उत्कृष्टी १ पल्योपम एकलाख वर्ष अधिक, यांकी देव्यां की जघन्य पाव पल्योपमकी, उत्कृष्टि आधा पल्य ५० हजार वर्ष की सूर्य की जघन्य । पाव पल्योपमकी, उत्कृष्टि १ पल्योपम १ हजार वर्ष अधिक, यांकी देव्यांकी जघन्य । पाव पल्यकी, उत्कृष्टी ॥ आधी पल्योपम पांचसह वर्ष अधिक । ग्रहांकी ज० पाव पलाकी, उ० १ पल्योपमकी, यांकी देव्यांकी ज० पाव पल्योपम, उत्कृष्टि ॥ आधी पल्योपमकी ।

नक्षत्रांकी ज० पाव पल्योपम, उ० ॥ आधी पल्योपम की यांकी देव्यांकी ज० पाव पल्योपम, उत्कृष्टि पाव पल्योपम जाझेरी ।

तारांकी ज० पल्योपमको आठमुं भाग, उ० पाव पल्योपम की, यांकी देव्यांकी ज० अधपाव पल्योपम उत्कृष्टि अधपाव पल्योपम जाझेरी ।

वैमानिक देवतांकी स्थिती ।

१ पहला देवलोक में ज० १ पल्योपम उत्कृष्टि

२ सागर की, यांकी परिग्रहि देव्यांकी ज०
१ पल्योपम, उ० ७ पल्योपम, अपरिग्रहि
देव्यांकी ज० १ पल्योपम, उ० ५०
पल्योपमकी ।

२ दूसरा देव लोक में ज० १ पल्योपम जाझेरी, उ० २ सागर जाझेरी, यांकी देव्यांकी ज० १ पल्योपम जाझेरी, उ० परिग्रही की ९ पल्योपम की, अपरिग्रही की ५५ पल्योपम की ।

३ तीसरा देवलोक में ज० २ सागर, उ० ७ सागरकी ।

४ चौथा देवलोक की ज० २ सागर जाझेरी उत्कृष्ट ७ सागर जाझेरी ।

५ पांचवांकी ज० ७ सागर, उ० १० सागरकी

६ छट्ठा देवलोक का देवतांकी ज० १० सागर, उ० १४ सागर की ।

७ सातवां की ज० १४ उ० १७ सागरकी ।

८ आठमां की ज० १७, उ० १८ सागरकी ।

९ नवमां की ज० १८, उ० १९ सागरकी ।

१० दशमां की ज० १९, उ० २० सागरकी ।

११ इग्यारमां की ज० २०, उ० २१ सागरकी ।
१२ बारमां की ज० २१, उ० २२ सागरकी ।
१३ पहलां ग्रैवेयक की ज० २२ उ० २३ ।
१४ दूसरा ग्रैवेयक की ज० २३, उ० २४ ।
१५ तीसरा ग्रैवेयक की ज० २४, उ० २५ ।
१६ चौथा ग्रैवेयक की ज० २५ उ० २६ ।
१७ पांचमां ग्रैवेयक की ज० २६, उ० २७ ।
१८ छट्टा ग्रैवेयक की ज० २७, उ० २८ ।
१९ सातमां ग्रैवेयक की ज० २८, उ० २९ ।
२० आठमां ग्रैवेयक की ज० २९ उ० ३० ।
२१ नवमां ग्रैवेयक की ज० ३० उ० ३१ ।
२२ विजय १, विजयन्त २ जयन्त ३ ।—
अपराजित ४, यह च्यार अनुत्तर वैमान की ज० ३१, उ० ३२ सागर की ।
२३ सर्वार्थ सिद्धिका देवांकी ज० उ० ३३ सागरकी ।

नव लोकान्तिक देवतांकी स्थिति ८ सागरकी, पहला किल्विषीकी ३ पल्योपम दूजाकी ३ सागर, तीजांकी १३ सागरकी ।

पांच स्थावर की स्थिती ज० अन्तर मुहूर्त्त उत्कृष्टि पृथ्वीकायकी २२ हजार वर्ष की; अप्पकाय की ७ हजार वर्ष की; तेऊकायकी ३ दिन रातकी; वाउकायकी ३ हजार वर्ष की; वनस्पति कायकी १० हजार वर्ष की ।

तीन विकलेंद्री की ज० अन्तर मुहूर्त की; उत्कृष्टि बेइन्द्री की १२ वर्ष की; तेन्द्री ४९ की दिन रात की; चौइन्द्री की ६ महीनाकी । तिर्यंच पंचेंद्रीकी ज० अन्तरमुहूर्तकी; उत्कृष्टि जलचरकी १ क्रोड पूर्वकी; थलचर सन्नीकी ३ पल्योपमकी असन्नीकी ८४ हजार वर्ष की; उरपुर सन्नीकी क्रोड पूर्वकी; असन्नी की ५३ हजार वर्ष की; भुजपुर सन्नीकी क्रोड पूर्वकी; असन्नी की ४२ हजार वर्ष की; खेचर सन्नीकी पल्योपम के असंख्यात मुं भाग, असन्नी की ७२ हजार वर्ष की । असन्नी मनुष्यकी ज० उ० अन्तर मुहूर्त की ।

सन्नी मनुष्य की स्थिती, ज० अन्तर मुहूर्त की; उ० ५ भर्त्त ५ ऐरभर्त्तका मनुष्यां की अवसर्पिणीके पहलो आरो लागतां ३ पल्यकी; उतरतां २ पल्यकी; तीसरो लागतां १ पल्यकी;

उतरतां क्रोड़ पूर्वकी; चौथो आरो लागतां क्रोड पूर्वकी, उतरतां १२५ वर्ष की; पांचमूं लागतां १२५ वर्ष की, उतरतां २० वर्षकी: छटो लागतां २० वर्ष की, उतरतां १६ वर्ष की। उत्सर्पणी कालमें इमहिज चढतां कहणा; पांच महाविदेह खेत्रांकी १ क्रोड पूर्वकी उत्कृष्ट स्थिती।

युगलियां की स्थिती।

५ हेमवय ५ अरूणवयकां की ज० देसऊंणी १ पल्योपम उ० १ पल्योपमकी।

५ हरिवास, ५ रम्यकवासकां की ज० देशऊंणी २ पल्योपम उ० २ पल्योपमकी।

५ देवकुरु ५ उत्तरकुरुकां की ज० देशऊंणी ३ पल्योपम उ० ३ पल्योपमकी।

५६ अन्तर द्वीपकां की १ पल्योपम का असंख्यातमूं भागकी।

एक एक सिद्धांकी आदि नहीं अन्त नहीं, एक एक की आदि छै पण अन्त नहीं।

इति स्थिती द्वारम्।

२२ मुं समोह्या असमोह्या द्वार ।

समोह्यातो समुद्घात फोडी ताणावेजो करी मरे, असमोह्या विना समुद्घाते गोलीका भड़ाकावत् मरै ।

२४दराडकां का जीव दोनूंहीं प्रकारका मरण करे ।

—इति समोह्या असमोह्या द्वारम् ।

२३ मूं चवन द्वार ।

६ नारकी, आठमां देवलोक तांइ का देवता, पृथ्वी, अप्प, बनास्पति काय, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, में चवन दोय गतिकी—मनुष्य तिर्यंच की ।

नवमां देवलोक सैं सरवार्थ सिद्धि तांइ का देवतां में चवन १ मनुष्य की, सातमी नारकी में तथा तेऊ वाऊ में चवन १ तिर्यंचः गतिकी ही ।

गर्भज मनुष्य, तिर्यंच, असन्नी तिर्यंच, पंचेंद्री, मे चवन च्यारूं ही गति की; युगलिया में चवन १ देव गतिकी सिद्धां में चवन पावै नहीं ।

इति चवन द्वारम् ।

२४ मूं गतागति द्वारम् ।

पहली से छट्ठी नारकी तांइ गति २ दण्डक, आगति २ दंडकांकी मनुष्य, तिर्यंच पंचेन्द्री ।

सातवीं नारकी में आगति २ दंडककी गति१ तिर्यंच पंचेन्द्री की, गति जांणवी ।

भुवन पति, वानव्यन्तर, ज्योतिषी, पहला दूजा देवलोक, तथा पहला किल्विषी देवतां की, आगति २ दण्डकां की (मनुष तिर्यंच की) गति ५ दण्डकां की (तिर्यंच, मनुष्य, पृथ्वी, अप्प, वनस्पति, की)

तीजा देवलोक सैं आठमां देवलोक तांइ गतागति २ दण्डकांकी (मनुष्य तिर्यंच) नवमां देवलोक सैं सरवार्थ सिद्धि तांई गतागति १ मनुष्य की ।

पृथ्वी अप्प, वनस्पति, कायमैं, आगति २ दण्डकां की (नारकी टली) गति १०—दण्डकां की ५ स्थावर, ३ विकलेन्द्री, मनुष्य ६, तिर्यंच एवं १० की ।

तेऊ वाऊ कायमैं आगति १० दंडकां की, गति ६ दण्डकांकी, मनुष्य टल्यो; ३ विकलेन्द्री में

१२ की आगति १० की गति ऊपरवत् ।

असन्नी तिर्यंच पंचेन्दी में आगति १० दराड-कांकी ऊपरवत् गति २२ दराडकां की जोतिषी वैमानिक टल्यो ।

सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री में आगति २४ की गति २४ की ।

असन्नी मनुष्य में आगति ८ दराडकांकी पृथ्वी, अप्प, वनस्पति, तीन विकेन्द्री मनुष्य तिर्यंच, एवं ८, अनें गति १० दराडकांकी पूर्ववत् ।

गर्भज मनुष्य में आगति २२ दंडकांकी तेऊ वाऊ टल्या गति २४ दंडकांकी; ३० अकर्म भूमि-का युगलियां में आगति २ दंडकांकी मनुष्य ति-र्यंच, गति १३ दंडकांकी—१० तो भवनपति का वानव्यन्तर ११ जोतिषी १२ वैमानिक १३ एवं ।

५६ अन्तर द्वीप का युगलिया में आगति २ दंडकांकी ऊपरवत् गति ११ दंडकांकी १० तो भ-वनपति का १ वानव्यन्तर को ११ ।

सिद्धां में आगति मनुष्य की गति नहीं ।

इति गतागत द्वारम् ।

२५ मूं प्राण द्वार ।

७ नारकी, सर्व देवता गर्भज मनुष्य तिर्यंच, सर्व युगलिया में प्राण १० दसूंही पावै: ५ स्थावर में प्राण ४ पावै—स्पर्श इन्द्रीवल १ काय २ सास्वीसास ३ आऊषो ४ एवं ।

बेन्द्री में पावै ६, तेन्द्री में पावै ७, चौरिन्द्री में पावै ८ प्राण ।

असन्नी मनुष्य में पावै ७॥ स्वास लेवै तो उस्वास नहीं ।

असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रीमें पावै ६ मन टल्यो ।

१३ में गुणठाणे पावै ५ (पांच इन्द्रीयांको टाल्या)

१४ में गुणठाणे पावै १ आउषोवल; सिद्धां में प्राण पावै नहीं ।

इति प्राण द्वारम् ।

२६ मूं योग द्वार ।

नारकी देवता मनुष्य सन्नी तिर्यंच युगलिया में जोग पावै ३ मन बचन काय का ।

पांच स्थावर असन्नी मनुष्य में १ काया को पावै ।

तीन विकलेन्द्री, असन्नी पंचेन्द्री में जोग पावै २ वचन काया ।

केतला मनुष्य अयोगी होय, सिद्धां में जोग पावै नहीं ।

इति लघु दण्डकम् ।

❋ अथ अल्पा बोहत ❋

१ सर्व थोड़ा गर्भज मनुष्य ।
२ तेहथी मनुष्यणी संख्यात गुणी (२७ गुणी) ।
३ ,, बादर तेऊकाय का पर्यापा असंख्यातगुणां ।
४ ,, पांच अनुत्तर का देवता असंख्यात गुणां ।
५ ,, ऊपरला त्रिक का देवता संख्यात गुणां ।
६ ,, विचला त्रिक का देवता संख्यात गुणां ।
७ ,, नीचला त्रिक का संख्यात गुणां ।
८ ,, १२ मां देवलोक का संख्यात गुणां ।
९ तेहथी ११ मां देवलोक का संख्यात गुणां ।
१० ,, १० मां का संख्यात गुणां ।
११ ,, ९ मां का संख्यात गुणां ।

१२ ,, सातमी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणां ।

१३ ,, छट्ठी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणां ।

१४ ,, आठमां देवलोक का देवता असंख्यात गुणां ।

१५ ,, सातमां देवलोक का देवता असंख्यात गुणां ।

१६ ,, ५ मी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणां ।

१७ ,, छट्ठा देवलोक का देवता असंख्यात गुणां ।

१८ ,, चौथी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणां ।

१९ ,, पांचवां देवलोक का देवता असंख्यात गुणां ।

२० ,, तीजी नारकी का नेरीया असंख्यात गुणां ।

२१ ,, चौथा देव लोकका देवता असंख्यात गुणां ।

२२ ,, तीजा देवलोकका देवता असंख्यात गुणां ।

२३ ,, दूजी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणां ।

२४ ,, समूर्छिम मनुष्य असंख्यात गुणां ।

२५ ,, दूजा देवलोकका देवता असंख्यात गुणां ।

२६ ,, दूजाकी देव्यां संख्यात गुणीं ।
२७ ,, पहला देवलोकका देवता संख्यात गुणां ।
२८ ,, पहलाकी देव्यां संख्यात गुणीं ।
२६ ,, भवनपति देवता संख्यात गुणां ।
३० ,, भवनपती की देव्यां संख्यात गुणी ।
३१ ,, पहली नारकी का नेरिया असंख्यात गुणां ।
३२ ,, खेचर पुरुष असंख्यात गुणां ।
३३ ,, खेचरणी संख्यात गुणीं ।
३४ ,, थलचर पुरुष संख्यात गुणां ।
३५ ,, थलचरणी संख्यात गुणीं ।
३६ ,, जलचर पुरुष संख्यात गुणां ।
३७ ,, जलचरणी संख्यात गुणीं ।
३८ ,, वानव्यंतर देवता संख्यात गुणां ।
३६ ,, वानव्यंतर देवीं संख्यात गुणीं ।
४० ,, जोतिषी देवता संख्यात गुणां ।
४१ ,, जोतिषीनी देवी संख्यात गुणीं ।
४२ ,, खेचर नपुंसक संख्यात गुणां ।
४३ ,, थलचर नपुंसक संख्यात गुणां ।
४४ ,, जलचर नपुंसक संख्यात गुणां ।

४५ „ चौरिन्द्री का पर्याप्ता संख्यात गुणां ।
४६ „ पंचेन्द्री का पर्याप्ता विशेसाइया ।
४७ „ बेन्द्री पर्याप्ता विशेसाईया ।
४८ „ तेन्द्री पर्याप्ता विशेसाईया ।
४९ „ पंचेन्द्री अपर्याप्ता असंख्यात गुणां ।
५० „ चौरिन्द्री अपर्याप्ता विशेसाईया ।
५१ „ तेन्द्री अपर्याप्ता विशेसाईया ।
५२ „ बेन्द्री अपर्याप्ता विशेसाईया ।
५३ „ बादर प्रत्येक वनस्पती पर्याप्ता असंख्यात गुणां ।
५४ „ बादर निगोदा पर्याप्ता असंख्यात गुणां ।
५५ „ बादर पृथ्वीकाय पर्याप्ता असंख्यात गुणा ।
५६ „ बादर अप्पकाय पर्याप्ता असंख्यात गुणां ।
५७ „ बादर वायुकाय पर्याप्ता असंख्यात गुणां ।
५८ „ बादर तेऊकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणां ।
५९ „ बादर प्रत्येक शरीरी वनस्पति अपर्याप्ता असंख्यात गुणां ।
६० „ बादर निगोदा अपर्याप्ता असंख्यात गुणां ।
६१ „ बादर पृथ्वीकाय का अपर्याप्ता असंख्यात गुणां।

६२,, बादर अप्पकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

६३,, बादर वायुकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

६४,, सूक्ष्म तेऊकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

६५,, सूक्ष्म पृथ्वी अपर्याप्ता विशेसाईया ।

६६,, सूक्ष्म अप्प अपर्याप्ता विशेसाईया ।

६७,, सूक्ष्म वायु अपर्याप्ता विशेसाईया ।

६८,, सूक्ष्म तेऊ पर्याप्ता संख्यात गुणां ।

६९,, सूक्ष्म पृथ्वी पर्याप्ता विशेसाईया ।

७०,, सूक्ष्म अप्प पर्याप्ता विशेसाईया ।

७१,, सूक्ष्म वायु पर्याप्ता विशेसाईया ।

७२,, सूक्ष्म निगोदा अपर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

७३,, सूक्ष्म निगोदा पर्याप्ता संख्यात गुणां ।

७४,, अभव्य जीव अनन्त गुणां ।

७५,, पड़वाई समदृष्टी अनन्त गुणां ।

७६,, सिद्ध भगवंत अनन्त गुणां ।

७७,, बादर वनस्पति पर्याप्ता अनन्त गुणां ।

७८,, बादर पर्याप्ता विशेसाईया ।

७६,, बादर वनस्पति अपर्याप्ता असंख्यात गुणां ।
८०,, बादर अपर्याप्ता विशेसाईया ।
८१,, सर्व बादर विशेसाईया ।
८२,, सूक्ष्म वनस्पति अपर्याप्ता असंख्यात गुणां ।
८३,, सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेसाईया ।
८४,, सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्ता संख्यात गुणां ।
८५,, सूक्ष्म पर्याप्ता विशेसाईया ।
८६,, सर्व सूक्ष्म विशेसाईया ।
८७,, भव्य जीव विशेसाईया ।
८८,, निगोदिया विशेसाईया ।
८९,, वनस्पति विशेसाईया ।
९०,, एकेन्द्री विशेसाईया ।
९१,, तिर्यंच विशेसाईया ।
९२,, मिथ्याती विशेसाईया ।
९३,, अव्रती विशेसाईया ।
९४,, सकषाई विशेसाईया ।
९५,, छद्मस्थ विशेसाईया ।
९६,, सजोगी विशेसाईया ।
९७,, संसारी जीव विशेसाईया
९८,, सर्व जीव विशेसाईया ।

अथ श्रावक प्रतिक्रमण ।

❀ अर्थ सहित ❀

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो
नमस्कार थावो अरिहन्त भगवन्त नें नमस्कार थावो श्री सिद्ध भगवान नें नमस्कार थावो
आयरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए
श्री आचारज महाराज नें नमस्कार थावो श्री उपाध्याय महाराजनें नमस्कार थावो लोक के विषे
सव्व साहूणं ।
सर्व साधु मुनिराजों नें ।

॥ अथ तिक्खुत्ता की पाटी ॥

❀ अर्थ सहित ❀

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदामि नमं
तीन बार दाहिणापासाथी प्रदक्षणा देईं वंदना नमस्कार करूं
सामी सक्कारेमि सम्माणेमी कल्लाणं मंगलं
करूं सत्कार करू सनमान करूं कल्याण कारी मंगलकारी

देवयं चेईयं पज्जुवासामी मत्थएणा वंदामि
धर्म देव चित प्रसन्न सेवना करूं मस्तककरी वंदना
कारी ज्ञानवंत नमस्कारकरूँ

॥ इच्छामि पडिक्कमिउ ॥

इच्छामि पडिक्कमिउ ईरिया वहीयाये
इच्छू,वांछू प्रतिक्रमवोते मार्गनेंविषै चालतां
निवर्तवो

विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे
विराधना हुई होय जातां आतां प्राणी बेन्द्रियादिनो
आक्रमण करणू दावणू

बीयक्कमणे हरियक्कमणे उसा उत्तिंग पणग
बीज जीवदावणूँ हरी लीलिको ओसको कीडीका तिलोति
दावणूँ विल फूलन

दग मट्टी मकोडासंताणा संकमणे
पाणी का, माट्टीका जीव मक्कड़ीका जाल मर्दवो संक्रमवो

जेमे जीवा विराहिया एगेंदिया बेंइंदिया
में ज्यो जीव विराध्या होय एकेन्द्री जीव बेइन्द्री जीव

तेइंदिया चउरिंदिया पंचेंदिया अभि
तेइन्द्री जीव चौइन्द्री जीव पंचइन्द्री जीव सनमुख

हया बतिया लेसीया संघाइया संघट्टीया
आताहणया धूलसे ढकया रगड्या घातकरया संघटेकरी

परियाविया किलामिया उद्दाविया ठाणा
परिताप्या कीलामनाउपजाई उपद्रव किया एक स्थान से

उट्ठाणा संकामिया जीवियाउ ववरोविया
दूसरे स्थान पहुंचाया जीवतसे नाश किया

तस्समिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥
तेहनो मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ अथ तस्सोत्तरी ॥

तस्सुत्तरी करणेणं पायच्छित करणेणं
तेहना उत्तर प्रधान करवा प्रायश्चित करवो

विसोही करणेणं विसल्ली करणेणं
विशुद्धि करवो सल्य रहित करवो

पावाणं कम्माणं निग्घाए ठाए
पाप कर्मका नाश करवा निमित्त

ठामि करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ
स्थिर हुई करूं छूं काय उत्सर्ग ध्यान इण उपरान्त आगार

ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं
ऊंचा स्वास नींचा स्वास खांसी छींक

जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए
उबासी डकार अधोवायु भौंल

पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अङ्गसंचालेहिं
पित्तकर मूर्छा सुक्ष्मपणे शरीरको हालवो

सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं
सुक्ष्मपणे श्लेष्मको संचार सुक्ष्म दृष्टि चलावे

एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहीउ
इत्यादिक यह म्हारे आगर सें ध्यान भागे नहीं वीराधना नहीं

हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहं
होज्यो मने काउसग्गते ध्यान जिहां तक आरिं

ताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं नपारेमि
हन्त भगवन्तने नमस्कार करीने नहीं पारूँ

ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं
जठांताई शरीर सें स्थानसें मोनकरी ध्यान करी

अप्पाणं वोसरामि ॥ इति
आत्मा ने पापथकी वोसराऊं

॥ अथ लोगस्स ॥

लोगस्स उज्जोयगरे धम्म तित्थयरेजिणे
लोक के विषे उद्योतकारी धर्म तीर्थकरता जिन

अरिहन्ते कित्तइस्सं चउवीसंपि केवली॥१॥
अरिहन्ताकी किरति करूँ चोवीस वे केवली

उसभ मजीयंचवंदे संभवमभिनंदणं च
ऋषभ अजित पुनः वंदू संभवनाथं अभिनंन्दनजी पुनः
सुमइं च पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं
सुमति पुनः पद्म प्रभः सुपार्श्व जिन पुनः चन्द्रप्रभु
वंदे ।२। सुविहिं च पुप्फदंत सीयल सिज्जंस
वंदू सुविधिनाथ पुन दूसरोनाम सीतल श्रेयांस
पुप्फदंत

वासुपुज्जं च विमल मणंतं च जिणं धम्मं
वासुपुज्य पुनः विमलनाथं अनन्तनाथंजिन धर्मनाथ
संतिं च वंदामि ।३। कुंथु अरंच मल्लिं
शांति पुनः वंदू कुन्थु अरि पुनः मल्लिनाथ
नाथ नाथ नाथ

वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च वंदामि
वंदू मुनिसुव्रत नमि जिन पुनः वंदू
रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ।४। एवं
अरिष्टनेमि पार्श्वनाथ तथारूप वर्द्धमान वंदू यह
मये अभिथुया विहुयरयमला पहीण जर
मैं स्तुती करी दूर किया कर्मरूप खीणभया जनम
रज मैल

मरणा चउवि संपि जिनवरा ।५। तित्थयरा मे
मरण जीनोंका यह चोबीस जिनराज तिर्थंकर म्हारे ऊपर

पसीयं तु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया जे ये
प्रसनथावो कीर्तीकरी वंद मोटा भवे ये
पूज्या थया हैं
लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरुग्ग बोहिलाभे
लोकके विषै उत्तम सिद्ध है रोग रहित समकित
बोध लाभ
समाहि वर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मल
समाधि प्रधान उत्तम देवो चंद्रमाथी निर्मल
यरा आइच्चेसु अहियं पयासयारा सागर वर
कारी सूर्यथी अधिक प्रकास कारी समुद्र समान
गंभीरा सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥७॥
गंभीरा एहवा सिद्ध सिद्धि मने देवो

॥ अथ नमुत्थुणं ॥

णमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं
नमस्कार थावो अरिहंत भगवंत नें धर्म की आदि
कर्त्ता ने
तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं
तीर्थ करता बिना गुरु पोतः प्रति पुरुषा में उत्तम
बोध पाम्या
पुरिष सिंहाणं पुरिशवरपुंडरीयाणं पुरिस
पुरूषां में सिंह समान पुरुषां में पुंडरीक पुरुषां में
कमल समान

वर गंध हत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनहाणं
गंध हाथी समान लोकमें उत्तम लोकका नाथ
लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोय गराणं
लोकमें हित लोक मेंपदीप लोकमें उद्योतकारी
कारी, प्रधान
अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं
अभय दान दाता ज्ञान चक्षु दायक सुमार्गदायक शरण दायक
जीवदयाणं वोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेस
संजमजीतव दायक बोध दायक धर्म दायक धर्म देशना
याणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवर
दायक धर्मका नायक धर्मका सारथी उत्तम धर्मकर
चाउरंत चक्कवट्टीणं दीवोत्ताणं सरणगईपइट्ठा
च्यार गतिका अन्तकारी द्वीपा समान शरणागत नैं
चक्रवर्त समान
अप्पडिहय वरनाण दंसण धराणं विअट्टछउ
अप्रति हत प्रधानज्ञान दर्शन धारक निवर्त्यो
माणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं
छद्मस्थ जीत्या अने जीतावे तिरयां दूसरानैं
पणो दूजोने तारे
बुद्धाणं वोहियाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वनूणं
पोतः प्रति बोध पाम्या कर्मथी दूजानें सर्वज्ञ
दूजाने प्रति बोधे मुकाण्या मुकावे

सव्वदरिसीणं - सिवमयल मरुअ मणंत
सर्व दरशी कल्याणकारी अचल अरुज अनन्त
मक्खय मव्वाबाह मपुणरावत्ती सिद्धगइ
अक्षय अव्याबाधि फेरूं आवे नहीं इसी सिद्धगति
नामधेयं ठाणं संपत्ताणं णमो जिणाणं ॥ इति ॥
नामवाला स्थान प्राप्त हुवा जिनेश्वराने नमस्कार थावो

॥ प्रतिक्रमण ॥

आवस्सही इच्छामिणं भंते तुब्भहिं—अब्भणु
अवश्य इच्छूं छूं हे भगवान तुम्हारी आज्ञासे
नायेसमाणे देवसी पडिक्कमणं ठाएमि देवसी
दिवस प्रतिक्रमण ठाऊं करूं मैं दिवस
सम्बन्धी सम्बन्धी
ज्ञान दरशन चारित्र तप अतिचार चिंतवनार्थं
ज्ञान दर्शन चारित्र तप अतिचार चिन्तवना के अर्थ
करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥
करूँ छूँ मैं काउसग व ध्यान
इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिउ अई
इच्छूं छूं ठाऊं काउसग जो मैं दिवसमें अति
यारो कउ काइउं वाइउं माणसिउं उस्सुत्तो
चार कीनो शरीरमें वचनसें मनसे मूँड सूत्र

उमग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाउ दुव्वी
उनमार्ग अकल्पनीक नहीं करवा जोग दुरध्यान खोटी
चिंतिउं अणायारो अणिच्छिअव्वो
चिन्तवना अणाचार नहीं इच्छवा जोग
असावगपाउग्गो नाणे तहदंसणे चरित्ताचरित्ते
श्रावक के नहीं कर ज्ञान दर्शन देशव्रती
वा जोग्य पाप तें
व्रत भंगादि
सुये सामाइये तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं
श्रुत सामायक तीन गुप्ती च्यार कषाय
पंचण्हं मणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं
पाँच अणुव्रत तीन गुणव्रत च्यार
सिक्खावयाणं बारस विहस्स सावग्ग धम्मस्स
शिक्षा व्रत बारह विध श्रावक धर्म की
जं खंडियं जं विराहियं तस्समिच्छामि
ज्यो खण्डनाकरी ज्यो विराधना करी तेहनों मिच्छामि
दुक्कडं ॥ २ ॥
दुकडं

॥ अथ क्षमावंत श्रमणोको वंदना ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए
इच्छुंछूं हे क्षमावंत साधू वंदना सचित्ताःदिछांडी निपाप
आपनें शरीरपणें हुई निर्जरा अर्थ

निसीहियाए अनुजाणह मेमि उग्गहं निस्सही
शरीर करी आज्ञा देवो मुझे मर्यादा अशुभ जोग
माहि निवर्त्ततो

अहो कायं । कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो
चर्ण फर्सवाकी म्हारी कायासें खमज्यो हे भगवान् कीलामना
आज्ञा देवो । तुमारा चर्ण
फरसतां

अप्पकिलंताणं । बहुसुभेण भे दिवसोवइक्कंतो
थोडी किलामना बहुत समाधि भावकर दिवस वीत्यो ?
हुई हुवेतो । तुमारो

जत्ता भे जवणिज्जंचभे । खामेमि खमासमणो
संयम रूपयात्रा इन्द्रीनोइन्द्री आपकूँ खमाऊँ हे खमावंत
की विषय उपसमावी ते जपणी साधू

देवसियं वइक्कमं आवसिआए पडिक्कमामि ।
दिवस संबंधी व्यतिक्रम अवश्य करणी नां पडिकमूँ छूं ।
अतिचार थकी

खमासमणाणं देवसिआए आसायणाये
हे खमावंत श्रमण दिवस सम्बन्धी आसातना

तित्तीसन्नयराये जं किंचिमिच्छाये मणदुक्कडाए
तेतीस मांहिली जो कोई किंचित् मिथ्या मनसें दुकृत
कृपाकरी किया

वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए
वचनसें दुकृत कायासें दुकृत किया, क्रोधथी मानथी

मायाए लोभाए सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए
माया कपट लोभकरी सर्वकालमें सर्व मिथ्याउपचारकथा
सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसिउं
सर्व धर्म कृपाका उलंघन एहवी आसातना ज्यो में दिवसने
कीया विषे
अइआरो काउ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि
अति चार किया सेहुनों हे क्षमा श्रमण निवर्तुं छूं
निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति॥
निन्दूं छूं गरहूं छूं आत्मांथी वोसराउं छूं

॥ ज्ञानातिचार आलोवाकी पाटी ॥

आगमे तिविहे पन्नत्ते तंजहा सुत्तागमे
आगम तीन प्रकारे परूप्यो ते कहे छे सूत्र आगम
अत्थागमे तदुभयागमे ॥ एहवा श्रीज्ञान ने
अर्थ आगम सूत्र अर्थ दोनूं आगम
विषे अतिचार दोष लाग्या होय ते आलोऊं—
जवाइधं१वच्चामेलियं२हिनक्खरं३अच्चक्खरं४पयहीणं५
जे कोई वचन मिलाया हीनअक्षर अधिक पद हीण ५
अधिक १ होय २ कहा ३ अक्षर ४
विणयहीणं६जोगहीणं७घोसहीणं८सुट्ठुदिन्नं९
विनय हिण ते संजोग हीण ७ उच्चारण श्रेष्ठ सूत्र ते
अविनय ६ हीण८ दीनोअवनीतने९

दुट्ठु पडिच्छियं १० अकाले कओ सिज्झाए ११ काले ण
खोटा मनकी इच्छा करी १० विना काले सिज्झाय करी ११ सिज्झायना

कओ सिज्झाओ १२ असिज्झाये सिज्झाए १३ सिज्झाए
कालमें सिज्झाय न करी १२ असिज्झाय में सिज्झाय करी १३ सिज्झायमें सिज्झाय न करी १४

न सिज्झाय १४ भणतां गुणतां चितारतां
चोखतां ज्ञानकी ज्ञानवंतकी आशातना करी होय
तस्समिच्छामि दुक्कडं ॥

दंसण श्रीसमकित अरिहंतो महदेवो जावज्जीवं
शुध सरधना ते समकित तेह अरिहन्त माहरे देव जाव जीव लग

सुसाहुणो गुरुणो जिणपन्नत्तंतत्तं इयसम्मत्तं
शुद्ध साधू गुरु जिन प्ररूप्यो ते धर्म तत्व यह समकित

मए गहियं ।
में ग्रहण कियो ।

एहवा समकितने विषे जे कोई अतिचार लाग्या होय ते आलोऊं, जिन वचन सांचा न सरध्या होय १, न प्रतीत्याहोय न रुच्या होय २, फल प्रते सांसो संदेह आंणयो होय ३, पर पा-

खंडीकी प्रसंसाकरी होय ४ सास्वतो परिचय की-
धो होय ५, समकित रूपी रत्न ऊपरे मिथ्यात्व
रूप रज मल खेह लागी होय तस्समिच्छामि
दुक्कडं ।

अथ बारह व्रत ।

पढमे अणुव्वए थूलाउ पाणाइवायाउ
प्रथम देशथी व्रत मोटे को प्राणातिपात को
विरमणं व्रत पांच बोले करी ओलखीजे, द्रव्यथकी
निवर्तवो व्रत

त्रस जीव बेइंद्री तेइंद्री चऊरिन्द्री पंचेन्द्री विन
अपराधे आकुटी हणवानी बुद्धि करीने स उपयोग
हणूं नहीं हणाऊंनहीं मनसा वयसा कायसा ॥
द्रव्यथकी याहिज द्रव्य, खेत्रथकी सर्व खेत्रां मांहि
कालथकी जाव जीवलग, भावथकी राग द्वेष
रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा ए-
हवा म्हारे पहला व्रतनें विखें जे कोई अतिचार
दोष लागो होइ ते आलोऊं ।

अश जीवनें गाढे बंधन बांध्या होय १ गाढा घाव घाल्या होय २ चामड़ी छेदन किया होय ३ अति भार घाल्या होय ४ भात पाणीनां विच्छो- हा कीनां होय ५ । तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

बीए अणुव्वए थुलाउं मूसावायाऊ विरमणं
बीजो अणु व्रत स्थूलथी झूंठ बोलवा निवर्तवो

पांचें बोले करि औलखीजे द्रव्यथकी कन्नालिक १
कन्या के तांई झूँठ

गोवालिक २ भौमालिक ३ थापण मोसो ४
गाय भैंसादि भूमि निमित्त लेकर नटवो ते
कारण झूँठ झूँठ अमानत में खयानत

कूडी साख ५
झूँठी शाखी

इत्यादिक मोटको झूँठ मर्याद उपरान्त बोलूं नहीं बोलाऊँ नहीं मनसा वयसा कायसा, द्रव्यथ- की एहीज द्रव्य, खेत्रथकी सर्व खेत्र में, कालथ- की जाव जीव लगे, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारै दूजा व्रत विषे अतीचार दोष लागा होय ते आलाऊं ।

किणी प्रते कूडो आलदियो होय १
रहस्य छानी बात प्रकट करी होय २
स्त्री पुरुषनां मर्म प्रकास्या होय ३
मृषा उपदेश दीधो होय ४
कूडो लेख लिख्यो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तइये अणुव्वए थूलाउ अदिन्ना दाणाउ विरमणं
तीजो अणुव्रत स्थूलथकी अणदीधो दान चोरीको निवर्तवो
पांचे बोले करी ओलखीजे द्रव्यथकी खेत्रखणी
गांठ खोली तालो पहकूंचीकरी बाटपाडी पडीवस्तु
मोटकी सधणीयांरित जाणी इत्यादि मोटकी चौरी
मर्यादा उपरांत करूं नहीं, कराऊं नहीं, मनसा
वायसा कायसा, द्रव्यथकी एहिज द्रव्य, खेत्रथकी
सर्व खेत्र में, कालथकी जाव जीवलगे, भावथकी
राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुणथकी सम्वर
निर्जरा एहवा म्हारे तीजा व्रत में क्यो कोई अती
चार लागो होय ते आलोऊँ ।

चोरकी चुराई वस्तु लीधी होय १ चोरने सहा-
य दीधो होय २ राज विरुद्ध व्योपार कियो होय
३ कूडा तोला कूडामापा किया होय ४ वस्तु में

भेल सभेल कीधो होय ईसरखी वस्तु दिखाय नखी आपी होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

इति ।

चौथे अणुव्वए थूलाउ मेहुणाउ विरमणं
चौथा अणुव्रत स्थुलथकी मैथुनथी निवर्तवो

पांचा बोलां करी ओलखिजे द्रव्यथकी तो देवता देवांगना सम्बन्धिया मैथुन सेवूं नहीं सेवावूं नहीं तिर्यंच तिर्यंचणी सम्बन्धी मैथुन सेवूं नहीं सेवावूं नहीं, मनुष्य सम्बन्धी मैथुन सेवूं नहीं सेवावूं नहीं मनुष्यणी सम्बन्धी मैथुन सेवा की मर्याद कीधी छै तिण उपरान्त सेवूं नहीं सेवावुं नहीं मनसा वायसा कायसा, द्रव्यथकी एहिज द्रव्य खेत्रथकी सर्व खेत्र में कालथकी जाव जीव लगे भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी सम्बर निर्जरा एहवा म्हारे चौथा व्रत में, ज्यों अतिचार दोष लागो होय ते आलोऊं ।

थोडा काल की राखी परिग्रही सुं गमन कियो होय १ अपरिग्रही सूं गमन कीधो होय २ अनेक क्रिडा कीधी होय ३ पराया नाता विवाह जोडया

होय ४ काम भोग तीव्र अभिलाषा सें सेव्या होय ५ ।

तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति ।

पंचमें अणुव्रत थूलाओ परिग्रहाओ विरमणं
पांचमूं अणुव्रत स्थूलपणी परिग्रह ते धनको निवर्तवो
पांचों बोलां करी ओलखिजे द्रव्यथकी खेत्त
उघाड़ी जमीन
वत्थ, यथा प्रमाण, हिरण्य सुवर्ण यथा प्रमाण,
ढकी जमीन जेह प्रमाण कीधो चांदी सोनांकी जे प्रमाण कीधो
धन धांन यथा प्रमाण द्विपद चउप्पद यथा प्रमाण
द्रव्य नाननों जेह प्रमाण कीधो दासदासी हाथी घोड़ा, जे प्रमाण
द्विक चोपद कीधो
कुम्भी धातु यथा प्रमाण ।
तांबो पीतल लोहादि नो जेह प्रमाण

द्रव्यथकी एहिज द्रव्य, खेत्रथकी सर्व खेत्रांमें कालथकी जावजीव लगे, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी सम्वर निर्जरा एहवा म्हांरा पांचमां अणुव्रत में ज्यों अतिचार लागा होय ते आलोऊं, खेत्त वथु रो प्रमाण अति

क्रम्यू होय १ हिरण्य सुवर्णरो प्रमाण अति क्रम्यू होय २ धन धांनरो प्रमाण अति क्रम्यु होय ३ द्विपद चउपदरो प्रमाण अति क्रम्यु होय ४ कुम्भी धातु रो प्रमांण अति क्रम्यु होय तस्समिच्छामि दुक्कडं ।

इति ।

छट्ठो दिशि ब्रत पांचां बोलां ओलखिजे द्रव्य थकी तो उंची दिशारो यथा प्रमाण, नीची दिशारो यथा प्रमाण, तिरछी दिशारो यथा प्रमाण, यां दिशारो प्रमाण कीधोतिह उपरान्त जायकर पंच आश्रव द्वार सेऊँ नहीं सेवाउँ नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्यथकी तो थोहिज द्रव्य खेत्रथी सर्व खेत्र मैं कालथकी जाव जीवलग भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा एहवा मांहरे छट्ठा ब्रतके विषेज कोई अतिचार दोषलागो हुवेते आलोऊं ।

उंची दिशारो प्रमाण अति क्रम्यो होय १
नीची दिशारो प्रमाण अति क्रम्यो होय २
तिरछी दिशारो प्रमाण अति क्रम्यो होय ३

एक दिशा घटाई होय एक दिशा वधाई होय ४ पंथमें चालता संदेह सहित पग आघापाछे धर्यो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

इति

सातमूं उपभोग परिभोग व्रत पांचा बोलांकरी ओलखिजे, द्रव्यथकी छव्वीस बोलांकी मर्याद ते कहे छै

उलणिया विहं १ दंतण विहं २ फल विहं ३
अंग पूछणादि विधि दांतण विधि फल विधि

अभिगण विहं ४ उवट्ण विहं ५ मंजण विहं ६
तेलाभिगादि तेल मालिस उवटणादि की विधि स्नानकी विधि

वत्थ विहं ७ विलेवण विहं ८ पुप्फ विहं ९
वस्त्र विधि विलेपन विधि पुष्प विधि

आभरण विहं १० धूप विहं ११ पेज विहं १२
गहणा पहरवा विधि धूपकी विधि दूध आदि पीवाकी विधि

भक्खण विहं १३ उदन विहं १४ सूप विहं १५
सुखडी आदि भक्षण की विधि चांवल की विधि दालकी विधि

विगय विहं १६ साग विहं १७ महुर विहं १८
विगयकी विधि सागकी विधि मधुर तथा केलादि फल
जीमण विहं १९ पाणी विहं २० मुखवास विहं २१
जीमण की विधि पाणीकी विधि मुखवास ताम्बूलादि
की विधि,
वाहण विहं २२ सयण विहं २३ पन्नी विहं २४
गाडी प्रमुखकी सोवाकी विधि पगरखी की
विधि पाटा कुरसी आदिपर विधि
सचित विहं २५ दव्व विहं २६
सचित्त की विधि द्रव्यकी विधि

ए छावीस बोलांकी मर्याद करी, जिण उपरान्ति
भोगऊं नहीं मनसा वायसा कायसा, द्रव्यथकी
येहिज द्रव्य, खेत्रथकी सर्व खेत्रांमें, कालथकी
जाव जीवलग, भावथकी राग द्वेष रहित, उपयोग
सहित, गुणथकी संवर निर्जरा, येहवा सातमा सा-
तमां व्रत के विषे जे कोई अतिचार दोष लागो
हुवे ते आलोऊं ॥

पच्चखाण उपरान्त सचित्तरो आहार किनो
होय ॥ १ ॥ पच्चखाणां उपरान्ति द्रव्यरो आहार
कीनो होय ॥ २ ॥ पच्चखाणां उपरान्ति गहिणां

अधिका पहरिया होय ॥ ३ ॥ पच्चखाणां उपरा-न्ति कपड़ा अधिका पहर्यां होय ॥ ४ ॥ पच्चखा-णां उपरान्ति उपभोग परिभोग अधिक भोग्या होय । तस्स मिच्छामि दोकडं ॥ पंदरह कर्मा-दान जांणवा जोग छै पण आदरवा जोग नहीं ते कहे छै ।

इंगालकम्मे १ वणकम्मे २ साडीकम्मे ३
अग्निकारीलुहा- वन कर्म ते वनमे घास सकट कर्म ते
रादि कर्म दरखतादि काटवो गाडी प्रमुखनो कर्म

भाडीकम्मे ४ फोडीकम्मे ५ दंतवाणिज्जे ६
भाड़े ते किराया कूपादि कर्म दांतको विणज
देवा का कर्म ते नारेल सुपारी ते व्योपार
पत्थर आदि फोडवो

लक्खवाणिज्जे ७ रसवाणिज्जे ८ केसवाणिज्जे ९
लाखको वाणिज्य रस व्योपार ते वाल चमरादि
घी तेल रसादि व्योपार

विषवाणिज्जे १० जंत पिलणयां कम्मे ११
जहरको व्यापार कल घाणी प्रमुख कर्म

निलच्छणयां कम्मे १२ दवग्गिदावणयां कम्मे १३
कसी बाधियादि कर्म ते दावानलदेवो कर्म ते
ध्यानवरांन बाधी कर्म वनप्रमुखमेंलायलगायवो

सर दह तलाव सोसणिआ कम्मे १४ असईजण
द्रह तलाव आदि ने सोषावो ते कर्म असतीते असंजती
जनने
पोषणियां कम्मं १५ ॥ इति ॥
पोषवा नो कर्म

यह पंदरह कर्मादान आगारउपरान्ति सेया सें-
वाया होय तस्स मिच्छामि दोक्कडं ॥ ॥ इति ॥

आठमूं अनर्थ दंड विरमण व्रत पांचां बोलां
ओलखजे, द्रव्यकी अवज्झाणचरियं १
भूंडा ध्यान नों आचरवो
पम्मायचरियं २ हंसपयाणं ३ पाव कम्मोवएसं ४
प्रमाद करवो मारा हिन्सा पाप कर्मका उपदेश

यह च्यार प्रकारे अनर्थ दंड आठ प्रकारका आगारे
उपरान्ति सेऊँ नहीं ते कहे छे ।

आएहिउवा १ नाएहिउवा २ आघारिहिउवा ३
आपणे हित न्यातीलोक हित घरके हित
परिवारेहिउवा ४ मित्तहिउवा ५ नागहिउवा ६
परिवार के हित मित्रके हित नाग देवता निमित्त
भूत हेउवा ७ जक्ख हेउवा ८
भूत देवता हित जक्ष देवता हित

द्रव्यथकी येहिज द्रव्य, खेत्रथकी सर्व खेत्रामें, कालथकी जाव जीव लगं, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा, येहवा म्हारा आठमां व्रत के विषै जे कोई अतिचार दोष लागोहुवे ते आलोऊं ।

कंदर्पनी कथा कीधी होय १ भंड कुचेष्टा कीधी होय२
काम क्रीडाकी कथा को करनो भांडनीपरै कुचेष्टा करी होय
मुखसें अरि वचन बोल्या होय ३ अधिकरण
मुखसें खोटा वचन बोल्या होय सस्त्रादिकँ
जोडा मुकाया होय ४ उपभोग परि भोग
जुडाया तथा स्त्री भरतार नो विरह कीयो एक बार भोग में आव ते बारं बार भोग में आवै ते
अधिका भोग्या होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं
मर्यादा उपरान्ति अधिक भोग्या होय ते तो मिच्छामि दुक्कडं

॥ इति ॥

नवमो सामायक व्रत पांचां बोलां ओलखिजे
करेमि भन्ते सामाईयं सावज्जं जोगं पच्चखामि
करूं छूं मैं हे भगवंत सामायक सावद्य जोग पचखाण

जाव नियमं (महुरत एक) पज्जुवासामी दुविहेणं
यावत नियम एक महुर्त ते सेऊँ छूँ दोय करणसें
दोय घड़ी

तिविहेणं, नकरेमि नकारवेमि मनसा वायसा
तीनजोगसें, सावद्य नहीं करूँ नहीं कराऊं मनसे वचन से

कायसा तस्सभंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामी
शरीरसें तिणसुं हे पडिक मूं छू निन्दू छूँ गर्हणा ते
भगवान निपेंदू छूँ

अप्पाणं वोसरामि ॥
पाप से आतमांनिवोसराऊं छूँ

द्रव्यथकी कनैराख्या ते द्रव्य खेत्रथकी सर्व खेत्रासे, कालथकी एक महुरत ताई, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा यहवा नवमां व्रतके विषे जे कोई अतिचार दोष लाग्यो हुवे ते आलोऊं।

मन वचन कायका मांठा जोग प्रवर्ताया होय १ पाडवा ध्यान प्रवर्ताया होय, २ सामायक में समता नहीं कीहुवे ३ अण पूगी पारी होय ४पारवो विसार्यो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं

इति ॥

दशमों देशावगासी ब्रत पांचां बोलां ओलखजे द्रव्यथकी दिन प्रते प्रभातथी प्रारंभिने पूर्वादि छहुं दिशारी मर्याद की तिण उपरान्त जाई पांच आश्रव द्वार सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं तथा जेतली भूमिका आगार राख्या तिणमें द्रव्यादिकरी मर्याद करी जिण उपरान्त सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्यथकी ये हिज द्रव्य, खेत्रथी सर्व खेत्रों में, कालथकी जेतलो काल राख्यो, भाव थकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारे दशमा ब्रत के विषे जे कोई अतिचार दोष लागो ते आलोऊं ।

नवीं भूमिका बारली वस्तु अणाई होय १ मुकलाई होवे २ शब्द करी आपो जणायो होय ३ रूप करी आपो जणायो होय ४ पुद्गल नांखी आपो जणायो होय ५ तस्समिच्छामि दोकडं ।

इति

इग्यारमूं पोषध ब्रत पांचां बोलां करि ओलखिजे द्रव्यथकी ।

असण पाण खादिम स्वादिम नां पच्चखाण
आहार पाणी मेवादिक पानसुपारीद्विक को पचखाण
अबम्भनां पच्चखाण उमकमणी सुवन्ननां पच्चखाण
मैथुन सेवाका त्याग वोसरायो रत्नभोनाका त्याग
माला वणग विलेवन नां पच्चखान
पुष्पमाला गुलाल रंगादि चंदनादि नो विलेपनका त्याग
सत्थमुसलादि सावज्ज जोगरापच्चखाण
सस्त्र मूसलादि सावद्य जोगका पचखाण

इत्यादि पच्चखाण, करीनें द्रव्यराख्या जिण उपरान्ति पंच आश्रव द्वार सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा, द्रव्यथी येहिज द्रव्य, क्षेत्रथी सर्व क्षेत्रां में कालथकी (दिवस) अहो रात्री प्रमाण भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारे इग्यार मा व्रतके विषे जे कोई अतिचार दोष लागो होवे ते आलोऊं

सेज्जा संथारो अपडिलेहीहोय दुपडिलेही
सोवाकी जगा विसतर पडिलेहा नहीं होय आछीतरें नहीं
होय १ अप्रमार्ज्या होय दुप्रमार्ज्या होय २
पडलेहना नहींमामर्ज्या करी आछीतरें नहीं प्रमार्ज्या

उच्चारपास वण भूमिका अपडिलेही होय दुपडि
छोटी बडी नीतकी जमीन नहीं पडि लेहा होय अथवा
लेही होय ३ अप्रमार्जी होय दुपमार्जी होय ४
आछी तरें नहीं पूँज्या नही तथा रीत ममायो नहीं पूज्या होय
पडि लेहीहोय

पोषहमें निन्दा विकथा कषाय प्रमादकरी होय ५
तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

बारमुं अतिथि संविभाग व्रत पाँचां बोलां
ओलखिजे द्रव्यथकी ।

समणे निगंथे फासू एषणीज्जेणं असणं १
श्रमण निग्रथनें प्रासुक निर्दोष आहार
अचित

पाणं २ खादिमं ३ सादिमं ४ वत्थ ५ पडिग्गह ६
पाणी मेवो लौंग सुपारी आदि वस्त्र पात्रो

कंबल ७ पाय पुच्छणं ८ पाडियारा ९ पीढ़
कामलो पग पूछणों जाचीने पाछा पाट
सोंपावे ते समानत

फलग १० सेज्या ११ संथारो १२ ओषद १३
बाजोटादि जमीन जगां तृणादिक १ दवाई

भेषद १४ पडिलाभमाणो वीहरामि ॥
चुर्णादि प्रतिलाभतोथको विचरूँ-
घणी मिलीभोपदं

इत्यादिक चौदह प्रकारनूं दान शुद्ध साधूनें देऊं देवाऊं देवतां प्रतेभलो जाणूं मनसा वायसा काय, सा, द्रव्यथकी येहिज कल्पतो द्रव्य, खेत्रथकी कल्पै जिण खेत्रमें, कालथकी कल्पै जिण काल में भवथकी राग द्वेश रहित उपयोग सहित ,गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारा बारमां व्रत के विषै जे कोइ अतिचार दोष लागो होवे ते आलोऊं, सूजती वस्तु सचित पर मेली होय १ साचित्तथी ढांकी होय २ काल अतिक्रम्यो होय ३ आपणी वस्तु पारकी पारकीवस्तु आपणी कीधी होय ४ भाणैं वैठ भावना नहीं भाई होय तेहनूं मिच्छामि दोक्कडं ॥

अथ संलेखणा की पाटी ।

इह लोगा संसह प्पउगो १ परलोगा संसह
यह लोककी जसकी तथा द्रव्यादिका की इच्छा — पर लोकमें सुखकी इच्छा
प्पउगो २ जीविया संसह प्पउगो ३ मरणा संसह
जीवन की वंछा — मरण की वंछा

प्पउगो ४ काम भोगा संसहप्पऊगो ५ मा मु
इच्छा काम भोगकी इच्छा उपरोक्त पांविचार
ज्फहुज्ज मरणान्ते । मुजमें
मर्णान्त तक मत होज्यो । ॥ इती ॥
अठारह पाप...

प्राणातिपात १ मृषावाद २ अदेत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पैसुन्य १४ पर परिवाद १५ रति अरति १६ माया मोसो १७ मिथ्या दर्शन सल्य । इति

तस्स सव्वस्स आयारस्स दुचिंतीयं दुब्भासिएं दुचिट्ठिए
ते सर्व, अतिचार खोटी चिन्तवन खोटी भाषा खोटी
चेष्टा कायाकी
आलोयं तं पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि
आलोऊँ तेह पडिक्कमण में निन्दू ग्रहण। करूँ
अप्पाणं वोसरामि ॥
पाप कर्मथी आतमा ने वोसराऊँ ॥ इति ॥

अथ ।

तस्स धम्मस केवली पन्नत्तस्स अब्भुट्ठि यामि
ते धर्म केवली प्ररूपो तेनें विषे उठयो ते

आराहणाय विरमिउं विराहणाए सव्वेतिविहेण
आराधन निमित्त निवर्तु छू विराधनाणी अतिचार सर्व
त्रिविध करी
पडिक्कंतो, वंदामि जिने चौवीसं ॥
पडिकमूं छूं वांदु छूं जिन राज चौवीसनें
आशोयना करिके

॥ इति ॥

अथ मङ्गलीक ।

चत्तारि मंगलं अरिहन्ता मंगलं सिद्धा मंगलं
च्यार मंगलीक अरिहन्त मंगल छे सिद्ध मंगलकारी छे
साहू मंगलं केवली पणत्तो धम्मो मंगलं ॥
साधू मंगल केवली प्ररूप्यो धर्म ते मंगल
चत्तारिलोगउत्तमा अरिहन्ता लोगउत्तमा
ए च्यार लोकमें उत्तम अरिहन्त लोक में उत्तम
जाणवा
सिद्धा लोगउत्तमा साहूलोगउत्तमा केवली
सिद्ध लोकमें उत्तम साधु लोकमें उतम केवलीमे
पणतो धम्मो लोगउत्तमा ॥ चत्तारि शरणं
प्ररूप्यो धर्म ते लोक में उतम ॥ च्यार शरणां
पवज्जामि अरिहन्ता शरणं पवज्जामि सिद्धा
ग्रहणकरूं अरीहन्तोंका शरणां ग्रहण करता हूं सिद्धांका

शरणं पवज्जामि साहू शरणं पवज्जामि केवली
शरणं लेता हूं साधू का शरण है केवली
पण्णत्तो धम्मो शरणं पवज्जामि ॥ च्यारों शरणा
प्ररूपित धर्म का शरण ग्रहण करता हूँ
एसणा अवर न सरणो कोय जे भव प्राणी आदरै
अक्षय अमर पद होय ।

॥ इति ॥

देवसी पाय छित्त विशोधनार्थे करेमि काउस्सग्गं

॥ इति प्रतिक्रमणं ॥

अथ पडिक्कमणां करनें की विधी ।

प्रथम चौबीसत्थो करणो जिण में

इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी । तसोत्तरी की पाटी २ । ध्यान में इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी मनमें चितार कर एक नवकार गुणनों ३ । लोगस्स उज्जोगरे की पाटी ४ । नमोत्थुणं की पाटी ५ ।

१ प्रथम आवश्यक सामाइक में ।

१ आवस्सई इच्छामिणं भंते ।

२ नवकार एक

३ करेमि भंते सामाईयं ।

४ इच्छामिठामी काउसग्ग ।

५ तसोत्तरी की पाटी ।

ध्यानमें ६६ नन्नाणवें अतीचार

आगमें तिविहे पन्नत्ते की पाटी तिणमें ज्ञानका चवदह अतीचार १४

दंसण श्रीसमत्ते की पाटी । तिणमें समकितका ५ अतिचार ।

बारह व्रतांका अतिचार ६० तथा १५ कर्मादान ।

इह लोग संसह प्पउगेकी पाटी । (तिणमें) अतिचार ५ सलेखणांका । यह सर्व ६६ अतिचार

अठारह पाप स्थानक कहणा ।

इच्छामि ठामि आलोऊं जो मे देवसी आइयार-कउ ए पाटी कहणी ।

एक नवकार कह पारलेणो ।

॥ इति प्रथम आवसग्ग समाप्त ॥

❀ दूसरा आवसग्ग की आज्ञा ❀

लोगस्सकी पाटी ।

॥ इति दूजो आवस्सग समाप्त ॥

❀ तीजा आवस्सगकी आज्ञा ❀

दोय खमा समणा कहणा ।

इति तीजा आवस्सग्ग समाप्त ॥

❀ चौथा आवस्सगकी आज्ञा ❀

ऊसाथकां ध्यानमें कह्या सो प्रगट कहणा ।

८ आठ पाटी नैटाथकां कहणी जिणांकी विगत ।

१ तस्स सव्वस्सकी पाटी ।
२ एक नवकार ।
३ करेमि भंते सामाइयं की पाटी ।
४ चत्तारि मंगलकी पाटी ।
५ इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी ।
६ इच्छामि ठामी आलोऊं जो मे देवसी ।
७ आगमे तिविहे की पाटी ।
८ दंसण श्री समत्तेकी पाटी ।

ये आठ पाटी कहकर बारह व्रत अतिचार सहित कहणा।

पांच संलेखणा का अतिचार कहणा ।

अठारे पाप स्थानक कहणा ।

इच्छामि ठामि आलेऊं जो मे देवसीकी पाटी कहणी, तस्स धम्मस्स केवली पन्नत्तस्सकी

पाटी, दोय खमासमणां कहणां ।

पांच पदांकी वंदना कहणी ।

सातलाख पृथ्वीकाय सातलाख अप्काय इत्यादी खमत खामणांकी पाटी ।

॥ इति चौथा आवस्सग समाप्त ॥

❀ पंचमा आवस्सगकी आज्ञालेई कहै ❀

१ देवसी पायच्छित्त विसोधनार्थं करोमिकाउसग्गं

२ एक नवकार ।

३ करेमिभंते सामाइयं की पाटी ।

४ इच्छामि ठामि काउसग्गकी पाटी ।

५ तस्सोत्तरी की पाटी ।

ध्यानमें लोग्गस कहणांकी परंपराय रीतसे । प्रभाते तथा सांझ वक्त ४च्यार । लोग्गसको ध्यान पक्खीने १२बारह लोगस्सको ध्यान । चौमासीनें २० को, छमच्छरीनें ४० को एक नवकार गुणकर ध्यान पारणा; छट्ठा आवस्सग की आज्ञा लेई कहै. गये कालको पडि कमणो वर्तमान कालमें समता आगमें कालका पच्खाण यथा शक्ति करणां ।

समाई १ चौवीसथौ २ वंदना ३ पडिक्कमणो ४ काउसग्ग ५ पच्चखाण ६ यां छहुं आवश्यगां मैं ऊंची नीची हिणी अधिक पाटी कही होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

दोय नमोत्थु णं कहणां जिणमें पहिला मैं तो सिद्धगई नाम धेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं

दूजा नमोत्थू णं मैं सिद्धगई नाम धेयं ठाण सम्पवेकामी नमो जिणाणं ।

॥ ढाल ॥

॥ श्रावक तोमजी कृत ॥

इण स्वार्थ सिद्धरे चन्द्रवे ॥ एदेशी ॥

तेरा नहीं ते सर्व अनेरा, ते संसारमैं रड वडिया जी, तेरा ते तो असलजतेरा, ते ज्ञान ध्यानगुण भरियाजी, इणभर्त्त खेत्रमें चेत चतुरनर तेरा पंथी तिरियाजी ॥ १ ॥ सुमति गुप्त आठूं सुधपाले, पंच महाव्रत धारियाजी, ए तेरा पाल्यां तेरा पंथी, ते मुक्ति नगरनें खडियांजी ॥ इण भर्त्त खेत्रमैं ॥ २ ॥ तेरा ते तिरिया इण लेखै, ते कर्म कटकसें लडियाजी, सूधी रीते संजम पालै, ते शिवरमणी नैं वरियाजी ।

इण ॥ ॥ ३. तेरापंथमें झुलरह्या छै, चोखी करै छै किरियाजी; मान्यो मोह मेवासी मोटो; त्यांरा कारज सारियाजी ॥ इण ॥ ४ ॥ तेरामति में तेरा पंथी संजम पाखरधरियाजी, त्यांरी चरचा चलगत सुणने पाखंडी थर हरियाजी ॥ इण ॥ ५ ॥ आज्ञा बारै धर्म प्ररूपै ते आणांबारे पडियाजी, ते आज्ञाबारै बारह पंथी, ते मिथ्यामतमें जडियाजी ॥ इण ॥ ६ ॥ तेरा त्यारी शरधा चोखी, नव तत्व निर्णय करियाजी जिन आणामें धर्म परूपै, ते सुलटे मारग पडियाजी ॥ इण ॥७ ॥ सूरा हाकपाडै जब गीदड, तापदेख थर हरियाजी, ज्यों तेरापंथी करडा देखी; भेषधारी अति डरियाजी ॥ इण ॥ ८ ॥ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

शुद्ध साधांने असुद्ध दानदे' जाणी अशुद्धले साध
दोनुं डूबा बापडा, जिनवर वचन बिराध ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ (राग मल्लार)

॥ स्वामी श्री भीखनजी कृत ॥

गोतम स्वामी में गुण घणां ॥ पदेशी ॥

तीन बोलां करि जीवेन अल्प आउपो बंधाय ।

हिन्सा करेप्राणी जीवनी। बलिबोलै मुसा बायजी साधांनें अशुद्ध वहिरायजी। । हिन्सा करि चोसी नायगां बणायजी। साधांनें उतारणरी मन म्हांयजी तिणरे अशुभ कर्म बंधायजी। तीजेठाणें कह्यो जिनरायजी। बलि सुत्र भगवती म्हांयजी।

श्री वीर कहे सुण गोयमां ॥ ए आंकडी ॥ १ ॥

दड लीपे साधु कारणेंजी, छपरा देवें छाय। केलु पिण फिरतां थकां, जमियां जाला उखेलै ताहायजी लीलण फूलण मारी जायजी, अनन्ता जीव छै तिणरे म्हांयजी बलि अवर हणीं छकायजी। तिणरी दया न आणी कांयजी तिणरे अल्प आयु बंधायजी ॥ श्री बीर कहे ॥ २ ॥

नींव दिरावै ठेट सूंजी, टांकी वजावै ताहाय भेला करि भाटा चूणें, तिण बोहोत हणीं छै कायजी, अनन्ता जीव हणियां जायजी, ते पूरा केम कहि वायजी, साधांने उतारणरी मन ल्याय-जी तिण मोटो कियो अन्यायजी, तिणरे अल्प आयु बंधायजी ॥ श्री बीर ॥ ३ ॥

जिण गरथ दियो थानक कारणजी, तेपण मारी छकाय; किण मोल भाडे ले भोगव्यो; किणथाप राखी छै ताहायजी, इत्यादिक दोखीला कहिनायजी, खीणं खोदे सघोंकरे जायजी; बिधिं सूं मारी छकायजी, बलि मन मांहिं हरषित थाय जी तिणरे अल्प आयु बंधायेजी ॥
श्री बीर ॥ ४ ॥

आहार सेज्झा वस्त्र पातरजी, इत्यादिक द्रव्य अनेक अशुद्ध बहिरावे साधू नें; तेडूबा बिना विवेकजी, त्यांझाली कुगुरांरी टेकजी, त्यांरे कर्म आडि काली रेखजी; त्यानें सीख न लागे एकजी; गुरुने पण भ्रष्ट किया विसेखजी; संसय हुवे तो सूत्र ल्यो देखजी ॥ श्री बीर ॥ ५ ॥

पाप उदय हुवे एहनें तो, पड़ै नीगोदमें जाय अनन्त उत्कृष्टा भव करे, त्यांमार अनन्ती खायजी रहे घणीं संकडाई मांयजी, जठ नहीं निगोद में तायजी, बलि मरण वेगो वेगो थायजी; उपजै नें बिलायजी; तिणरो लेखो सूणों चित्त ल्यायजी ॥
श्री बीर ॥ ६ ॥

सतरह भव जाभेरा करे, एक सोसोसास मं-भार एक महूर्त में भव करे साडा पैसट हजारजी वलि छत्तीस अधिक विचारजी, एहवी जनम म-रणरी धारजी, मरण पामें अनन्ती वारजी, अन न्ता कालचक्र मंभारजी, त्यांरो वेगो न आवे पारजी ॥ श्री वीर ॥ ७ ॥

तथा पहली पडै बंध नरक नो तो, पडे नरक में जाय खेत्र बेदन छै अति घणी, परमाधामी मारे बतलावजी, तिहां मार अनन्ती खायजी उठे कोण छुडावे आयजी, भूख तृषा अनन्ती थायजी दुखमें दुख उपजै आयजी, अशुद्ध दान दीयां ए फल थायजी ॥ श्री वीर ॥ ८ ॥

दुख भोगविया नरक में जी, सेषबाकी रह्या पाप, तिणसुं जीव उपजे जाय तिर्यंच में, उठे पण घणो सोग संतापजी, नहीं छूटे कियां वि-लापजी, आडा नहीं आवे गुरु मा बापजी, दुख भोगवे आपो आपजी, अशुद्ध दान दीयां धर्म थापजी, ए मिथ्या कुगुरु तणो प्रतापजी ॥ श्री वीर ॥ ६ ॥

अशुद्ध जांणीनें भोगवे, त्यां भांगी जिनवर पाल अनन्त उत्कृष्टा भव करै, नर्कमें जीसें टांको भालजी, उठ मार देसे नर्कनां पालजी, कीधा कर्म लेवे सँभालजी, ऐसी कर्तव्य सांमो निहालजी, भगवती पहिलो शतक सँभालजी, वलि नवमों उदेसो संभालजी ॥ श्री वीर ॥ १० ॥

आधा करमी जाणीं भोगवें, तो बंधै चिकणां कर्म, वलि भ्रष्टथया आचारथी, त्यां छोड दीयो जिन धर्मजी, निकल गयो त्यांरो मर्मजी छोड दीधी लज्जानें सर्मजी, विगोय दीयो जिन धर्म जी, दुख पाम्यों उत्कृष्टो पर्मजी ॥ श्री वीर ॥ ११ ॥

साधूकाजे हणें छकाय नैं, ते वार अनन्ती हणाय, साधू जाणीनें भोगवे ते पण अनन्ता जनम मरण करै ताहायजी, ए तो दोनूं दुखिया थायजी, भव २ में मार्यां जायजी, ए कर्तव्य सूं मारे छकायजी, ते दुख भोगव लेवे तायजी त्यांरो पार वेगों नहीं आयजी ॥ श्री ॥ १२ ॥

छकायरे अशुभ उदय हुवा ते पामें येकारसुं

मात जे साधू पड़िया नर्क निगोद में सेवकांने लेजावे सोथजी त्यां ज्ञानी कुगुरांरी वातजी किधी त्रस स्थावरनीं घातजी अनन्ता काल दुख में जातजी यानें पण कुगुरां डबोया साख्यातजी ॥ श्री वीर ॥ १३ ॥

कुगुरांनें डबोया श्रावका श्रावकानें डबोया साधू दोनूं पड़िया नर्क निगोद में, श्री जिनवर धर्म विराधजी, संसार समुद्र अगाधजी, जिन धर्मरी रहस नहीं लाधजी, भव भव में पामें असमाधजी ए पण कुगुरां तणों प्रसादजी ॥ श्री ॥ १४ ॥

अशुद्ध जाणीं देवे साधूनें ते साधांनें लूंटि लिया ताहाय, पाप उदय हुवे इण भवे, दुख दारिद्र धसे घर मांहायजी, ऋद्ध सम्पति जावे बिलायजी दुख मांहि दिन जायजी, कदा पुन्य भारी हुवे तायजी, तो पर भव में शंका नहीं कांयजी ॥ श्री वीर ॥ १५ ॥

इम सांभल नर नारियांजी, कीज्यो मन में बिचार, शुद्ध साधां नें जाणनेंजी अशुद्ध मत दीज्यो किणवारजी अशुद्धमें धर्म नहीं लिगारजी

सुभ दान दे लाहो ल्यो सारजी ज्यूं उतर जावो भव पारजी ए मनुष्य जनम नो सारजी ॥ श्री वीर कहै सुण गोयमा ॥ १६ ॥ ॥ इति ॥

॥ राग भैरवी ॥

॥ ढाल ॥ श्रीकालूगणीस्तवना

श्रीकालूगणीराज तिहारो सुयस तूर जगवाजे छै ॥ ए आंकडी ॥

सासण वीरतणें भिच्छूके अष्टम पाठ विराजे छै गुण छटतीस जगीस गणाधिप अष्ट सम्पदा छाजै छै ॥ श्रीकालू ॥ १ ॥ ज्ञान घटा जिन बानछटा सुन संघिपटा घन लाजे छै वरषित ऋतु समकित चुन २ चित हरषित भविक समाजे छै ॥ श्री कालू ॥ २ ॥ गद्य पद्य काव्य सुरित गीत स्वर श्री मुख मिष्ट दिवाजे छै हद उदघोषरु कोष न्याय करि जोस भवोदधिपाजे छै ॥ श्रीकालू ॥ ३ ॥ दुर बुद्धि पाखंड पसू मिथ्या निशि कूक घूक डर भाजे छै मानू आज भारत में भानू प्रगट प्रकास रिवाजै छै ॥ श्रीकालू ॥ ४ ॥ चाकर तुम चरनांरो

आकर देख दरिश सुख साजै छै गुलाब कहै ए ऐरयी रागै सुग्रा सुत हित सुख काजै छै ॥ श्री कालू ॥ ५ ॥ ॥ इति ॥

कलश

इम ढाल बाच्या करै कराबे पाप परचा पर हरै । जे भविक समकित रतन पामें आतम गुण उज्वल करै ॥ श्रीकालू गणी गुण सागरु बुद्धि आगरु सारां सिरै । कहै गुलाब श्रावक आत्म भावक शिव रमणी वेगीवैर ॥ १ ॥

अथ गतागतका थोकड़ा ।

जीवका ५६३ भेदकी विगत ।

१४ सात नारकी का पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

४८ तिर्यंच का—

४ सूक्ष्म बादर पृथ्वीकायका पर्याप्ता अपर्याप्ता

४ सूक्ष्म बादर अपकायका पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

४ सूक्ष्म बादर वायुकायका पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

४ सूक्ष्म बादर तेउकायका पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

६ सुक्ष्म (बादर, प्रत्येक साधारण वनस्पती कायका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

६ तीन विकलेन्द्री का पर्याप्ता अपर्याप्ता।

२० जलचर थलचर उरपर भुजपर खेचर ए पांच प्रकार का तिर्यच सन्नी असन्नी का पर्याप्ता अपर्याप्ता।

३०३ मनुष्यका—

२०२ सन्नी मनुष्य. १५ कर्म भूमी, ३० अकर्म भूमी, ५६ अन्तर द्वीप यह १०१ का पर्याप्ता अपर्याप्ता।

१०१ असन्नी मनुष्य ते सन्नी मनुष्य का मलं मूत्रादि चउदह स्थानक मे उपजै ते अपर्याप्ता, अपर्याप्त अवस्थामें मरै

१९८ देवताका—

भुवनपती १०, परमाधर्मी १५, वानव्यन्तर १६, जिम्भूमका १०, जोतषी १०, किल्विषी ३, लोकान्तिका ९, देवलोक १२, ग्रैवेयक ९, अनुत्तर विमान ५, एहह९ जातिका पर्याप्ता अपर्याप्ता। ॥ इति ॥

भर्त्तखेत्रमें ५१ पावे—

तिर्यचका ४८ मनुष्य ३।

जम्बुद्वीप ७५ पावे—

२७ भर्त्तखेत्र १ ऐरभर्त्त १, देवकुरु १, उत्तरकुरु १, हरिवास १, रम्यकवास १, हेमवंय १, अरुणवय १, माहाविदेह १, यह नव खेत्र का सन्नी मनुष्य पर्याप्ता अपर्याप्ता १८, तथा असन्नी मनुष्य ९

४८ तिर्यचका

लवण समुद्र में पावे २१६—

अंतरद्वीप ५६ का तो १६८, तथा ४८ तिर्यंचका।

धातकी खंड में पावे १०२—

५४ मनुष्य का अठारह क्षेत्रों का तिगुणा; ४८ तिर्यंचका।

कालो दधि में पावे ४६—

तिर्यंचका ४८ में से बादर तेउका २ टल्या

अर्ध पुष्कर वर द्वीप में पावे १०२—

धातकी खंडवत् जाणवो।

ऊँचा लोक में पावे १२२—

७६ देवताका।

४६ तिर्यंचका।

नीचा लोक में पावे ११५—

भवनपति २०; परमाधर्मी ३०; नारकी १४; तिर्यंचका ४८;

मनुष्य का ३ सर्व ११५।

तिर्छा लोक में पावे ४२३—

३०३ मनुष्य का।

४८ तिर्यंच का।

३२ वानव्यन्तर का।

२० त्रिभूम का।

१० जोतिष्यां का।

१	पहली नारकी में	आगति २५	१५ कर्म भूमि, मनुष्य, ५ तिर्यंच पंचेन्द्री ५ सन्नी ५ असन्नी पर्याप्ता
		गति ४०	१५ कर्म भूमि मनुष्य, तिर्यंच ५ पंचेन्द्री सन्नी का पर्याप्ता अपर्याप्ता ४०
२	दूजी नारकी में	आगति २०	१५ कर्म भूमी मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्त।
		गति ४०	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता अपर्याप्ता ४०
३	तीजी नारकी में	आगति १९	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ४ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता, भुज पर टल्यो
		गति ४०	१५ कर्म भूमी मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता अपर्याप्ता ४०
४	चौथी नारकी में	आगति १८	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ३ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता (भुजपर १ खेचर २ टल्यो)।
		गति ४०	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता अपर्याप्ता
५	पांचवीं नारकी में	आगति १७	१५ कर्म भूमी, मनुष्य १ जलचर, १ थलचर का पर्याप्ता
		गति ४०	१५ कर्म भूमी, ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता अपर्याप्ता ४०
६	छट्ठी नारकी में	आगति १६	१५ कर्म भूमी; १ जलचर सन्नी का पर्याप्ता
		गति ४०	१५ कर्म भूमी, ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता अपर्याप्ता ४०

७	सातमी नारकी में	आगति १६	१५ कर्म भूमी, १ जलचर सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता
		गति १०	५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता अपर्याप्ता १०
८	१० भवनपति १५ परमाधर्मी १६ वाणव्यंतर १० त्रिजृंभक ५ १ जोतिकामें	आगति १११	१०१ सन्नी मनुष्य, ५ सन्नी, ५ असन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता १११
		गति ४६	१५ कर्म भूमी मनुष्य ५ सन्नी तिर्यंच १ पृथ्वी १ अप्प, १ वनस्पति का पर्याप्ता अपर्याप्ता
९	जोतिषी पहिला देवलोक में	आगति ५०	१५ कर्म भूमी, ३० अकर्म भूमी ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता
		गति ४६	१५ कर्म भूमी, ५ सन्नी तिर्यंच १ पृथ्वी, १ अप्प, १ वनस्पति का, पर्याप्ता अपर्याप्ता
१०	दूसा देवलोक में	आगति ४०	१५ कर्म भूमी, ५ सन्नी तिर्यंच, २० अकर्म भूमी का पर्याप्ता (५ हेमवय ५ एरणवय, टलया)
		गति ४६	उपरवत्
११	पहिला किल्विषी में	आगति ३०	१५ कर्म भूमी, ५ सन्नी तिर्यंच, ५ देवकुरु ५ उत्तरकुरु का पर्याप्ता
		गति ४६	उपरवत्
१२	दूसरा तीजा किल्विषी तीजा से आठवां तांई का देवता में	आगति २०	१५ कर्म भूमी, ५ सन्नी तिर्यंच पर्याप्ता
		गति ४०	१५ कर्म भूमी, ५ सन्नी तिर्यंच पर्याप्ता अपर्याप्ता

१३	नवमांले सर्वार्थ सिद्ध तांई	आगति १५	१५ कर्म भूमी मनुष्य का पर्यासा
		गति ३०	१५ कर्म भूमी का पर्यासा अपर्यासा
१४	पृथ्वी पांणी वनस्पति में	आगति २४३	१०१ असन्नी मनुष्य, ४८ तिर्यञ्च, १५ कर्म भूमी का, ३० पर्यासा अपर्यासा एवं १७९ लड़ी का और ६४ जाति का देवता एवं सर्व २४३ थया
		गति १७९	लड़ीकी
१५	तेऊ वाऊ काय में	आगति १७९	लड़ीकी
		गति ४८	तिर्यंचकी
१६	तीन वेकेंलद्री में	आगति १७९	लड़ीकी
		गति १७९	लड़ीकी
१७	असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री में	आगति १७९	लड़ीकी
		गति ३९५	१७९ तो लड़ीका, ५१, अन्तरद्वीप ५१ जातिका देवता, १ पहली नार की एह १०८ का पर्यासा अपर्यासा २१६ सर्व मिली ३९५
१८	सन्नी तिर्यञ्च में	आगति २६७	१७९ तो लड़ीका, ८१ देवता, ७ नारकी पर्यासा (नवमां से सर्वार्थ सिद्ध तांई टल्या)
		गति ५२७	(नवमांसे सर्वार्थ सिद्ध तांई का टल्या

१६	असन्नी मनुष्य में	आगति १७१	लड़ीका में से तेउ बाउका न टल्या
		गति १७१	लड़ीका
२०	सन्नी मनुष्य में	आगति २७६	१७१ तो लड़ीका में से, ६६ देवता ६ नारकी
		गति ५६३	सर्व
२१	देवकुरु उत्तर कुरु का युग लिया में	आगति २०	१५ कर्म भूमी, ५ सन्नी तिर्यंच
		गति १२८	१० भवनपति, १५ परमाधर्मी, १६ वाणव्यंतर, १० त्रिजृंभका, १० जोतषी, २ पहिला दूजा देवलोक, १ पहलो किल्विषी एवं ६४ का पर्याप्ता अपर्याप्ता
२२	हरीवास रम्यकवास का युगलियां में	आगति २०	उपरवत्
		गति १२६	६४ जातिका देवता में से १ पहिलो किल्विषी टल्यो
२३	हेमवय अरु-णवय का युगलियां में	आगति २०	उपरवत्
		गति १२४	६४ जातिका देवां में किल्विषी १ और दूजो देवलोक टल्यो बाकी पर्याप्ता
२४	५६ अन्तरद्वीप युगलियां में	आगति २५	१५ कर्म भूमी, ५ सन्नी, ५ असन्नी तिर्यंच
		गति १०२	५१ जातिका देवांका पर्याप्ता अपर्याप्ता

२५	केवलीयां में	आगति १०८	८१ देवता (पर्मा धर्मी १५, किल्विषी ३ टल्या) १५ कर्म भूमी. ४ पहली सुं चौथी नर्क, ५ सन्नी तिर्यञ्च, १ पृथ्वी १ अप्य १ वनस्पति
		गति ०	मोक्षकी
२६	तीर्थंकरा में	आगति ३८	३५ देवता वैमानिक, ३ नरक पहली सुं
		गति ०	मोक्ष
२७	चक्रवर्त में	आगति ८२	८१ जाति का देवता उपरवत्, १ पहली नरक
		गति १४	७ सात नारकी में जाय पदवी में मरेतो
२८	वासुदेव में	आगति ३२	१२ देवलोक, ६ नवग्रीवेयक, ९ लोकान्तिया तथा २ नारकी पहली दूजी
		गति १४	७ नारकी में जाय
२९	बलदेव में	आगति ८३	८१ जातिका देवता उपरवत् २, नारकी पहली दूजी
		गति ०	पदवी अमर है
३०	सम्यक दृष्टी में	आगति ३६३	१७१ लड़ीका (तीन वाउका टल्या) ९९ देवता, ८६ युगलिया, ७ नारकी
		गति २५८	९९ देवता, १५ कर्म भूमी, ६ नारकी, ५ सन्नी तिर्यंच का पर्यासा अपर्यासा ५ असन्नी, ३ विकलेन्द्रीक अपर्यासा एवं २५८

३१	मिथ्यादृष्टि में	आगति ३७१	१७९ लड़ाका, ९९ देवता, ८६ जुगलीया, नारकी ७ एवं
		गति ५५३	५ अनुत्तर का पर्याप्ता अपर्याप्ता टलेने
३२	सम मिथ्या दृष्टी में	आगति ३६२	समदृष्टि जिम
		गति ०	तिणे गुण ठाणे मरे नहीं
३३	साधू में	आगति २७५	१७१ लड़ीका, ९९ देवता ५ नारकी
		गति ७०	१२ देवलोक, ९ लोकान्तिया, ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर का पर्याप्ता अपर्याप्ता
३४	श्रावक में	आगति २७६	१७१ लड़ीका, ९९ देवता, ६ नारकी
		गति ४२	१२ देवलोक, ९ लोकान्तिया, पर्याप्ता अपर्याप्ता
३५	पुरुष वेद में	आगति ३७१	मिथ्याति जिम जाणवो
		गति ५६३	सर्व
३६	स्त्री वेद में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५६१	सातमी नरक में नहीं जाय
३७	नपुंसक वेद में	आगति २८५	९९ देवता, १७९ लड़ीका ७ नारकी
		गति ५६३	सर्व

१	शुक्लपक्षी	आगति ३७१	१७१ तो लड़ीका, ६६ देवता, ८६ युगलीया ७ नरकी
		गति ५६३	सर्व
२	कृष्णपक्षी	आगति ३६६	३७१ में ५ अनुत्तर टल्या
		गति ५५३	५ अनुत्तरका पर्याप्ता अपर्याप्ता टल्या
३	अधर्म में	आगति ३६६	उपरवत्
		गति ५५३	उपरवत्
४	धर्म में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५६३	सर्व
५	बाल वीर्य में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५५३	५ अनुत्तरका १० टल्या
६	पण्डितवीर्य में	आगति २७५	१७१ लड़ीका में सें, ६६ देवताका, ५ नारकी पहली सें
		गति ७०	१२ देवलोक, ६ लोकान्तिका, ६ नवग्रीवेग ५ अनुत्तर वैमान का पर्याप्ता अपर्याप्ता

७	बाल पंडित वीर्य में	आगति २७६	१७१ तो लड़ीका में से, ६६ देवता, नारकी ६ पहिली से
		गति ४२	१२ देवलोक, ६ लोकान्तियां का पर्याप्ता अपर्याप्ता
८	मति श्रुति ज्ञान में	आगति ३६३	१७१ तो लड़ीका में से, ६६ देवता ८६ युगलियां, ७ नारकी एवं ३६३
		गति २५८	६६ देवता, १५ कर्म भूमी, ५ सन्नी तिर्यंच, ६ नारकी, यह १२५ का पर्याप्ता अपर्याप्ता २५० और ५ असन्नी तिर्यंच ३ विकलेन्द्री का अपर्याप्ता ८ सर्व २५८
९	अवधि ज्ञान में	आगति ३६३	उपरवत्
		गति २५०	६६ देवता का, १५ कर्म भूमी, ५ सन्नी तिर्यंच, ६ नारकी यह १२५ का पर्याप्ता अपर्याप्ता
१०	मतिश्रुति अज्ञान में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५५३	५ अनुत्तर का पर्याप्ता अपर्याप्ता टल्या
११	विभंग अज्ञान में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति २४२	६४ देवता (अनुत्तर टल्या) १५ कर्म भूमी, ५ सन्नी तिर्यंच, ७ नारकी पर्याप्ता अपर्याप्ता
१२	चक्षु दरिशन में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५६३	सर्व

१३	निकेवल अचचु दरिशन में	आगति २४३	१७६ लडीका, ६४ जातिका देवता का पर्याप्ता
		गति १७६	लडीका
१४	समुचय अचचु दरशन में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५६३	सर्व
१५	अवधि दरशन में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति २५२	९९ देवता, १५ कर्मभूमी, ५ सन्नी तिर्यंच, ७ नारकी, यह १२६ का पर्याप्ता अपर्याप्ता
१६	सुक्ष्म एकेन्द्री में	आगति १७९	लडीका
		गति १७९	लडीका
१७	बादर एकेन्द्री में	आगति २४३	१७९ लडीका ६४ देवता
		गति १७९	लडीका
१८	संयोगी अणाहारिक	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ०	

१६	तेजस कारमाण में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५६३	सर्व
२०	वैक्रे शरीर मूलका में	आगति १११	१०१ सन्नी मनुष्य, ५ सन्नी ५ असन्नी तिर्यंच
		गति ५६	१५ कर्म भूमी, ५ सन्नी ५ असन्नी तिर्यंचः पृथ्वी १ पाणी २ वनस्पति ३ ए २८ का पर्याप्ता अपर्याप्ता
२१	समुचे वैक्रे शरीर में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५६३	सर्व
२२	औदारिक शरीर में	आगति २८५	१७१ लडिका ६६ देवता, ७ नारकी
		गति ५६३	सर्व
२३	कृशन लेस्या को कृशन लेस्या में जावे तो	आगति ३१६	१७१ लडिका ५१ जातिका देवता ८६ युगलिया ३ नारकी पांचवी छट्टी सातमी
		गति ४५६	५१ जातिका देवता ८६ युगलियां ३ नारकी, इनका पर्याप्ता अपर्याप्ता २ लडिका १७१ सर्व४५६
२४	नील लेस्याको नील में जावे तो	आगति ३१६	१७१ लडिका ५१ देवता ८६ युगलिया ३ नारकी तीजी चोथी पांचवी
		गति ४५६	उपरवत् (नारकी तीजी चोथी पांचमी)

२५	कापोत लेस्याको कापोतमें जावेतो	आगति ३११	उपरवत् पण नारकी पहली दूजी तीजी जाणो
		गति ४५१	उपरवत् (नारकी पहलीसेतीजी
२६	तेजू लेस्या को तेजू में जावे तो	आगति १६०	६४ जातिका देवता ८६ युगलिया का पर्याप्ता और १५ कर्म भूमी ५ सन्नी तिर्यंचका पर्याप्ता अपर्याप्ता
		गति ३४२	१०१सन्नी मनुष्य५ सन्नी तिर्यंच ६४ जाति देवता, का पर्याप्ता अपर्याप्ता, पृथ्वी अप्य, वन-स्पति का अपर्याप्ता
२७	पद्मको पद्म लेस्या में जावे तो	आगति ५२	१५ कर्म भूमी मनुष्य ५ सन्नी तिर्यंचका पर्याप्ता अपर्याप्ता ६ नवग्रीवेग १ दूजो किल्वेषी, ३ देवलोक पहिलासे).पर्याप्ता
		गति ६६	१५ कर्म भूमी, ५ सन्नी तिर्यंच ६ लोकान्तिया,४ देवलोक तीजा से) का पर्याप्ता अपर्याप्ता
२८	शुक्ल लेस्याको शुक्लमें जावे तो	आगति ६२	१५ कर्म भूमी, ५ सन्नी तिर्यंचका पर्याप्ता अपर्याप्ता ४० और २१ देवलोकः छट्टासे सर्वार्थ सिद्ध तांइ १ किल्वेषी का पर्याप्ता
		गति ८४	१५ कर्म भूमी ५ सन्नी तिर्यंच २१ देवलोक उपरवत १ तीजा किल्वेषीका पर्याप्ता अपर्याप्ता

❋ इति दूजो गतागत को थोकड़ो ❋

॥ ढाल ॥

श्रीवीरजी वखानी हो मुनिस्वर करणी आपरी । (एदेशी)

तुमपै वारी हो हुं बलिहारी हो भिक्षु गणी थांरा नामरी ॥ कह्यो सिद्धान्त मँझार ॥ ले भिक्षा शुद्ध आहार ॥ दोष बयांलीटार ॥ तुमपे वारी हो ॥ हुं ॥ भि ॥ ए आंकड़ी ॥

पंचमें आरे हो मुनीस्वर ॥ आपज अवतारिया ॥ इण द्विज भरत्त मँझार ॥ तु ॥ हुं ॥ भि ॥ गाम-कन्टाल्यो हो ॥ मु ॥ मरुधर देसमें ॥ साह बलू सुखकार ॥ तु ॥ हुं ॥ भि ॥ १ ॥ओस बंस नीको हो ॥ मु ॥ तीखो केशरी ॥ स्वप्न विलोकी मात ॥ तु ॥ हु ॥ भि ॥जननी थारी हो ॥ मु ॥ दीपांरे भली ॥ फुन शुकलेचा जात ॥ तु ॥ हु ॥ भि ॥ २ ॥सम्वत् तीयासी हो ॥ मु ॥ सतरह सह भलो ॥ आपलियो अवतार ॥ तु ॥ ॥ हुं ॥ भि ॥ इक त्रिय परणी हो ॥ मु ॥ संयम चित भयो ॥ थयाद्रव्य अणगार ॥ तु ॥ हु ॥ भि ॥ ३ ॥ जिन बच बांच्या हो ॥ मु ॥ राच्या ज्ञान में ॥ (तब) छान्डि कुगुरुको संग ॥ तु ॥ हुं ॥ भि ॥ सत श्र-

ग। दशहो ॥ मु ॥ सतरह सम्वत् लियो भाव चरख॥ अतिचंग ॥ ॥ तु हुं ॥ भि ॥४॥ जीवत असंजम हो ॥ मु ॥ अघकारक कह्यो ॥ कही विषसम अ-व्रत आप ॥ तु ॥ हुं ॥ भि ॥ सेयां सेवायां हो ॥ मु ॥ वलि अनु मोदियां ॥ तीनूं करणा पाप ॥ तु ॥ हुं ॥ भि ॥ ५ ॥ अम्ब धतूरे हो ॥ मु ॥ नहिं फल सारिषा॥ तिम द्विज पात्र कुपात्र ॥ तु ॥ हुं ॥ भि ॥ जे समदृष्टी हो॥ मु ॥ करे इम पारखा वर तसूं संयम जात्र ॥ तु ॥ हुं ॥ भि ॥ ६ ॥ निर्वद्य करणी हो ॥ मु ॥ कहि जिन आगमें सावद्य आणी बार ॥ तु हुं ॥ भि ॥ दया अनु-कम्पा हो ॥ मु ॥ करवी सहु तणी ॥ मोह अनु-कम्पा निवार ॥ तु ॥ हुं ॥ भि ॥ ७ ॥ जेहवो मारग हो ॥ मु ॥ श्रीवीतरागनो ॥ तेहवो बता-यो आप ॥ तु ॥ हुं ॥ भि ॥ रागरु द्वेषज हो ॥ मु ॥ विहुं थी अघ कह्यो ॥ दीयो हिन्सा धर्म उथाप ॥ तु ॥ हुं ॥ भि ॥ ८ ॥ पांच सुमति पंच महा व्रती ॥ तीन गुप्त अलराह ॥ तुं ॥ हुं ॥ भि॥ यह त्रयोदश पाले हो ॥ मु ॥ तेरा पंथमें ॥ शिव आतम सुख चाह ॥ तु ॥ हुं ॥ भि ॥ ९ ॥ तप

रूप कहिने हो ॥ सु ॥ आतम वस करी ॥ तास्य बहु जन वृन्द ॥ तु ॥ हुं ॥ भि ॥ अष्टादश सा हो ॥ सु ॥ अग्र लख जिनधर्मी ॥ लहि सुर प सुखकन्द ॥ तु ॥ हुं ॥ भि ॥ १० सम्वत् उगणी सय हो ॥ सु ॥ अड़सठ चैत्रमें ॥ मेटया भवद्व फन्द ॥ तु ॥ हुं ॥ भि ॥ श्रीकालु गणिवर हो। तास प्रशादथी गुलाबचन्द आनन्द ॥ तु ॥ हुं । भि ॥ ११ ॥

॥ अथ गणीगुणा महिमा स्तवनम् ॥

* राग आसावरी *

गणिन्द थांरो सुरनायक जस गावे
भवि निरख २ हुलसावे ग ॥ ए आंकडी ॥
गण रिछिपाल गणेश गणाधिप । गणधर गच्छस्थम्भ भाव, आचारज सूरी गणवत्सल गणी युगप्रधान कहावे ग० ॥ १ ॥ दुखमा अरके निरख शुद्ध गणी, अमर अपगाधिप चावे ॥ दरश परस कर हरष २ भरि, कहीर सुयस बधावे ग ॥ २ ॥ अतिशय माहिमा वाक्य शुभासुन

गुन चुन दाम बनावे ॥ महाव्रत रूपी गशीर, यणी अमोलक, अछेद भेद नहीं पावे ॥ ग० ॥ ३ ॥ अथवा पूरण स्वारथ नांहि, अनन्त अन्त किम आवे ॥ तब हन्सि हुलसि स्निग्ध वचन रस, कर थुगताल बजावें ॥ ग० ॥ ४ ॥ रवि समजोति उद्योत ज्ञान मय, पंकज भवि बिकसावे ॥ पाखन्डी भून्ड खंड २ थई, कूक घूक लुक जावे ॥ ग० ॥ ५ ॥ अहो तुज क्षान्ति दान्ति रव जल धर नीलिर तास सरावे नर नरइन्द वृन्द सहु मिलके चरना शीस नमावे ॥ ग० ॥ ६ ॥ जयणा- श्रुत गुणवंत तूरूका, जोभवि नित गुणगावे ॥ वृद्धिऋद्धि समकित चारितनी, संचित पाप पुलावे ॥ ग० ॥ ७ ॥ शासण वीर पवर भिक्षु के अष्टम पाट सोभावे, श्री कालू गणी कल्पतरु सम, सेवे सो फलपावे ॥ ग० ॥ ८ ॥ शुद्ध सरधने अणु व्रतधारी गुलाब शरण तुम आवे ॥ अति आनन्द फन्द अघ मेटण, सुख मांही सुख थावे ग० ॥ ९ ॥

॥ इति सम्पुर्ण ॥

॥ श्रीजयाचार्य कृत ॥

स्वामीजी श्री भीखनजी के गुणोंकी ढाल

स्वाम सांचा अद्भुत वाचा कहीरे ॥एआंकिडी ॥

स्वाम भिक्षु प्रगटिया जग मांहि कीरति थइरे श्रीजिन आणां शिरधरी वर न्याय बातां कहीरे स्वाम साचां अद्भुत वाचा कहीरे ॥ १ ॥ आगूंच उतराध्ययन में इण आर पंचम मँहीरे जिन विना शिव पंथ रहसी संत तंत सहीरे ॥ सहीरे स्वाम ॥ २ ॥ सम्वत अठारह तेपन पछै सूत्र संग वृद्धी थइरे बंक चूलिया मांहि वारता ते प्रत्यच्च मिलहीरे ॥ मिलहीरे ॥ स्वा ॥ ३ ॥ स्वाम पारश सारषा चिन्ता मणीकर लहीरे॥भव दाधि पोत उद्योत कर वा स्वाम सूरज सहीरे ॥ सहीर ॥ स्वा ॥ ४ स्वाम भिक्षु समरिया उगणीस चवदह महीरे बीदासर चौमास में जय जशकीरत थइरे ॥ थइरे ॥ स्वा ॥ ५ ॥

* निवेदनम् *

प्यारे पाठकवृन्दो

आपलोगो से निवेदन करने में आता है हमने यह पुस्तक छपवा के प्रगट करी है इसका मुख्य कारण यह है कि आप लोग इसको जयणायुत पढ़ेंगे तो सम्यक्त चारित्रादिका बहुधा लाभ उठावेंगे श्रीवीतरागदेव का निरमल मार्ग राग द्वेष रहित है, संसार का रस्ता अलग और मुक्ति का रस्ता अलग है, असंजती जीवोंका जीवना वान्छे सोराग मरणा वान्छे वोद्वेष और संसार मर्या समुद्र से तैरना वान्छे सो श्रीवीतरागदेव का धर्म है जिन आज्ञा में धर्म आज्ञा बाहर अधर्म है ऐसा श्रद्धना उसका नाम समकित है, जिस कर्त्तव्यमें जिन आज्ञा नही है उस कर्त्तव्य में कदापि धर्म नही होसकता है

जब कोई कहे ऐसासमझते हो फिर द्रव्य खर्च कर पुस्तकें क्यों छपाई उसका जबाब यह है के हम श्रावक लोग देशव्रती है सर्व व्रती नहीं है हमारे ज्यो सावद्य कार्य के त्यागहै वोह व्रत है जिसके त्याग नही वोह अव्रत है श्रावक तो अनेक कुकर्म हिन्सा झूंट चोरी स्त्री संग परिग्रहादि अनेक तरहे के सावद्य कार्य करता है लेकिन धर्म कदापि नही समझताहै पुस्तक छापना छपाना द्रव्य खर्च करना आदि ज्यो ज्यो जिन आज्ञा बाहर का कार्य है वोह सब सावद्य है उससे एकान्त पाप कर्म ही उपार्जन होताहै इसलिए यह सब संसारिक व्यवहार है, धर्म तो जयणायुत ज्ञान चरचा सीखने सिखलाने और अनुमोदना करने से होता है इस लिए पाठकों से प्रार्थना है के इस पुस्तक में कोई गलती किसी जगह रही होतो उसे गुणीजन शुद्ध रीति से जयणायुत पढ़ें पढ़ावेंगे।

आपका हितेच्छु
श्रावक धनसुख दास हीरालाल आंचलयाँ
मु- गंगाशहर